



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

I SSN 2229-547X VI DEHA

विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)



११०)

अ अंकमे अङ्क:-

## १. संपादकीय संदेश

### २. गद्य



२.१. बाग भवाम कागडि भ्रम- मैथिली लोक संस्कृति  
संगोष्ठी अनुभवत लोकनाटक मनःछर्चा पविर्छर्चा कार्यक्रम सम्पन्न



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



२.२.

अनुमोदित- वसुधाय- रसात



२.३.

प्रथम

अपीय अन्तिम- मैथिली गजलकार परिचय



२.४.

रसात गेहव ?

डा. अरुण कुमार सिंह- उज्ज्वल गाय :



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



२.३. उत्तम कृपाव सा- मिथिला-मैथिली आन्दोलन

—



२.३. जगदीशचन्द्र सा गद्य - दृष्टी मिलन कथा

३. गद्य



३. किशोर कावीगव



विदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह



३.२. छ. गेनिधर कृषव "विदेह"



३.३. जगदीशे लाल ठाकुर अमिल



३.४. अमित मिश्र



३.५. उदय कृषाव सा



विदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



३.७ जगदीश्वर सा मन्त्र



४. मिथिला कवि-संगीत १. बाबूसाधु मिश्र (चित्रमय मिथिला)



२. उमेश मण्डल (मिथिलाक रसगति/ मिथिलाक खीर-  
खसु/ मिथिलाक छिनगी)

—



बौबाला मृत- अगति मिश्र - बौब गजव



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

भाषागत बचन-लेखन -[मालक मैथिली, बिदेहक मैथिली-  
अंग्रेजी आ अंग्रेजी मैथिली कोष (ऑनलाइन पत्रिका केव सट-  
टिक्सेसरी) एम.एस. एस.क्यू.एच. सर्वर आधारित -Based on  
ms-sql server Maithili-English and  
English-Maithili Dictionary.]

बिदेह ई-पत्रिकाक सभ्ता प्रवाण अंक ( ब्रैल, तिरहुता आ  
देवनागरी मे ) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीचाँक लिंकपर  
उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e  
journal ( in Braille, Tirhuta and  
Devanagari versions ) are available for  
pdf download at the following link .

बिदेह ई-पत्रिकाक सभ्ता प्रवाण अंक ब्रैल, तिरहुता आ  
देवनागरी रूपमे Videha e journal's all old  
issues in Braille Tirhuta and Devanagari  
versions

बिदेह ई-पत्रिकाक पहिल ३.० अंक

बिदेह ई-पत्रिकाक ३.०म सँ आगाँक अंक

बिदेह बिदेह *Videha* बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



↑ बिदेह आब.एस.एस.हरीड एनीमेटेडके अपन साइट।

बिदेह अपन नगाडु।



बिदेह "लेआउट" अपन "एड गाइडेड" मे "हरीड" सेलेक्ट कए "हरीड यू.आर.एन." मे

<http://www.videha.co.in/index.xml> ठीगप केनसँ सेलेक्ट बिदेह हरीड थानु कए सकेत छी। गुगल बीडवमे पठरा लेल <http://reader.google.com/> अपन जा कए Add a Subscription बिदेह लिंक कए आ खाली स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पेस्ट कए आ Add बिदेह दराउ।



[Join official Videha facebook group.](#)



[Join Videha google groups](#)



बिदेह रेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल प्लेडकास्ट साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मैथिली देवनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि बहल  
छी, (cannot see/write Maithili in  
Devanagari / Mithilakshara follow links  
below or contact at ggajendra@videha.com)  
तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाई। संगहि बिदेहक सुँत  
मैथिली भाषाका/ बचना लेखक नर-पुवान अंक पढ़ू।  
<http://devanaagarii.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रोज़ामे  
ऑनलाइन देवनागरी ठाँग कक, रोज़ामे कापी कक आ रड  
डाक्यूमेन्टमे पोस्ट कए रड फाँगलकें मेर कक। विशेष  
ज्ञाकारीक लेन ggajendra@videha.com पब संपर्क  
कक।)(Use Firefox 4.0 (from [WWW.MOZILLA.COM](http://WWW.MOZILLA.COM)  
)/ Opera/ Safari/ Internet Explorer 8.0/  
Flock 2.0/ Google Chrome for best view of  
'Videha' Maithili e-journal at  
<http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download of old  
issues of VIDEHA Maithili e magazine in  
.pdf format and Maithili Audio/ Video/  
Book/ paintings/ photo files. बिदेहक पुवान अंक  
आ ऑडियो/ रीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाँगल





बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवविज्ञान

सत (उच्चा, रूढ, सुख, साव, आ, दुर्लभित, मंत्र, सहित) डाउनलोड  
कवरोंक हेतु नीचाँक लिंक पब जाई ।

## VI DEHA ARCHI VE बिदेह आर्किव



भारतीय डाक विभाग द्वारा जारी करि, राष्ट्रीय आ  
पशुपति विद्यापीठिक स्थापन । भारत आ लगानक माष्टिमे  
पसवण मिथिलाक धवती प्राचीन कानहिँ महान प्रकय ओ महिना  
लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिलाक महान प्रकय ओ महिना  
लोकनिक द्वि मिथिला बने मे देखु ।



लौरी-शेकबक पानरुँमे कानक मुर्ति, एहिमे  
मिथिलासकबमे (१२०० वर्ष पूर्वक) अभिलेख अंकित अछि ।  
मिथिलाक भारत आ लगानक माष्टिमे पसवण एहि तबहक अग्रगण्य  
प्राचीन आ नर स्थाप, द्वि, अभिलेख आ मुर्तिकनक हेतु देखु  
मिथिलाक खोज



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानुषीमिह

मिथिला, मैथिल आ मैथिलीसँ सम्बन्धित सूचना, संपर्क, अध्ययन  
संगति बिदेहक सर्त-गर्जन आ युज सरिस आ मिथिला, मैथिल आ  
मैथिलीसँ सम्बन्धित त्रैसांष्ट सभक संग्रह सँकलनक लेन देखू  
बिदेह सूचना संपर्क अध्ययन

बिदेह ज्ञानवस्तुक डिस्कमन होबमपर जाड ।

"मैथिल आब मिथिला" (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय ज्ञानवस्तु) पब  
जाड ।



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

ई लेख मूल प्रकाशित(२०१२) साहित्य अकादेमी, दिल्लीक लेख अहाँक  
बहुविध लेख मूल मैथिली पोथी उपहार अछि ?

Thank you for voting !

श्री राजदेव मण्डलक “अर्थवार्” (कविता-संग्रह) **12.43%**

श्री रौचन ठाकुरक “रौचनक अगमन आ जीवनदेवी”(दूरी  
नाटक) **10.06%**

श्रीमती आशा मिश्रक “उच्छिन्न” (उपन्यास) **6.51%**

श्रीमती गंगा साक “अनुभूति” (कथा संग्रह) **4.73%**

श्री उदय नाथान मिश्र “नटकेता”क “सा ए”प्रयोग प्रयोग  
(नाटक) **5.62%**

श्री सुभाष चन्द्र यादवक “रौचनक संग्रह” (कथा-  
संग्रह) **5.03%**

श्रीमती रीणा कर्मा- भारताक अर्थवार् (कविता  
संग्रह) **5.62%**

श्रीमती शैलानिका रमाक “किन्तु-किन्तु जीवन  
(आमेकथा) **8.58%**

श्रीमती रिता बाणीक “भाग रौ आ रौचन” (दूरी  
नाटक) **7.1%**



श्री महाशक्ति-संग संग्रह (कविता संग्रह) **5.62%**

श्री तावत्त-रिचोर्गी- संग्रह संग्रह (कविता-संग्रह) **5.33%**

श्री महेश्वर महेश्वर "भूतना घोर" (कविता) **8.28%**

श्रीमती नीता साक "देश-कान" (कविता-संग्रह) **5.92%**

श्री प्रियावास सा "सबस" कविता संग्रह और कविता संग्रह (गद्य संग्रह) **7.4%**

Other : **1.78%**

ए र्वे हरा प्रकाश(२०१२)।महिले अकादेमी, दिल्ली।क लेन अर्थात्  
नज्जविमे कोन कोन लेखक उग्राउत छथि ?

श्रीमती ज्ञाति सुनीत टोपवीक "अर्चि" (कविता संग्रह) **28.38%**

श्री रिनीत उग्रेनक "हम प्रकृत छी" (कविता संग्रह) **7.43%**

श्रीमती कालिका "समयसँ सम्राट करैत", (कविता संग्रह) **6.76%**



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

श्री प्ररीण काष्ठिक “रियदन्ती रवमान कानक बति” (कविता  
संग्रह) **4.73%**

श्री आशीय अलच्छावक “अलच्छाव आथव”(गजल  
संग्रह) **18.92%**

श्री अकणाभ मौवभक “एतरेँ ठा नहि” (कविता  
संग्रह) **6.76%**

श्री दिगीग कयाव मा “दूष्टन”क जगले बहरेँ (कविता  
संग्रह) **8.11%**

श्री आदि यागारवक “बोथव पैमिनसँ निथन” (कथा  
संग्रह) **5.41%**

श्री उमेशे मन्डनक “निस्तुकी” (कविता संग्रह) **12.16%**

Other : **1.35%**

এ রেব অম্বুৰাদ পূবফাব (২০১২) [সাহিত্য অকাদেমী, দিল্লী]ক জেন  
অনেক বজৰিমে কে উপহৃত ভাষি ?



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

Thank you for voting !

श्री बनेने रुमाव बिकन "ययाति" (मराठी उपाख्यान श्री विष्णु  
सखावाग थासकव) **32.63 %**

श्री महेश्वर नावाग बाग "कार्मेनीन" (कोकणी उपाख्यान श्री  
दामोदर मारजो) **13.68 %**

श्री देवेश्वर ना "अश्वत्थर" (गोवा उपाख्यान श्री दिवाकर  
पारित) **12.63 %**

श्रीमती मेषका मल्लिक "देशे आ अश्व करिता सत" (लपानीक  
अश्वराद मूल- बेमिका थागा) **14.74 %**

श्री प्रभु रुमाव कथन आ श्रीमती मेश्वरीना- मैथिली गीतगोविन्द  
( जयदेव संस्कृत) **13.68 %**

श्री बागबाग मरिह "मनाहिन" (श्री तकरी शिर्शकव पत्रिका  
मनयाली उपाख्यान) **11.58 %**

Other : **1.05 %**

हमला प्रबन्ध-समग्र योगदान २०१२-१३ : समाप्तुव सहित  
अकादेमी, दिल्ली



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

Thank you for voting !

श्री राजनन्दन नान दास **53.85%**

श्री डा. अमलेश्वर **25.64%**

श्री चन्द्रबाबु सिंह **19.23%**

Other : **1.28%**

1. प्रगतिशील

१

भावतीय दुन्द, अर्थकार और वस सिद्धांत:

दुन्दके किछ गोठे अज्ञानतारणे वस और अर्थकारसँ अलग क२  
कए देखे छथि । जौ कोना रीतसे दृष्टिक र्णन करि कबत तँ  
की ओकरा रीतसे वस अथवा जेन परिवेश कबए पडते और की  
ए जेन ओकरा एव दुन्दारिछ बचना बच२ पडते ! की  
शैक्षणिक और अर्थिक जेन करिके एव दुन्दारिछ बचना कब२  
पडते ? की विषय विस्तृत भाषागी शैक्षणिक शैक्षणिक और  
अर्थिक उद्देश्य भ२ सकैए ? की गजब, दोहा, बोना,  
कुन्दविया विषय ब्राह्मणक समुद्र छै ? और की दुन्द और रहबसे  
बहल वस और अर्थकारसँ कोना बचना विहीन भ२ जाग छै और  
एव दुन्दारिछ बचना अर्थकार और वससँ स्वतः हाउ भ२ जाग



বিদেহ ১১০ ম অংক ১৭ জুলাই ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৭ অংক ১১০)

মাননীয়

সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

তৈ ? কী অস্থানক মহল্ লৈ তৈ আ অস্থান আ মেহনতি  
কেহিবামে প্রতিভা লৈ হোগ তৈ ? একটা রাণ্যত্রি বাদকস  
কিয়ো প্রভনহি জে ও কিএ ভোব সোঁম অস্থান কলৈ ডুখি ত  
হুশকব উত্তব বহুহি- এ দুখালে হয় ভোবমে অস্থান কলৈ জী জে  
সোঁমমে গতি ল কম ভ২ জাএ আ সোঁমমে এ দুখালে অস্থান  
কলৈ জী জে ভোবমে ল গতি কম ভ২ জাএ । হুদা সগমে  
গাহো সন অছি জে মাত্র বস, অর্নকাব আ ভুন্দক আ অস্থানে ঠা  
সঁ কোলা বচনা উকুেথ লৈ ভ২ জাএত, আ সে বচনাকাবক  
সামর্থ্যগব মির্ভব কবত, হুদা বচনাক উকুেথ হেরৌক প্রতিশেততা  
রঁটি জাএত কাবণ বস, অর্নকাব আ ভুন্দক অস্থান সামর্থ্যরাণ আ  
প্রতিভাগিলী রৌমী নীক জেকাঁ কলৈএ, আ ও জঁ রৌ-রৌব আজাদ  
গজন রা অকরিতা নিখত তঁ তকব উকুেথ হেরৌক সম্ভারনা  
সেহো রঁটি জাএত । ওগা মৈথিলীক ভিখারী ঠাকব বামপ্রাণে  
মন্ডন মাকন্দব সন প্রতিভাগিলীকে বস, অর্নকাব আ ভুন্দক  
লৈমশ্রিক রবদাশ ডুহি সে ফবাক গগ । হুশকব সমাজ আ  
প্রপ্তিসঁ জুডন ভারনা অহুতলীয়া অছি আ তৌ ও আডিগব  
চনিতো ভারণামে রঁহি জাগ ডুখি । হুদা কিডু সভ স্বরিধা  
সম্পন্ন জোক রৌব আ ভুন্দক অস্থান এ জেন লৈ কলৈ ডুখি কাবণ  
হুশকা ভারনা রৌমী অরৌ ডুহি, দৌকাশক সভসঁ মন্ত রৌন্ত হুশকা  
জেনো ভারনা রঁহি জাগএ । আ জঁ করিমে এতেক ভারনা ডুহি  
তঁ মৈথিলী সাহিব জাতীয় প্রতিফিয়ারাদসঁ ভবন কিএ অছি ?

জঁ বস, অর্নকাব আ ভুন্দসঁ কিশকো দিক্ত ডুহি তঁ অগিত শিখি  
আ চন্দন মা সন হারাক রৌন গজন গতথু, আ রিসরি জাথু জে  
ও রৌবহাড তৈ । আ তখন ওকব তুলনা মিয়াবাম মা সবস আ  
জীরকান্তক রৌন করিতাসঁ কবথু । অগিত শিখি আ চন্দন মা ক  
রৌন গজন রঁডু আগাঁ অছি, গা দুশু গৌঠে গা উকুেথ বচনা সভ  
ভুন্দ আ রৌবমে কেল ডুখি আ ও সভ বচনা স্নতঃ উগহাড বস  
আ অর্নকাবমে কিশকা সভক সামর্থ্যরাণ প্রতিভাক রৌদৌনতি ভেন  
অছি, আ জঁ গা সযোগ অছি তঁ ভর্যকব সযোগ অছি । আ হয়





বিদেহ ১১০ ম অংক ১৭ জুলাই ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৭ অংক ১১০)

মানুষবিদ

কবিতা, ISSN 2229-547X VIDEHA

মৈথিলী বীণ সাহিত্যিক পদ্য অলী দিশোমে আগাঁ বঁঠেত দেখে  
চাহেঁ ।

শিষ্টাচারী আ কনা নির্মাণিক বীণ রৌদ্র রৌদ্রক উপেতি হোগ  
ভে । শিষ্ট, আ ধর্ম, কণ, বস, বাগ, ভন্দ, আ স্বর্গকাবস ওকব  
ওচিৎ সিহ্ন হোগত ভে ।

একটা উদাহরণ বস স্বর্গকাবক রিবেচন এতএ কএন জা বহন  
অভি ।

### স্বর্গকাব সিহ্নান্তক হিসাবসেঁ চোহেঁ ঠোব করিতক পাঠ:

ভামহ স্বর্গকাবকেঁ সমাসোক্তি কই ভুথি জে আনন্দক কাবণ  
বঁলে। দস্তী আ উচ্চঠেঁ মেহো স্বর্গকাবক সিহ্নান্তকেঁ আগাঁ বঁঠেঁ  
ভুথি । স্বর্গকাবক মুন কগসেঁ দু প্রকাব অন্নি, শিষ্ট, আ অর্থ  
আধাবিত আ আগাঁ সাদৃশ্য-বিবোধ, তর্কন্যায়, লোকন্যায়, কার্যন্যায়  
আ গুহ্যার্থ প্রতীতি আধাবগব । সমাঠেঁ ৩১ প্রকাবক স্বর্গকাবকেঁ ৭  
ভাগমে বঁঠেঁ ভুথি, উপমা মাল উদাহরণ, কণক মাল কহরী,  
অপ্রস্তুত মাল অপ্রস্তুত প্রশ্নমা, দীপক মাল বিভাজিত স্বর্গকাব,  
রাতিলেক মাল অসমাধতা প্রদর্শন, বিবোধ আ সঙ্কচয় মাল  
সংগঠেঁ । বীণতক চুন বগাধেঁ অপ্রস্তুত, কথক মল নান বঁম্ব  
কপোন, পাণক ঠোব আ স্বর্গবিক ঠোব, ভোবক নানী স্বর্গবিক  
ঠোব মল, কসিয়াবক পাকন পোব মল স্বর্গবিক ঠোব ও সন্ত  
উপমা করি দ্বাবা প্রযুক্ত ভেন অন্নি । হুদা কতঃ হুহ প্রেমক  
গুণী হুহ ? মে সাদৃশ্য-বিবোধ অন্নি । অলী বঁম্ব ব্যাকন বঁঠক  
মাঁম মে কণক প্রযুক্ত ভেন অন্নি । **কাবক ভাবতীয় বিচার:**  
মোক্ষক লেন কনাক অধাবণা, জেনা নষ্টবাজক হুদা দেখু ।  
সৃজন আ লামি দুগুক নয় দেখা পডত । স্থায়ী ভারক গাঠ ভে  
সীমি কঃ বস বঁম্ব- আ এ মল কতক বসক **সীতা** আ **বাম**  
অম্বভর কেনহি (দেখু রাণীকি বামাফা) । **প্রশ্ন** ভাবতীয়



বিদেহ ১১০ ম অংক ১৭ জুলাই ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৭ অংক ১১০)

মাননীয়

সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

কর্মরাদক শিক্ষক ভূমি তাঁ সঙ্গমে বসিক মেহো। কনাক স্নাদ  
জেন বস সিফাতক আরশুকতা জেন আ ভবত নাঠশিহ্ন  
নিখনহি। অভিনয়গুণ আনন্দবর্ধনক ধাত্যাকপব ভায়া  
নিখনহি। ভামহ ওখম শিতান্নী, দস্তী সাতম শিতান্নী আ কদ্রুট  
ঐখম শিতান্নী একবা আগাঁ বৈদেনহি। **বস সিফাতক হিয়ারঁ**  
**জেনে ঐব করিতক পাঠ: বস সিফাতক ভবত:-** নাঠকক প্রভারসঁ  
বস উপেতি হোগত ঐছি। নাঠক কথী জেন? নাঠক বসক  
অভিনয় জেন আ সগে বসক উপেতি জেন মেহো। বস কোণা  
বৈহবাগ? বস বৈহবাগ কাবণ (বিতার), পকিণাম (অম্বভার)  
আ সগ নাগন আন রত্ন (রাতিচাবী)সঁ। স্থাগীভার গাঠ ভ২  
সীমি ক২ বস বৈলৈ, জকব স্নাদ হম ন২ সলৈ ডী। **ভই**  
**জোবঠ:-** স্থাগীভার কাবণ-পকিণাম দ্বাৰা গাঠ ভ২ বস বৈলৈ  
ঐছি। অভিলতা-অভিলত্রী অম্বসফাণ দ্বাৰা আ কপণা দ্বাৰা  
বসক অম্বভার কলৈত ভূমি। জোবঠ করিলেঁ আ সগমে ত্রীতা-  
দর্শককেঁ মহু লৈ দৈ ভূমি। **শৌলক:-** শৌলক বসাতুতি জেন  
দর্শকক প্রদর্শনমে পেমি ক২ বস জের আরশুক বুনৈ ভূমি,  
গোড় ক চিত্রকেঁ গোড়। সগ বৈমি বস জেরা সগ। **ভইনাথক**  
কহৈ ভূমি জে বসক প্রভার দর্শকপব হোগত ঐছি। কলিক  
ভাষাকেঁ ও ভিন্ন মালৈত ভূমি। বসসঁ ত্রীতা-দর্শকক আমে,  
পকিণামসঁ যেন কলৈ। বসক আনন্দ ঐছি স্নকগানন্দ। আ ঐসঁ  
হোগত ঐছি আমে-সাকাকোব। বস সিফাতক ত্রীতা-দর্শক-পাঠক  
পব আধাষিত ঐছি। ঐ ত্রীতা-দর্শক-পাঠকপব জোব দৈত  
ঐছি। বার্বেজ সর্বচলারাদ-উত্তব-সর্বচলারাদক সন্দর্ভমে লেখকক  
উদ্ধৃষ্টসঁ পাঠকক দ্রুতিক জেন লেখকক মূলকেঁ আরশুক মালৈ  
ভূমি- লেখকক মূল মালৈ লেখক বচনাসঁ অনগ ঐছি আ পাঠক  
অপণা জেন অর্থ তকৈত ঐছি। **নগৌনহ রীতক পাথব চুণ।**  
আ **সজৌনহ ক২থ কপোনক খুণ।** বিতার ঐছি আ ঐ কাবণসঁ  
দেখি ক২ নহবন হমব কলেজ অম্বভার মালৈ পকিণাম বৈহব  
হোগত ঐছি। **স্বাঠে সিফাত:** ভইহবীক রাক্যাদীগ কহৈত ঐছি



বিদেহ ১১০ ম অংক ১৭ জুলাই ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৭ অংক ১১০)

মানুষবিদ

সংস্করণ, ISSN 2229-547X VIDEHA

জে শেই, আকি রাক্যক অর্থ স্বাষ্ট দ্বাৰা সঁৱাহিত অছি। ৰণী  
স্বাষ্টসঁ ৰণী, পদ স্বাষ্টসঁ শেই, আ ৰাক্য স্বাষ্টসঁ ৰাক্যক নিৰ্মাণ  
হোগত অছি। কোলা তাল ৰিণ শেইক সয়ঁকক সম্ভৱ লৈ  
অছি। ই ভাবতীৰ্য দৰ্শনক তাল মিছান্তক একটা ভাগ ৰণি  
গেল। অর্থক সঁৱেণ অক্ষব, শেই, আ ৰাক্যক ঙ্গেতি ৰিণ সম্ভৱ  
অছি। স্বাষ্ট অছি শেইক আ সৈ অছি সৃজনক যুগ কাৰণ।  
অক্ষব, শেই, আ ৰাক্য সঁগ-সঁগ লৈ বৈএ। ৰাজন শেইক ফৰাক  
অক্ষব অগণামে শেইক অর্থ লৈ অছি, শেই, পূৰ্ণ হেইৰা ধৰি একব  
ঙ্গেতি আ ৰিণামে হোগত বৈ চৈ। স্বাষ্টমে অর্থক সঁৱেণ  
হোগত অছি হুদা তখলা স্বাষ্টমে থাণি সম্ভৱ ৰা সঁৱাক কানমে  
অক্ষব, শেই, ৰা ৰাক্যক অস্তিত্ব লৈ ভেল বৈ চৈ। শেইক পূৰ্ণতা  
ধৰি এক অক্ষব আৰ নীক জকাঁ ফাসঁ অর্থপূৰ্ণ হোগত আ ৰাক্য  
পূৰ্ণ হেইৰা ধৰি শেই, ফাসঁ অর্থপূৰ্ণ হোগত। সঁখা, শায, ৰৈশেয়িক,  
মীমাংসা আ ৰেদান্ত ই সভ দৰ্শন স্বাষ্টকৈ লৈ মালৈত অছি। এ  
সভ দৰ্শনক মানৰ অছি জে অক্ষব আ ওকব ধৰি অর্থকৈ নীক  
জকাঁ পূৰ্ণ কৰৈত অছি। ত্ৰাসিক জৈয় ডেবীডাক ৰিখল্ডন আ  
পসবৰাক মিছান্ত স্বাষ্ট মিছান্তক বগ অছি। **স্বাষ্ট মিছান্তক  
আধবগব তৌব তৌব কৰিতক পাঠ** আৰ উদ্যনক কৰিয়নক  
ধবতীগব বহৰাক অউতো শায মিছান্তক স্বাষ্ট মিছান্তকৈ লৈ  
মানৰ কৰিক কৰিতাকৈ লৈ অবৈ চিহ্নি। **মাল য়ে বহন মালক  
সৰঁ ৰাঁত কহি ও অদন্ত চিত ঢেব সঁ স্বল্পিক তৌবক তুনা  
ক২ দৈ চিহ্নি।**

উদ্যনক গায়ক কৰি বুট কহি চিহ্নি **ভ২ বহন ৰণী - ৰণী**  
**সিঃশেয়, শেই, সঁ গগলন নহি উদ্যন্তে;** এতএ শেইসঁ লৈ হুদা  
স্বাষ্টসঁ অর্থক সঁৱেণ কৰি দ্বাৰা তৌব তৌব আ এ সঁগহক আৰ  
কৰিতা সভমে জাগ তবহৈ ভেল অছি, সৈ **সঁৱাক সভসঁ**  
**নয়ামেক আ মদুব ভায়া মৈথিলী** মে (যজুদী মৈথিলিক শেইমে)  
ৰিণ্যাপতিক ৰাদক সভসঁ নয়ামেক কৰিক কগমে বুটজী কৈ



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रस्तुत करैत अछि आ मैथिली करिबालेँ ए कसमे खेबस  
परिभाषित करैत अछि ।

**तेरेब ठोब करिबालेँ सायान् पाठ** पाणक ठोब आ सुमरिब  
ठोब । सुमरिब द्वारा रातक टुल नगाएर आ कथक सन नान रूम  
कपोल सज्जएर । ह्मदा प्रेमक थुंगी कतए ? तेरेब नानी  
सुमरिब ठोब सन, रिशु सुमरिब राखन सँम जेकाँ । रँधिक जे  
रँधत सुमरिब रब तँ ह्म रँधरँ रिखलित बाहु । सुगोमे सुवा  
कन्य अछि, तहिना सुमरिब ठोब सेहो कतए पारी । सकरी गिन  
महास रँधत जे ह्म रिशुकसँ रिद्वान सीखर । आ उग गिनसँ  
रँहाव हेतएत माधुर्य । ह्मियावक पाकन पोर सन सुमरिब ठोब  
अछि । प्रनर्जामे सेहो धान आ टिछास रँधि सुमरिब ह्म अहक  
नग आएर । ह्मदरी एतरी रादो नोहसँ उद्वेग कल प्रगष्ट  
तेन ।

२

**साहित्यमे लोक-तन्त्र: गाथा/ नृत्य नाटक**

**लोकगाथा/ नृत्य संगीत आदिक ऐतिहासिक रर्षि**

**मोहनजोदड़ १** सन्ततासँ प्राप्ति कान्य प्रतिमा नृत्यक ह्मदाक संकेत  
दैत अछि, रतिमान कथक नृत्यक ठाँ ह्मदा सदृश, दहिण हाथ ४३.  
डिग्रीक कोण रँधल आ राम हाथ राम डारोपव, संगति राम पएव  
किछ मोडल । म्गरेदक शिखामन जौलामे गीत, राग आ नृत्य  
तीनूक संगे-संग प्रयोगक रर्षि अछि, एतरेय जौलामे ए  
तीनूक गणना दैरी शिपमे अछि । म्गरेद १०.१३.७ मे उयाक  
स्वर्णि आता करिकेँ सुसज्जित म्धिक सवण कबलैत छहि ।



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

भृगुरेदमे लोक नृक (थोल्छे अगाम नृतये) सेहो उल्लंख  
अछि । महारत नाम्ना सोमयागमे दाम्नी सभक (३-७ दाम्नीक)  
सामुहिक नृक रर्णन अछि । मांथायन १.११.३. मे रर्णन अछि जे  
रिराहमे ४-+ स्त्राणिनकेँ स्त्रा गियाउग जागत छन आ चतुर्बा  
नृक लेन धेवित कएन जागत छन । रैदिक साहित्यमे रिराह  
रिधिये पनौक पायनक उल्लंख अछि । सोमयागयन रिधिये गति  
रीषारदकसँ सोमदेरक रादहाउ गान कवरौक अनुबोध करैत  
छथि । अथरिरेदमे रमा नाम्ना देरताक नृक भृक, साम आ गाथासँ  
संयोजित होएरौक गग अएन अछि, सोमयागयन अ नृकमे गङ्गरी  
सेहो होगत छन, से रर्णित अछि । अथरिरेद १२.१.४१ मे  
गीत, रादन आ नृक सामुहिक ध्वनिक रर्णन अछि । रैदिक  
कानमे साम संगीतक अनारेँ गाथा आ नावासीनी नाम्ना लोकिक  
गाथा-संगीतक सेहो प्रचन छन ।

**लोकगाथाक तह:** भाषाक सुकण यौथिक बहरौक कावासँ  
गतिशील अछि । कान निर्धारी सेहो अनुमाननव आधारित होगत  
अछि ।

-गाथा सेना, हष्ट रँजाव, रिश्रिष्ठ लोकक घब, सार्वजनिक  
सुननव होगत अछि - से जे जातिक लोकदेरता बहेत छथि  
तकव अतिविश्र दामनो जातिक श्रोता बहेत छथि ।

**सर्जक आ श्रोताक शल्फ संधि कहैत अछि, सेना तहक  
कावा कथाक अनायस अर्पकवा जेठैत अछि, हृदा सज्जा  
साहित्यिक कक्षा जेना सत्र, उदरक, नाछ-संधि आ रक्त निर्देशक  
अभाव कहैत अछि ।** रक्त संगठन संगठित नहि बहेत अछि ।  
गाविक प्रयोग आ मनुषाणक यत्र-तत्र रर्णन बहेत अछि ।

ग्रामीण रारस्थामे देवक स्थान आ ओकव रर्णन, स्थानीय देरी-  
देरताक चवट आ जातीय अस्मिताक प्रयोग होगत अछि ।



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवमिह

उपलब्ध, ISSN 2229-547X VIDEHA

कथा-गायक आशु करि होगत छथि- एकठा दू टांगव अगल  
हिसारसँ ओ हेब-हेब कइ गरीत छथि प्राबल्यमे अग्रिब, रत्नना  
आ रीच-रीचमे अग्रिबसँ अमायाचना, ओ सत गायन अमाता हिव  
कवरौक उद्धेस कएन जागत अछि ।

घण्टासँ उगव गायनक रीचमे हुका-टनग, मछपाण,  
परिचलक रत्न होगत अछि गायनमे । लौकिक मन्त्राव त्राताक  
सोना कएन जागत अछि अद्वैत सन्तक कथा आवाध देरक  
समक्ष ।

देरी मेझि द्वावा हल्लमे नायकक सहायता होगत अछि ।

नायक मेहो गायिक प्रयोग करैत अछि ।

महाकाव्यक पात्रक नाम आ आन तहक ग्रहण जेला  
महाभावतक जूझा आदि प्रयोगमे आनन जागत अछि ।

निष्कर्ष: सत साहित्यिक रिधा दू प्रकारक होगत अछि ।  
लोकधर्म आ नाष्ठधर्म, लोकधर्म भेल ग्राम्य आ नाष्ठधर्म भेल  
शान्तीय उद्दिष्ट । ग्राम्य माल भेल प्रविमताक अरहेनला अद्वैत  
अन्वेषणतरी किछ गोठे एकवा गाममे होगरना नाष्ठक बुनै  
छथि । लोकधर्ममे सन्तारक अतिशयमे प्रभावता बहैत अछि,  
लोकक फ्रियाक प्रभावता बहैत अछि, सबन आंगिक प्रदर्शन होगत  
अछि, आ ए मे पात्रक से ओ मन्त्री हुअए रा पकय, तकव सखा  
रैष्ट्र रैसी बहैत अछि । नाष्ठधर्ममे राणी मोल-मोल, संकेतसँ,  
आकाशिराणी गवदि, नृत्यक समारोह, राक्यमे ग्लान्तिता, रागरना  
संगीत, आ साधारण पात्रक अनाई दिय पात्र मेहो बहै छथि ।  
कोला निजीर/ रा जन्तु मेहो संवाद कबइ नछैत, एक पात्रक  
डरल-प्रिगन बोल, स्वयं दुखक आरोग संगीतक माध्यमसँ रैद ओन  
जागत अछि ।



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

रैदिक आस्था, जातिक कथा, एंगेज लेखन, पीछेछ आ  
हितागदेमि आ मंग-मंग चलेत बहन लोकगाथा सभ । सभ ठाम  
अभिजात रसक कथाक मंग लोकगाथा बहते अछि ।

३

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (रैकल्पिक साहित्य अकादेमी प्रवर्धन  
कर्षण प्रसिद्ध)

- **रौप्य साहित्य लेख विदेह सम्मान २०१२-** श्री जगदीश प्रसाद  
मन्त्र जी के हृदयक रौप्य-प्रवर्धन विदेह कथा संग्रह "तरेगन"  
लेखन आ प्रवर्धन देन जा बहन अछि । आ प्रवर्धन विदेह भाषा  
उत्सव २०१३ क समारोहमे देन जखन । "तरेगन" के सभसँ  
रैनी रोष्ट भेटेल । तीसठा पौथी १.जगदीश प्रसाद मन्त्रक  
तरेगन, २. जीरकाशुक "थिथिवक रीश्वरि" आ ३.श्रवणीधर मा क  
"पिनपिनहा गाढ" के विदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) पर भन्ने  
बहन आँखाआँख रोष्टिगमे बाखन लेन छन । विशेषकर  
मन्त्रमाव "पिनपिनहा गाढ"मे रहत बस कथा अछि जकरा रौप्य  
कथा ले कहन जा सकैए, तब दुआरे ए पौथीके निशुन लै  
देन लेन कावण आ प्रवर्धन रौप्य साहित्य लेन अछि, उगारितो ए  
पौथीके सभसँ कम रोष्ट भेटेल बहे । ए पौथी सभक अतिरिक्त  
आन पौथी सभक रिदाव ले कएन लेन कावण ओ सभ पौथीक  
आकावक ले रक् रूकलैक आकावक छन ।

४



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवविज्ञान

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

साहित्य अकादेमीक ठेठोव निष्ठेचव अरार्ड २०११ मैथिली लेन श्री  
जगदीश प्रसाद मण्डल ले हकब नयूकथा संग्रह "गामक जिनगी"  
लेन देन लेन । कार्याक्रम कोटिमे १२ जून २०१२कें लेन ।

मैथिली लेन बिरादक अन्तक कोला सम्वारणा ले देखौमे आरि  
बहन अछि । ए प्रवक्तवक ग्राउन्ड निष्ठ रैलरी लेन एकठा  
तथाकथित साहित्यकारकें चुन लेन जे प्राप्ति मुक्तक अन्तसार  
जातिक आ सकीर्णताक आधारपर पोथीक नाम देनहि जागेमे  
बहिये बहियेताक पोथी बह्य, बहिये स्वभाव चन्द्र यादवक आ  
बहिये जगदीश प्रसाद मण्डलक; संगहि ३ ग्राउन्डनिष्ठ रैलरीनिहार  
तथाकथित साहित्यकार बिदेहक सहायक सम्पादक झुल्लोजीकें  
कहनहि जे जगदीश प्रसाद मण्डलकें ए जिनगीमे ठेठोव साहित्य  
प्रवक्तव ले देन जेतहि ! । बेहरी जखन १ ठाँ पोथीक नाम  
गठनहि तखन ३ गेमे चन्द्रनाथ मिश्र "अमर"क अतीत मथन  
सेहो बह्य जखन कि ३ पोथी निर्धारित अरदि २००१-२००६ मे  
हुगले ले अछि, तँ की बिषय देखल पोथी अन्तर्निहित कएन  
लेन ? ए तबहक ग्राउन्ड निष्ठ रैलरीनिहार आ बिषय गठन पोथी  
अन्तर्निहित लेनिहार बेहरीकें साहित्य अकादेमी टिहित कबए, आ  
नाम सार्वजनिक क२ स्थायी कर्पस प्रतिरक्षित कबए, से आग्रह;  
तखन मैथिलीक प्रतिष्ठा रौटन बहि सकत । एतए गेलो तथा  
अछि जे साहित्य अकादेमीक मैथिली विभागक संयोजक श्री  
विद्यानाथ झा रिदित अखन धरि ले प्रवक्तव भेठरीक मुक्तक आ  
ले प्रवक्तव लेन रैवागेय श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी कें  
देनहि अछि जखनकि मण्डल जी प्रवक्तव न२ क२ घुमि क२  
आरियो लेन भुवि; संगहि ठेठोव साहित्य प्रवक्तव मैथिली लेन  
गहन लेन श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीकें देन जएरी संयोजकमे  
दबठंगा आकाशवाणी कोला एकावक मुक्तक प्रसारित ले लेनक आ  
दबठंगा, मधुबनी आदिक हिन्दी समाचार-पत्र सेहो ए संयोजकमे  
कोला समाचार एकागित ले लेनक जखनकि देशक सब बाह्यीय  
अग्रजो पत्र (





विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

<http://esamaad.blogspot.in/2012/06/t-agore-literature-awards-national-media.html>

एकव सूचना रिष कोला अग्रादक प्रकाशित केनक । सहिब  
अकादेमीक मैथिली रिभागक, आकाशवाणी दरभंगाक आ दरभंगा-  
मधुबनीक हिन्दी समाचार पत्रक पत्रकार लोकनिक सकीर्ण जातिरादी  
चेहवा नीक जेकाँ सोनाँ आरि गेल । ह्मदा ई तँ मात्र थावसु  
अछि । सहिब अकादेमीक मैथिली रिभागक अमनी चेहवा तखन  
सोनाँ आओत जखन ई रैथिक मूल सहिब अकादेमी प्रवक्ताक  
घोषणा रहएत ।

श्री जगदीश प्रसाद मल्लन जीक "गामक जिनगी" मैथिली साहित्यक  
गतिहासक सरिश्रेष्ठा नव्य कथा संग्रह अछि । जगदीश प्रसाद  
मल्लन जीकेँ रैवांग ।

**सूचना (स्रोत समर्पिका):** टैगोर सहिब प्रवक्ताक दक्षिण कोरियाक  
एनिसी (स्पांसर समर्पण गडिया निगिठेड) क आग्रहपर सहिब  
अकादेमी द्वारा शुक कएल गेल अछि । टैगोर सहिब प्रवक्ताक  
शुकदेर वरीन्द नाथ ठाकुरक १३.०५ जयन्तीक उगनस्रमे शुक  
भेल छल । सब सात + छै भाषा आ तीन सातमे सहिब  
अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त सभछै २४ भाषाकेँ एमे प्रवक्तृ  
कएल जागत अछि । मैथिली केन ई प्रवक्ताक पहिल रैव देल  
जा बहल अछि ।

शुकदेर वरीन्दनाथ ठाकुरक १३.०५ जयन्तीक उगनस्रमे सहिब  
अकादेमी आ समर्पण गडिया (समर्पण होण प्रोजेक्ट) द्वारा २००९  
ई. मे स्थापित कएल गेल छल टैगोर सहिब प्रवक्ताक । २४  
भाषाक श्रेष्ठा पोथीकेँ तीन सातमे प्रवक्ताक (सब सात आठ-आठ  
भाषाक सरिश्रेष्ठा पोथीकेँ एक सातमे प्रवक्ताक) देल जाएत ।  
प्रवक्ताकमे एहककेँ ९९ हजार ठाका आ प्रमिस्ति-पत्र देल  
जागत अछि । दारिम सात पहिल सातक आठ भाषाक समूहक



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

होम पेज देव अतिथि । होम पेज जगन्तीक नगति अरुमवगव अ  
पुवकाव देव जागत अतिथि ।

होम पेज साहित्य पुवकाव २००९ रंगीना, गुजराती, हिन्दी, कन्नड,  
काश्मीरी, गजराती, तेलुगु आ रोजो भाषामे २००३ सँ २००९ मध्य  
प्रकाशित पोथीपुव देव होम ।

- रंगीना (आलोचक पुवकाव, अगापुत्रि, करिता)
- गुजराती ( भगवान दाम पठेन, मावी लोकगाथा)
- हिन्दी (बाजी मेठ, गमे हयात ल मावी, कथा संग्रह)
- कन्नड (छन्दशेखर करिव, शिकावा सुर्ग, उगनाम)
- काश्मीरी (नसीम सहाग, ना थमे ना आकास, करिता)
- गजराती (जसरनु मिह करन, गुण्य दा टाण, आमेकथा)
- तेलुगु (कोरेना सुप्रसन्नार्थ, अतिवर्ग, निरंकर)
- रोजो (ब्रजेन्द्र अमाव ब्रह्म, बिथाग हाना, निरंकर)

होम पेज साहित्य पुवकाव २०१० असमी, डोगरी, मराठी, उर्दू या,  
बाजस्थानी, संथाली, तमिल आ उर्दू भाषामे २००३ सँ २००९ मध्य  
प्रकाशित पोथीपुव देव होम ।

- असमी (देवब्रत दाम, निरंकरित गल्प)
- डोगरी (संतोष खजुरिया, रोजोशदियन रोजोवा)
- मराठी (आर. जी. जाधव, निरादक संग्रह)
- उर्दू या (ब्रजनाथ बथ, सागात्र असागात्र)
- बाजस्थानी (बिजय दास देवा, रोजो वी हूनरावी)
- संथाली (सोसाग किन्हु, नमानिया)
- तमिल (एस. बामप्रकाश, बामा)
- उर्दू (छन्दर भाष खान, सुर्व-ए-मशिक-की अजाण)



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

टैगोवर साहित्य प्रवक्ताव २०११ मैथिली, अंग्रेजी, कौकशी, मनमानम,  
मगीपुत्री, लपानी आ मिथी लेन २००१ सँ २००९ मया प्रकाशित  
पौथीपव देन गेन । संस्कृत लेन प्रवक्ताव ले देन जा  
सकन ।

-मैथिली (जगदीश प्रसाद मंडन, "गामक जिनगी")

-अंग्रेजी (अमितार घोष, "मी ऑफ पाँजीज")

-कौकशी (मीना कोनाय्कव, "गीवा")

-मनमानम (अकितम अदुतम बन्धुदरी, "अतिमहकनम")

-मगीपुत्री (एन. अंजामोहन सिंह, "एना केँगे केनरी नष्ट")

-लपानी (अदुमिनी दवनाम, "प्रच्छा-प्रच्छा")

-संस्कृत-

-मिथी (अर्जुन हमीद, "ना एन ना")

जगदीश प्रसाद मंडन, जन्म ३ जुलाई १९४१। गाम-लेकमा,  
तम्रबिया, जिला-मधुबनी। एम.ए.। कथाकाव (दीर्घकथा संग्रह-  
मैथिली; लघुकथा संग्रह १. गामक जिनगी, २. अहर्निशी..सरोजनी..  
स्वप्ना.. भागक मिलेन गत्यादि; आ तरेगल - रौन-प्रेवक  
मिलि कथा संग्रह); नाटककाव (१. मिथिलाक रौली, २. कथागागज,  
३. समेलिया बियाह आ ४. एककी-सटयन); उपासकाव(मौला गन  
गाढक फुल, जीवम संघर्ष, जीवम मरणा, उथोष-पतन, जिनगीक  
जीत- उपास) आ कवि (१. अदुधव्या अकस, २. गीतजिलि आ



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

इ.वाति-दिन । मास्त्रादक गहन अध्यायन । हिनकब कथाये गागक  
लोकक जिजीरियाक वर्णन श्री नर दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होगत  
अछि । गागक जिनगी, नयकथा संग्रह जेन बिदेह समावाप्त  
साहित्य अकादेमी प्रवकाव २०११ मूल प्रवकाव, श्री टैगोर साहित्य  
सन्मान २०११; श्री रौन-ऐवक बिहारी कथा संग्रह "तरेगन" जेन  
रौन साहित्य बिदेह सन्मान २०१२ (ऐकपिक साहित्य अकादेमी  
प्रवकाव कर्षे प्रमिह) प्राप्त ।

( बिदेह ई पत्रिकाले ३ जुलाई २००८ सँ अखन धरि ११+ दैनिक  
१,३.६० ठामसँ +०,१८३ गोठे द्वारा ४०,४९+ विभिन्न आ.ग.एस.पी. सँ  
३७९,००० रौब देखल जेत अछि; वयराद पाठकगण । - गुगल  
एलजेण्डर डेरी । )



गजेन्द्र ठाकुर

[ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com)

[http://www.maitthilikhaksangh.com/2010/07/blog-post\\_3709.html](http://www.maitthilikhaksangh.com/2010/07/blog-post_3709.html)



## २. गद्य

### २. गद्य



२.१. बाग भवान कागडि भ्रमर- मैथिली लोक संस्कृति  
संगोष्ठी श्रुतवगत लोकनायक सनहसः चर्चा पविर्चर्चा कार्यक्रम सम्पन्न



२.२. श्रुतवगत- वधूकथा- रसोत



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



२.३. आशीष अचरिह- मैथिली गजलकार परिचय  
लेखना



२.४. डा. अरुण कुमार सिंह- उजड़त गाय :  
रसैत गेहव ?



२.५. रंजन कुमार सा- मिथिला-मैथिली आन्दोलन

—



२.६. जगदीश्वर सा- गद्य - दूरी मिलन कथा



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



बाग भरोस कागडि भ्रम

मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी अन्तर्गत लोकनायक मन्त्रालय: चर्चा  
परिचर्चा  
कार्यक्रम सम्पन्न



बि एन ए बिदेह *Videha* बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह अथय टोथिनी पौष्पिक अ पत्रिका



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

मानवीमिह

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA





बि एन ए बिदेह *Videha* बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह अथय ट्योथिनी पौष्पिक अ पत्रिका



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA





बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



मिथिलाभवन लण्ठनक होशक रा भावतीय क्षेत्रक जई एक छोष्ट  
लोकगाथाक महानायक ककरो जे रीरु चरित्र रैसी लोकझूथी,  
जगजगरीट छटित, लोकप्रिय ठेक त ओ थिके लोकनायक  
मनहेसक । सिवाहा जिम्मा अस्तुअत महिमोथाये जगन  
मनहेसक जे रीरु काशी आबोह अरबोहसं भवन ठेक । रिबिन्न  
लोकगाथा गायकसभ कथाकक रिबिन्न भेदके जगसमस्त नाउन  
करैत अछि । तन्न मन्न आ सिद्धिक कथासभ एहिमो भवगुव  
देखन जागछ । सुगा मनहेसक गुणुचव होगछ जे मन्त्रीक  
कगमे मेहो प्रतिष्ठित ठेक । हाथीक नाँउ भौराणन्द बाखन  
गेन ठेक त स्वर्ग मनहेसके मानिक दहर्म भूमि रैनाक  
मानिससभ देवा क न जागछ । समुद्रतः एहन प्रमर्शसभ  
गाथा गायकसभक दहर्म थपैत आएन भ सकैछ । दूदा एकठा  
रौतमे सरै एकमत होगछ जे मनहेसक जग महिमोथा, बाजा  
अन्धेरेक दबरीवमे पहरेदारी, देवीक आवाप, जेनचवान आ



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अस्तुमे गान्धारीद्वारा कृति ... ।

७ देवताक कपमे दूमाध जातिमे पुजित छथि । दमित  
उत्थानक निमित्त मयौ रर्यगुरी मागसुर्म (दुहड मागसु ! ) नडि क  
अगल डुष्ट बाज्याक स्थापना आ गायक जेन लोकप्रियताक चकामे  
पहुँटेत 'देवताक आप्पद प्राप्त क पुजित हएँ स्वर्ग जयरदुधन  
मनहेमक जीरण गाथाक अस्तु मोटक पक्ष थिक ।

मनहेमगाथाके एक दिने प्रेम ठेक त दोसव दिने तकोनीन  
मिथिलाक्षेत्रमे उत्तरी आक्रमणकारीसभसँ एकव ब्रह्माक दूलीती  
सेहो ठेक । मागसुर्मसभ समाजके जोगएराक गहन जिन्दगारी  
थिक त पवर्गिर्भवतसँ दूध भ अगल मैथिलीक विकास क अगल  
सभ्यताक स्थापनाक गहन लक्ष्य सेहो । अदभुत पराक्रमी दुनाह  
मनहेम । सँ दूलीतीसभके मागना करैत अस्तुतः अगल  
अभियानमे सहज भव महिमोथाके बाज्यानी रलोननि ।

लपानी भूमिक यी रीव लोकनायक, दूदा आगवनि शिष्ट, साहित्यक  
संस्कृतसभद्वारा उपेक्षित बहेत आएन अछि । किए एना भेल  
त , तकव एकठा काका देखि पडेछ , दूमाधसभक मनदेवता  
प्रति किए अगारथक उमेकता ! अग जाति रा रसमे अडिह  
बहि बहन करिजोकनि, साहित्यकासभक जूथातारी बचनसभ

उत्थान क क नयाँ नयाँ गतिहाम बचनहासभ सिवाहा जिलाक  
टोहदीमे अजल सौर्यपूर्ण जीरण रितोनितार मननायक मनहेम  
जानाजानी उपेक्षित कएन गेलाह आ पश्चिमतः आग हुनका  
राबेमे लोककर्णमे रौचन अरैत गाथासभ आ तकवा मध्यमे  
प्रदर्शित कवरना नाचसभ विवृष्ट भ बहलोक अछि ।

एह कठिन अरस्ताके धाममे बाधि मनहेमक जीरणरुतमे  
केन्द्रित भए एकठा बृहत् गोष्ठी कवरोक रिचाव आगसँ तेवद्व  
महिना पहिल आएन आ लपान प्रकाशप्रतिष्ठासक संस्कृति रिभाग  
अस्तुतः एकवा सामेन कएन गेल ।

हम एकव कार्ययोजना रँगरेत कान भावतीय मर्ति विद्वान्सभके  
एठ्ठा पेलन रँलोनहँ , जे सभ मनहेमक सन्दर्भमे निवृत्त



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

निश्चित आरि बहन छथि । लगानक किछ बिद्वानसभकेँ सेहो  
आग्रह कएल । अन्ततः लगान आ भावतर्प चाबि चाबि छोटे  
कार्यपत्र तय भेल आ पत्राचार-सम्पर्क कएल गेल । एकब  
कार्यक्रम सून नहान (मिवाहा) बाखन गेल, जतन मनहेसक  
फिडाबुझिसभ नगोमे अरुहित छैक । समय २०३९ साल रैगिथ  
२० आ २१ गते बाखन गेल । सँ तैयारीपूर्ण भ गेलक बाद  
रैगिथ १५ गते जनकपुरमे दुखद घटना भेल, रँग रिश्ताथेमे  
तकोन चाबछोटेक आ बादमे एक छोटेक गिना पाँच छोटेक  
मृत् भ गेल । सँदिने शोकक नहनि, आकाशि देखन गेल ।  
रँद, रुडतान स्वक भेल । परिणामतः कार्यक्रम अन्तिम रूपमे  
सुगित कब पडलैक ।

तेब दोसब तिथि २०३९ साल अमाव ४, ३ गते बाखन गेल ।  
देहकेँ डहित गर्भमे भावतीय एक दर्जन बिद्वत् रश्मि आ  
लगानक तर्पन सेहो एक दर्जन बिद्वत् रश्मिभक्त समुपस्थितिमे  
उँठ छोटी नहानमे दने रूँदे नहान घोषणापत्र जारी करैत  
सम्पन्न भेल अछि । एहिछोटीमे अपन आर्थिक सहयोग द्वारा  
री.पी. कोषवाना भावत लगान प्रतिष्ठापन पैघ काज कएनक  
जकब प्रमोदि समस्त उँपस्थित सहभागी लोकनि कएननि ।  
अथाठ ४ गते सूचना तथा संघाव मन्त्री बाजकिशोर यादव  
उद्घाटन कएननि । हुनक हाथसँ लगान प्रकाशप्रतिष्ठापन द्वारा  
प्रकाशित “आँगन” पत्रिकाक दायिम अँक मनहेस विशेषक आ  
बागबानस कापडि ‘अमरक नरीनरतम प्रति समय समर्पक  
रिमोचन कएननि । तहिना मनहेस लोकनाचकेँ मन्त्रीय कपमे  
जिरनु बाखमे मिवाहाक शैली पानराम आ मनहेस गाँसकेँ अपन  
कर्णमे रँद क बखनिहाव मन्त्री दामकेँ दोसला आ प्रमोदि पत्र  
पदान क सन्मान कएल गेल छल । कार्यक्रममे सभापतिवृ  
कलैत संयोजक ‘अमर’ विषय प्रवेशक क्रामे लोकनायक  
मनहेसक छि अँकित छैक प्रकाशन कवरक आ दोहवरी  
टोकमे छहड मनक प्रतिमा स्थापनाक माग कएननि, जकबा मन्त्री



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

यादर सहर्य स्त्रीकाव करैत लपान सबकावर्म होरैरना सभूरी  
सहयोग उगनद्व कवएरौक रिश्रिस सेहो दिगुननि ।

कार्यक्रमे कार्यपत्र आ टिप्पणीसँ अतिरिक्त संयोजक श्रमद्वारा  
रिद्धसभक रीट चारिबूदे अरवाकापत्र प्रस्तुत कएल गेल छल,  
जाहिमे व्यापक अनुभव आ निष्कर्षक लेल चारिगोष्ठ समूह रैनाओल  
गेल । जे ३ गते सुनगत सुनसभक श्रमा क समापन  
रैठकमे विभिन्न सुमारसभकसंग प्रस्तुत कएल छल । सुनगत  
श्रममे सनहेस पुनर्रोवीक रिचित वचना प्रक्रियासँ अरगत  
लेनाह त सनहेस गाथामे निके महत्त्वक साथ आएन कमल दहमे  
कमल लोग भ क सेहो पर्यटकीय आकर्षण यथारत बहेन रौत  
सँ रिद्धसभक महत्त्व कएल छल ।

गोष्ठी कम कार्यशाला गोष्ठीमे अन्तमे दने बूँदे नहल घोषणा पत्र  
जाबि कएल गेल छल । घोषणापत्रमे जिन्या अथवा अन्य  
भागमे बहल सनहेस मदिब (गहरैब) सनहेस पुनर्रोवी, यात्रिक  
दह, पकडिया गठ, कमल दह, उत्तरवाहिनी, कमला आ नन्द महिरी  
संग सुनसभक संरक्षण, संयुद्धन कवरै जकबी अछि । सनहेस  
गाथामे रचित सुनसभ लपानमे अरहित लेन हएरौक कावणे  
एकव संरक्षण संयुद्धनक दायित्व सबकावक अछि । एहना  
सुनसभक विकासक पहल हएरौक छली । सुनसभक उल्लेख  
हएरौक छली । सनहेस पुनर्रोवीके रिद्धसभदा सूरीमे सुदीप्त  
कएल जाए, एकवा सिमाव स्फुरक कएमे मात्रता देन जाए संग  
संग याग कएल गेल अछि ।

अन्य यागमे सनहेस प्रतिष्ठापक गठन होए, सनहेस अकित डाक  
टिकटक प्रकाशन होए, सनहेस गाथामे जोडल ठामसभके सभक  
यात्रा रैनाओल जाए, सनहेस पुनर्रोवी निकट बाजमात्रमे  
सनहेसक मूर्ति आ त्रयद्वारक निर्माण होए, सनहेसके बाहिरीय  
रिद्धति घोषित कएल जाए आ संग्रहालयक स्थापना होए ।  
सनहेस संयुक्ती एना कय रैठकसिक ठगम गोष्ठीक आयोजन प्रथम  
सुक्ररात लेन हएरौक रौत रैथरैत उगनद्व लपान भावतक



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रिद्धतज्जन्मभ अस्मन्मन्त्रक अन्तर बहन्नाक कावर्णे एकवा निवन्तुवता  
देन जेएरौक चाली ।

दुदिना गोष्ठीमे भावतर्मा डा. कमानन्द मा कमान, डा. बुद्धक  
गामराण, डा. कमानकाष्ठ मा, डा. त्रिलोचनेव प्रबन्धेता, चन्द्रशे, डा.  
मोहित ठाकुर, पट्टाणन मित्रि आदि ज्जनाह त ज्ञानानक दिनेस डा.  
बामदयान बाकेने, प्रवातल्लरिद् तावानन्द मित्रि, प्रान्त बमेशेवज्ज्ज  
मा, पूर्ण सान्द नथुणी मिह दम्बर, डा. पञ्चपतिनाथ मा, प्रा.  
प्रबन्धेव कापडि, डा. लेखनीकमान नान,गोपान मा आदि  
रिद्धतज्जन्मभक सन्तानिगता ज्ज ।

ए बच्चापव अपन मन्त्र [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पव  
पठाउ ।



अन्तर्जेश्वर

वधुक्था- र्ज्ञात

आग सन्मावपुव र्ज्ञात मे र्ज्ञात दिनक र्ज्ञात  
माधव मा ज्ज्ञेन ज्ज्ञात । ज्ज्ञेन ज्ज्ञातर्ज्ञात ओ स्वक ज्ज्ञात



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जेनाह अगल आशुविक गप्प रैठारामे । जेना-तेना  
छुटकारा भेटैत आ हम अगलामे लगलहुँ । दूदा हुनक  
कहल रहैतो बाम रात एखनहुँ घुबिया बहन अछि ।  
रैबि-रैबि मोन पछि जागहुँ माधर माक राथा ।  
माधर माक रैठा बिरैक मर्याम कोष्टक छान छान, दूदा  
बहए मेहनतिआ आ तै ओकब आकाँक्षा बहैक जे  
गँजीमियब रैनी । माधर मा मेहो मर्याम आयक लोक,  
दूदा मनुष्यक आकाँक्षाकेँ पूरा कबरीक लेन अगलाभरि  
प्रयास करैत बहनिहार । समाजमर्या रैसात तेहन रैहि  
बहन छैक जे जत-तत अर्थक काज । तैओ ओ अगला  
लेखे एहि प्रयास मे हबदम नागन बहैत छान जे  
जेना-तेना रैठाक आकाँक्षा पूरा होएक । मोन  
पछित अछि जखनि गँजीमियबिग पठ । एक जाँट-  
पवीष्का पविषाम आयन बहैक आ हमरी हुनक पुत्रक  
बिजुल देखल बहिन, ओ पविषाम सुनि निबनि भए  
गेन बहनि, काबि बिरैकक पोजीमिण रैछ निम्न सुबक  
छलैक । पविषामक हिसारै ओकब एडमिनिष कोला नीक  
गँजीमियबिग कालेजमे आ मल्लिकुन प्रभाग भेटैरौक  
सम्भारण रहैत कम बहैक । हम कहल बहनि जे- ओ  
जी आग-काहि सब गोष्ठा अगल मनुष्यकेँ गँजीमियले  
रैणएरामे राखु छुनि, हमरा जलैत किछु दिनमे ओकब  
हान ठीक नहि बहैक । तै अगल पुत्रकेँ प्रतिशोभिता  
पवीष्काक हेतु तैआब कर आ समष्टि कामर्स बखरीक  
हेतु कहिओक । हमर गप्प सुनि माधरजी तँ सहमत  
भेनाह दूदा पुत्रक आकाँक्षा ओ नहि तोड़य चाहैत  
छान । एहि रीच पुत्र मेहो दिनीस पवीष्का द घुमि  
आयन बहनि, काबि जे आरै तँ एडमिनिषक रैब भ  
गेन छलैक । आ कथा ओ माधर मा केँ मेहो कहलक,  
मगहि गेलो जे काहि हम दूजयकबपुत्र जायरी, जतए



ओकवा काशमिनीग मे रँजोल डेक। प्रातः ओ  
झुजहफवपुव गेल आ एम्बर टिष्ठित माधरजीकेँ हम  
कहल बहिननि जे जखनि डार स्वर्ग एतेक डुम्क अछि  
तँ ओहि डुम्कताकेँ लोककँ उचित नहि।

किछु दिसक अस्तुतुव पुनः समावपुव रँजोल मे  
भेँललह। हमर जितनामा पब ओ टिष्ठित टिष्ठै चहक  
दोकाष दिस घाँटेत कहलहि- गप्पा कल माधुव भ गेल  
अछि आ ओ गप्पा ठाढ़-ठाढ़ नहि कहि सकैत छी।  
दुगोष्ठ चहक आग्रह करैत हम पुछलियनि जे कि रौत  
डेक, अगल की कहैत छलहुँ ? ओ अस्तु गम्भीर भ  
कहए लगल- की कहूँ ! किछु नहि हुँवा बहन अछि,  
एक दिस मनुष्यक मोह आ दोसर दिस हमर आर्थिक  
स्थिति। गता नहि जे कोना दुलूक रीट सामाज्य  
लेलैत। गप्पाकेँ फरिडलैत कहलनि जे -काहि  
झुजहफवपुवसँ अएना पब खुशीपूर्वक कहलक जे कागज-  
पतुरक कार्या भए गेल, हमर नामाकण उड्डीमाक एकछ्ठा  
गजनिगविग कालेज मे होएरौक अछि। हमसभ स्त्र  
भविक लेन सुन्दर सगला देखलहिँ छलहुँ कि ओकव अग्रिम  
पत्रि सकनोडि केँ बाथि देलक। ओकव कहल छलैक  
जे एहि लेन कम सँ कम पाँच लाख ठोका छली। पाँच  
लाख ठोकाक गप्पा सुनितहिँ लागल जेना हमर मेरीबसँ  
सरैछी खुन मोथि लेन गेल हो, मोनमे तकोनहिँ अएन  
जे ल बाधालेँ नओ मल घी लेलैतनि आ ल बाधा  
नछतीह। आँखि आगाँ अन्धार भए गेल छल, आगाँ  
कोना गजोत देखलामे नहि आरि बहन छल।  
किर्तुरारिद्वक स्थिति छल। दूदा रैछीक ओ शेट, सुनि  
जे आरँ रैकसभ पठरौक हेतु कर्ज दैत डेक, किछु  
आशि जागल। हम रात्र भए पुछि रैसनिअक जे एहि





बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हेतु हमवासभके की कवए पड़त ? ओ सहज कर्षे  
कहनक जे एहि हेतु जमीनक कागज लेक से जमानति  
कगमे जमा कवए पड़त । ओ गप्पा सुनि रौरूजी  
रैजनाह कोना लेखत, काका जखन हमरा तीनु भायमे  
रैरावा नहि भेल अछि तखन जमीनक कागज लेक से  
कोना जमा कएन जाए सकैछ । हमर झूठसँ अनायास  
निकलि गेल जे ओ तँ असुख अछि । ओ बिरलक ओ  
गप्पा सुनतहि भनतनागत ओतए सँ उठि छल गेल ओ  
अपन माथसँ कहि रैसन- 'नछीत अछि हमर कैबियर  
हिनके सब जेकाँ एही खोलनी से सजि जाएत ओ ओ  
कहेत घबसे जाले सुति बहन । हमर स्थिति रिकछे दुन,  
ल ओहि पाव ल एहि पाव, रीच समुद्रमे डूबैत एकठा  
निबीह प्राणी, जकब जिरणक कोना आस नहि । एतरी  
कहेत ओ किछ कानक हेतु बकनाह, हम हुनका बिभिन्न  
तबहँ अशिष्टित करैत अपन-अपन राँछे धन ।

माधरजीके किछ अति आरंभक कार्यरने गाम  
जाए पड़नि, जतए तेँतेँ भए गेलथि एकठा मित्र ।  
मित्रक ममियौतकेँ सेहो गँजीमियविंग पठराक जन  
टूनाओ भेल दुनमि ओ ओहो हुनके सन समझाये पड़ि  
समाधान तकर ओ नार्मिकन कवाउन । हुनकहि द्वारा  
तकरन समाधानक राँछे माधरजी सेहो पाव उतबनाह ओ  
रैछीक नार्मिकन कतेओ ठक-पैटक राँद भोगान से भ  
गेलीक । पड़ाति अपन प्लेट काँछि रैछीकेँ पठरैत  
बहनाह । कतेको दिसक राँद एकरेव हएव हुनकासँ  
समावपुवहिमे तेँतेँ भेल ओ खुरै प्रसन्नचित्त रूमनाह ।  
हमर भोज-भातक आग्रह पर अवस्तु आह्लादित होगत  
तकोन तेँआव भए गेनाह, झुदा टाह-पाव थागत



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अगण-अगण घब दिस रीदा भए गेलहुँ । हुनकामँ हैठ  
होगतहँ नाटि उठल अगण भाव-जीरण । मोटा नगनहुँ  
जे यदि हमरो सबक समय एतेक सहज बहिरैक तँ  
आग एगए. क कै सुग मलक भ्रष्टा रँगन नहि बहिरैतहुँ ।  
रूदा ओह गप्प, आरै मोटा कै की ! पक्क, भूततँ  
पाछाँ छोड़िहाव नहि, तै प्लः सक्ती भए आएन अगण  
रोटी जोगाड़, आग एहि ठाम तँ काहि ओहि ठाम,  
कोनहुना जीरणक गाड़ १ घाँटि बहन छनहुँ । एह  
दोगा दोगी मे पहुँचि गेल बली कण्ठिक । गायक मत  
शुमी- अहा रैदावा रैछु दिस मँ रौआ बहन छन, एहि  
रैव ओकव जोगाड़क काज छैलैक । रूदा जे छैलैक,  
केहन छैलैक ओ तँ हमहिँ जलैत छनहुँ, रूदा किछ  
सतोयजनक तँ अरु छै छन । एतेक दूर अगनाक  
पश्चात गाम मँ सम्पर्क कयि गेल आ अगनाकै नर  
परिचयेमे घुमा जेनहुँ । आग कतेको मानमँ कण्ठिकमे  
बचन-रँगन छी, रूदा गाम तँ गाम होगत छैक ।

किछ दिसक अरकामे पब गाम पहुँचल छनहुँ ।  
गाम जेह सम्भावथर रँजाव नहि जागरै ३ समुद्र नहि ।  
संयोग एहन जे सम्भावथर जागतहँ छैलै गेलह  
माधरजी । कशेम फेम पुछैत कत छी, रैहूत दिसक  
बाद छैलैहुँ, आदि प्रेमक सड़ १ नगा देननि । हम  
कहनिहहि जे एतेक प्रेमक उतव ठाढ़-ठाढ़ नहि द  
सकैत छी । ताहि पब ठहला मालैत राजि उठनाह-  
अहाँ तँ हमर मुहक गप्प छीनि जेनहुँ आ ३ कहैत हम  
दुनु गोठै छहक दोकानमे पेमि गेलहुँ । छहक  
दुसकीक सङ अगण कथा हुनका सुनलैत गाम मँ एतेक  
दूर, ताहि पब मँ निश्चितता नहि, ३ गप्प सप्प कहैत  
छियैह । रूदा ओ आशोक पोछरी थोलैत कहनि-



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

भगवती सब आशि पूर्ण कबतीह । गप्पा रैठरैत हम  
बिरेकक गँजीमिबिग पठ । गक जिज्ञासु भेनहूँ, सङ्घि  
छप्पीमे गाम अरौक बिषयमे पुछि रैसजिअनि । हमर  
गप्पा सुनि ओ एकरोव हमर मुह दिस तकि आकणि दिस  
ताकए नगनाह । जेठक मस, तेँ भगवान भाबव अगल  
बोद्ध कपामे धवतीरामीकेँ अगल प्रतापेँ जवा बहन  
डनाह तेँ ओ ओ हुनके दिस तकि उठनाह । एकठा पौष  
मिससि लेत कहननि- 'हँ गाम आगल अछि नगभग आठ  
दस दिस भेन हेतैक ।' एकठा पौष मिस डोडैत  
कहि उठैत छथि- "मोषमे रैहूत दिस सँ एकठा गप्पा  
घुबिया बहन डन आ मोष होगत डन जे ककरो  
कहियोक, रुदा केओ ओल रिश्वतु भेटैए नहि बहन  
डन, आग सयोग सँ अहाँ भेटै भ गेनहूँ, होगत अछि  
जे ओ गप्पा अहाँकेँ कहि मोषकेँ हलुक करी ।" हमर  
प्रतिक्रियाक प्रतीक्षा बिग कएनहि ओ सुक भए गेनाह  
"जीरनक एहि यात्राक धावमे कतेक ठोकव लागत मे  
नहि कहि । मोल मोल प्रसन्न डनहूँ जे हम अगल  
मस्य गप्पी गेनहूँ, जीरनमे नर किबिषक आशि देख  
नगनहूँ, रुदा एकएक सम्पूर्ण भरिया मेघाडादित भए  
गेन ।" ओ कहैत दहो-रहो लावमे डुपि गेनाह ।  
रौदमे रैहूतो रूखोना पव त्नात भेन जे एक दिस सब  
गोष्ठी सङ्घि भोजन कए बहन डनाह । माधरजीक  
रौरूजी बिरेकसँ पुढनथिह जे ओत कोणा कि हो ।  
एहि पव ओ एकठा सक्रिप्त उत्तर देनक सत्ता ठीके  
ठाक । आ रौरूजी राह । राह ! कहए नगनाह । गप्पा  
रैठरैत गेन आ एही क्रामे बिरेक एकठा एहन गप्पा  
कहनकनि जे सबक मोष तीत अकत कए देनकनि ।  
ओ कहनकनि जे ओतए सब किछु तँ ठीक ठाक डैक



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

झुदा हमरा ग्रा कहैत आज होगत अछि जे हमरा पापा  
कोला कार्य नहि करैत छथि आ नहि त कोला पैघ  
र्यापारी छथि । ओकर कहैत छलैक जे एतेक धरि हम  
पहुँचलहुँ अछि ओ त अपन रिश्तासँ, नहि त हमराहुँ पापा  
जेकाँ पाँट नाथ ठाकाक जेन पठरा आ लोकरी कबरा सँ  
पहिल अपन मन्त्राले कर्जदार रैलए पड़ि तए । आगाँ  
ओ दादाजीसँ कहि रैसन- अहाँ त रहुत पैघ पड़ित छी  
तथनि ग्रा कहला अहसास नहि भेल जे अहाँ सँ कम  
पठन-लिखन पड़ित जागे मा अपन दू लैछाले कत सँ  
कत पहुँचा देलन्हि, हमरा त अहाँक एहि बुद्धि पर हमी  
नलैत अछि जे अहाँक रैसलत हाथ-पैबक अछि तै  
बुद्ध-नगब रैनि रैसन बहि गेलन्ह, जालिसँ सम्पूर्ण  
परिवार काहि काँ बहन अछि । माधरजी ओ हुनक  
रारुजीकेँ किछु बुद्धि नहि बहन छलनि, झुदा बिरैक जेन  
धरि मन, ओ रूद्ररूदागत बहन- कोन घबरे जग्य भ  
गेल, से नहि जानि ।

माधरजीकेँ शोभ कबराये ठीके रहुत समय लागल,  
मनषि दुगुन्नाये अपनहुँ पड़ल छलहुँ । पाण हुनक हाथमे  
दैत मात्र एतएहि कहि सकलैनि- माधरजी, ग्रा नरका  
रैसात छियैक, आ एहि रैसातमे अपन जे सरदरा  
तकरैक ओ असम्वर । बुद्धियौ जे हमरा लोकनि एकठा  
टिड्डी जे अपन रैसातक जेन अपन सत  
आकाँकारे आनि से मोकि ओकर सतक आकाँका पुवा  
करैत बद्ध एहि आशिये जे एकठा नर रिहा  
अउतेक । ठीक तानी रैबये हमरा पास जाय रानी  
पाड़ि खूजराक जेन प्रक्री मरि बहन छल आ हम हुनका  
सँ रिदा लेत छनि पड़ैत छी आ बास्ता भवि अपन्याँ

बि ए नु बिदेह *Videha* बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

मानवीय

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

माधुरजी हमर आगु मे नटेत बहेत छथि आ हम सोछ  
बलैत छी ई नरका रैसात..... !

ई बचसपब अपन मतेर [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पब  
पठाउ ।



आशीय अनटिहाब

मैथिली गजलकार परिचय श्रृंखला



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

भाग-1

जीवन सा

आधुनिक मैथिलीक पहिल गजलकार ।

परिचय----स्व.जीवन सा जन्म हरिपुर गाम ( प्रखंड-सवायबज्ज, समुदाय ) 1856 अ.मू. काशीमे 1920 अ, प्रेमशिकर सिंह हिनकर जन्म आ मू. 1848-1912 मिथे छथि, काशीबाजक दावाधर पदपुर रहितु दिस बहथि, हिनकर छवि नष्टक सुन्दर संयोग, नर्मदा सङ्कट, मैथिली सङ्कट आ समरती पुनर्जाग । सामाजिक क्रियान्वयन मैथिली नष्टक निखरक प्रभाव अहं केनथि, संस्कृत पदसुवा बनेत हावसीस प्रभावित हिनकर नष्टक अङ्गि, नष्टकक रीटमे अ गीत-गजल दे छथि ।

जन्मक कोला तिथि ले अङ्गि । हिनकर मू. अ.1912 केव रैनीथ पुनर्जाग सङ्गमे ले भेलथि । हिनकर गजल प्रसूत अङ्गि प्रसूत गजल हिनकर सुन्दर संयोग नष्टक लेन लेन अङ्गि जे की 1905 अ. मे निखन लेन छथि ।



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

मानवीय

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

करिवर जीरन साक नष्टक सुन्दर संयोगसँ लेन मैथिलीक पहिल  
गजन

सुन्दर संयोग चतुर्थ अंकमे लेखक स्वर्ग (गजन) कहि एकटा  
संशोधित कएल छथि ।

(गजन)

आग भवि मागि निश्चय नाथ ल छै जेब कक ।

देहरी ठाढ़ी सखी हो न एखन कोब कक ॥ १ ॥

हाथ ले दैर ! ग ककबसँ कछु का न सुले ।

मेह थिसिआगए जकवा कलकौ मोब कक ॥ २ ॥

नाथ माले ल का सभ लोक करैए हैसी ।

राज्य भूक न ले जँ कलक जकब मोमन ठूठ कक ॥ ३ ॥

जाग एखन ल धनी एक कहन मोब कक ।



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानुषीमिह

आम सङ्गाव कक एहि ठाम भोव कक ॥ ४ ॥

( मैथिली गजल शान्द आलेख भाग-१सँ सभाव )

गजलकार परिचय प्रथमा भाग-2

आवसथमाद मिह

माणनजागत अछि जे जीरन मा केव रौदमैथिलीमे आकसी  
थमाद मिहगजल लिखला । हिनक जन्म ग 19 अगस्त 1911मे  
समस्तपुरक "एलौत" नामकगाममे भेल । मैथिलीमे  
लिखरौसंगहिल ग हिन्दीमे खातिथान्तु भए छल छलाह ।  
हिन्दीमेहिनक "कागजकी नार,म्बु-  
सन्दर्भ, रसतकोकिन, याद, अन्तेद, रयाँ-गीत, काँप्याव कवता, छँ, सभावना  
छँ, उल्ल, मोनबहल दो, उल्लेखनी, स्वर्णकिरी, आकसी"  
बन्ददाम" आ "सजीरनी" नामककार्य ग्रंथ अछि तँ मैथिलीमे "माष्टिकदीप





बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

मानवीमिह

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

"" गुजाकयुन "आ"सूर्यक्षी"कारग्रंथ अछि ।

ग.1984मे"सूर्यक्षीलेन लिपिका मैथिली लेन साहित्यकादेमी  
प्रबन्धन भेटेल । लिपिकयुन ग.15नरव्वर1996मेलेन । गहो  
जीरल मा जकाँ एक-दुष्टीगजन लिखना । प्रस्तुत अछि  
लिपिक"गुनारीगजन "।

गुनारीगजन-आवसीप्रसादमिह

अहकआग कोला आल वंग देखग डी

रंगएअगुर किड रिशिय ठग देखगडी

छातकावकछ, आगकोल भेन२ छि जग मे

कोलारिक्कशे डुर्जा-डुर्गादेखग डी



रैसातनागि कतहू की रसगत गेनरि ड,

हूननगुनारि जकाँ अंग-अंगदेखग डी

हवाकेआष दिसँ चलि मे अछि मस्ती

मिजाजिदंग, कीरजेत जै मृदंग देखग डी

कमाण-तीबछठ, आओबकाष धरि तानन

नजबिगडित ग घायन, रिहंगदेखग डी

मिसासराव भ२ जागड रिना किड पील

अहँकअँथिमे हम बंग भंग देखग डी



मनुवर्षाण रमर पाँथि हूना क२ नाटय

रैगनरि२जूनता घणक रंग देखग डी । ।

नछौडकग केहन नहनन कबैत आजूक,

जेनाकि हण रैठ नील त्रैजंग देखग डी

उद्गवगव गडत अरौक कोना एहि ठाँ

रिगोनताग्य हूना,ध२लेठंग देखग डी

कतहुल जाड,बहुभरि हागुन तै सोमे

अर्गआगि नगो,रुमअर्ग देखग डी



आ गज्जन शिर रुमाव मा जीक सौजन्यसंश्रुति जे की एकवा  
अनछिहव आथवगव दु मान पहिल प्रस्तुत केल बहथि ।

गज्जनकाव परिचय श्रुथना भाग-3

मायानंदमिश्र

मैथिली गज्जनक चर्चित आ रुथात दुनु कगमे स्थान । मायानंद  
मिश्रिक आ कथन जे मैथिलीमे गज्जन ले निखन जा सकैए,  
अनघोन मटेल बहए । रुद्र मैथिली गज्जनक पहिल अकजी मल  
गज्जन शोभनकावरी गजेन्द्र ठाकुर मठे 'मायानंद मिश्रिक मान  
एतरी अतिमात बहहि जे रतमानमे मैथिलीमे रूढव्यञ्ज गज्जन



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

ले निखन जा सकेए । तँए ओ स्रग अगल गीतन नामसँ गजन  
बचना केनहि ( एठाम मोन बाधु जे माया राबू मैथिलीमे  
गजनकेँ नाम गीतन देल छलथि जे कि अस्वीकार्य छल ) ह्रदा  
आन-आन गजनकाव सब एकवा दोसब कपमे जेनक आ  
पबटावित केनक जे मायाराबूक कथन थिक जे मैथिलीमे गजन  
निखल ले जा सकेए । गजेन्द्रजी आगु निथे छथि जे ए माया  
राबूजँ ए कहलौ केनथि जे मैथिलीमे गजन ले निखन जा  
सकेए तँ ए कथन हनकब सीमाक संग-संगओहि समय सब  
गजनकावक सीमा छल । कावण ओहि समय एकेछी गजनकाव  
मैथिलीमे रहबहुअ गजन ले नीथि सकलाह आ माया राबूक  
उक्ति सँ करीत बहलाह । ह्रदा बाद मे ए. 2008मे  
अनछिह आथवक आगमन होओते माया राबूक सब गत-  
अभिमत धरस्तु भए गेल ।

हिनक जन्म 17अगस्त 1934 ए.केँ सुपौल जिलाक रैलेनियाँ  
गाममे भेलनि । भर्षि जोषी, आगिमोम आ पाथव आओर चन्द्र-  
रिन्दू-हिनकबकथा संग्रह सब छथि । रिहार्ड पात पाथव , मंत्र-  
प्रवृत्ताआ टिडे आ सुयसि हिनकब उपास सब छथि ॥  
दिनातिव हिनकब करिता संग्रह छथि । एकव अतिविड मोल की  
लेया माथी के लोग,प्रथमनि प्रती च,मंत्रप्रवृत्ता,प्रवृत्ति आ मन्त्री-  
धन हिनकब हिन्दीक प्रति छथि । 1988-  
हिनका(मंत्रप्रवृत्ता,उपास)पब मैथिलीक साहित्य अकादमी प्रवकास  
सन्मानित कए गेलनि ।

प्रबोध सन्मान 2007सँ सन्मानित ।



## गजलकार परिचय त्रिथना भाग-4

गणेशप्रज्ज 1942

जगन्नाथ- गिनखरौड़, मधुबनी । श्रीगणेश प्रज्ज मैथिलीक  
प्रथमटोरेष्टिया णष्टक रूँधिररियाकलेखक छथि आ हिनका  
उत्तरिआ(कथामग्न) कलेन सहित अकादमी प्रबन्धवर्धन  
छथि । एकर अतिरिक्त मैथिलीमे ह्य एकठा मिथ्यापरिचय,  
लोकप्रभु (करितामग्न), अन्ध-गजोत (कथामग्न), पहिललोक  
(उपग्राम), आग भोव (षष्टक)दुखदुगहबियामे (गजलमन किड)  
प्रकाशित । हिन्दीमे मिथिलाचन की लोककथाई, मणिप्रद्वकलिका-  
रनिजाराकमैथिलीसँ हिन्दी अन्तराद आनिह, तैयार ह  
(करितामग्न) । १९९४-गणेश प्रज्ज(उत्तरिआ,कथा)प्रस्तुतलेन  
सहित अकादमी प्रबन्धवर्धनप्रकाशित ।

जगन्नाथ गजलकार गप्पा छै तँ ए मैथिलीमे " गजलमन किड "  
निथनाआ ओहो मात्र दम-गनबल्लै । हिनक पोथी "  
दुखदुगहबियामे " एकराँगगी देखन जा सकैए ।



मैथिलीक पहिल अकजी गजेन्द्र ठाकुरकसठे.....मायाशन्दमिश्रि  
“गीतन” कहि आ गंगेशिर्गुज्ज “गज्जन सन किछ मैथिलीमे” कहि  
जे गनत पबसबाकेँ ज़ाबीवखरौक निर्णय लेल छथि तकरबाँद  
झुझा ज़ी आ आशीय अन्तरिक्षावर्ज रीना डम्द/ रत्नकगज्जन मिथे  
छथि तँ एकबा हम मायाशन्दमिश्रि, गंगेशिर्गुज्ज आ नानकिनारानी  
अ-गज्जनकावलोकिन दूस्त्रभारे रूने छी ।

गज्जनकाव परिचय श्रुतिना भाग-5

श्रीमती शेषालिका रमा ज़ी मैथिलीक पहिल महिला गज्जनकाव  
छथि । किछ ( दसक तीतव ) गज्जन लिखल छथि ।

जन्म: १९४३ जन्म स्थान : रंगाली ठेना, भागलपुर ।  
शिक्षा: एम., पी-एच.डी. (पठना विश्वविद्यालय), ए. एन. कालेज,  
पठना ये हिन्दीक प्राध्यापिका पदमे सेवानिवृत्त । नारी मणक



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवमिह

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

ग्रन्थिके खेनिःकषा वमसँ भवन अधिकतव वचना । प्रकाशित  
वचनाःमहरीत लाव, रिङ्कित ठोव, रिङ्कित (करिता संग्रह),  
सृति लेखा (संग्रह संग्रह), एकठा आकाशि (कथा संग्रह), यायारवी  
(यात्रा-वृत्तान्त), भाराङ्गि (कार्य-प्रगीत) , कित्तु-कित्तु ज़ीरण  
(आमेकथा) । ठहले हूए गन (हिन्दी) । २००४ ग्रामे- डा.  
श्रीमती मेहनिका रमाके, पठनाःयात्री-चेतना प्रवकाव  
भेठनहि ।

ए ह्माथेमे श्रीमती मेहनिका रमा जी रिहावक ऋत्थान्त्री नीतीने  
अभावसँ प्रवकाव ग्रहण करैत ।

गज्जनकाव परिचय त्रिखना भाग-6

हिनक एक-दुठा गज्जन अछि आ गज्जनक संरूपमे हिनक एक-दुठा  
लेख १९४८-५३केँ रीटमे प्रकाशित भेल ।





बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

कथाकव, समीक्षक, अश्वरादक, ग्रंथ सम्पादक । सहित अकादेमीक  
मूल एर अश्वराद प्रवकाव प्राप्ति कर्ता न. ना. मिथिला विश्वविद्यालय  
दवर्तगाक मैथिली विभागक पूर्ण प्राचार्य । प्रकाशक: पम्पिनेत  
पाथव, (अश्व.) आदि । १९९१- बागदेर सा (पम्पिनेत पाथव,  
एकाकी)लेन सहित अकादेमी प्रवकावसँ सम्मानित । १९९४-  
बागदेर सा (सगाग- बाजिन्दर सिंह रौद्री, उर्दू) लेन सहित  
अकादेमी मैथिली अश्वराद प्रवकाव ।

## गजलकाव परिचय प्रथमा भाग-7

प्रस्तुत अछि किछ एहन गजलकावक सूची जे कि छिटपुट गजल  
लिखना आ अश्वरिधामे मानवत लमिन केनाह । ए सूची शुक्ल  
एन क एथनधरिक अछि । संगे-संग भावत आ लगान दूनु गिना  
कए अछि । जँ एमे कोनो नाम छुटि गेल हूँ तँ ओ अहाँ  
सब त्रुटित सुटित कवी से हमर आग्रह । ए सूचीकेँ आगरे  
बादमे एकठाँ आव एहन सूची आएत जाहिमे ओहन नर  
गजलकावक नाम बहत । -----

श्रीमती बसुन्दा दाम, यदयनाथ सा यदुरव, रौद्री त्रिलोकेश्वर सिंह  
त्रिलोक, आनंद सा आयाचार्य, बगानंद लो, युन टंद सा प्रवीण,  
रौद्री बिदेह, शीतल सा, प्रेमचंद पंकज, प.निबन्धन मिश्र,  
शिवदास दाम पवित्र, तावानंद सा त्रुटि, बगानाँत बाय बगानाँ,



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

महेन्द्र कुमार मिश्र, रिहार्डार्न, दिगीप कुमार सा दिराणा,  
रौद्रनाथ मिश्र रौद्र, रिहार्ड पासराण रिहार्ड, सावन्त, कर्ण मज्जा,  
अमिन चंद ठाकुर, श्याम सुन्दर शशि, अमोक्त दत्त, कमान मोहन  
दुम्, रोमिण जलकपुत्री, जिगाडव बह्मण जगन्नी, धर्मेश्वर रिहार्ड,  
सुवेन्द्र प्रभात, अतुल कुमार मिश्र, वमेशि वज्ज, कन्हैया नाग  
मिश्र, गोविन्द दत्त, चन्द्र, चन्द्रमणि सा, फज्जुव बह्मण हामिनी,  
बागोचरण ठाकुर, रिहार्डमिश्र रौद्र, बागदेर भार्गव, सोमदेर,  
बागदेर धीरज, महेन्द्र, केदावर्ण नाग, गोपान जी सा  
गोपेश, नंद कुमार मिश्र, देवर्णिक नरीन, मार्कण्डेय प्ररामी, अमरेश्वर  
यादव ।

अंक 51१

रौद्र नाग नाम धीरेश्वर प्रेमर्षि जी द्वारा संपादित गजल  
रिहार्ड नाग पत्रिका अङ्क ।

गजलकार परिचय प्रथमा भाग-8

रिहार्ड नाग (जन्म-4/10/1955 )

हिमक गजल संग्रह " उठा बहन योग्य तिमिब " ( प्रकाशक-  
भावती संस्थान (पटना) ) रौद्र JUNE 1981मे प्रकाशित । आ ३



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवमिह

चरित्र, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिलीक पहिल गजल संग्रह रचन । हिनक सँरंधमे मैथिली  
गजलक पहिल पूर्णकालिक आलोचक आ समीक्षक श्री ७म प्रकाश  
जो कहि छथि..... " हमरा हिनारोँ काहियाक दोथ पृष्ठा  
बीस, बीड़स, टोरीस, पटिस, अष्टांगस, उभतीस(संशुद्धासक काहियाक  
नियमक दोथ), रँतीस आ सँतीस मे सेहो अछि । एकव सँरहक  
रिस्तुत रचन देरै हम अपेक्षित ले रूँमि बहन छी, कियारक तँ  
७ हमर उद्धृष्ट कथमणि ले अछि । गजल संग्रहक सँ गजलक  
रियस-बस्तु नीक अछि आ गजलकाव अपन भारणा नीक जकाँ  
प्रकट केल छथि ।

किछु गजलक काहिया आ बदीरक दोथ जँ कात क२ क२  
देखी, तँ ७ गजल-संग्रह एकछी नीक गजल-संग्रह अछि ।  
गजलकावक गजल कहँरौक फमता सेहो नीक रूँमागत अछि ।  
हमरा ७ अचरज नागि बहन अछि जे ए संग्रहक रौद  
गजलकावक दोसर गजल-संग्रह कियार ले आएन अछि । एकव  
काव तँ गजलकाले केँ पता हेतेहि, ह्रदा अपन अक्षुभरक  
आधार पव हम कह२ छहि छी जे श्री रिभूति आनन्द नीक गजल  
लिख सकैत छथि । जँ रँहक रिचाव ले करी, तँ २०१२ मे  
आएन श्री अविरद ठाकुरजीक गजल-संग्रह सँ कबीर एकतीस रँथ  
पहिल १५ मे लिखन गेल एहि संग्रहक गजल सँ उम्दा कहन  
जा सकैत अछि । एकव काव ७ जे एहि संग्रहक गजल सँ  
मे काहियाक नियम-गानक प्रतिशेति रचिमाण समयक संग्रह सँ  
सँ रँसी अछि । कथाक मजबूती सेहो नीक कोष्टक अछि ।  
खाली कहबन तुकमिनागि केल गजल ले कहन जा सकैत अछि,  
७ गग एहि संग्रह केँ पठनाक रौद एखुका गजलकाव सत केँ  
सेहो रूँमेतहि, ७ आशि अछि । गहो एकछी अचरजक रियस  
अछि जे जखन मैथिली मे नीक गजल एतेक मान पहिला  
कहन गेल छल, तखन एकव रौद गजलक विकास-यात्रा पटिस-  
तीस रँथ धरि कत२ आ कियार ठमकि गेल । रीटक अरुणि मे  
मैथिली गजलक विकासक धाव मे रौह कियार रँमि गेल छल, ७



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

मानवीय)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

रिचार्जनीय गप अछि । उवा आर ग रारु ठुठ बहन अछि आ  
आशिक नर जेति मे मैथिली गजलक घोष उठि बहन अछि ।

श्री आनंद जीक अन्त रिरवण एना अछि-----

जन्म: शिरगव, मधुबनी, बिहार । चर्चित करि, कथाकार, संगीतकार  
। प्रकाशित प्रति ठुठ उग्याम ठुठ संगीत, तीन ठा कथा  
संग्रह, ठुठ गीत-गजल संग्रह ओ टाविठ कथा-संग्रह  
प्रकाशित । २००३- रिभुति आनन्द (काठ, कथा) मैथिली जेन सहिए  
अकादमी प्रबन्ध ।

गजलकार परिचय प्रथम भाग-९

स्र. कनार्णद भट्ट



गाम--- उद्धृष्टी ( दवर्तगा)

जन्म----15 मग 1941, मृत----5 अक्टूबर 1994

प्रकाशित प्रति----- काह पव नवास हमार ( गजन  
संग्रह)

अप्रकाशित पाठ्यलिपि--- हिनकोव ( करौंग संग्रह)

गजनकोव परिचय प्रथमा भाग-10

अर्णत रिहावी नाम दस "गम्दू" 1928-2010

प्रकाशित पोथी (मात्रगजनक दस बहन डी एहि केँ अतिविशालिक  
पोथी सभ डहि)

1) नरीष मैथिलीगजन-----शोअव अर्णत रिहावी नाम दस  
"गम्दू"

2) मधुव मैथिलीगजन-----शोअव अर्णत रिहावी नाम दस  
"गम्दू"



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

( गान्धू जीक संग्रहक जाणकारी हमरा सबस जी द्वाबातेठन अछि  
हमकि हकको नग दुसुसंग्रह ले छहि )

उपसर्पि-----

2007मे- अमरुसिंहारी नान दास “गान्धू जीके”(हाफ आ योछा-  
अगमसिंह गिबि, लगानी)लेखमाहि अकादेमी मैथिली  
अमरुदपुस्तकालय प्रो. भेलहि ।

गजलकाव परिचय प्रथमा भाग-11

बरीन्द्र नाथ ठाकुर

बरीन्द्र-महेन्द्र नामक चर्चित जोड़ीक आ बरीन्द्र छथि । हिनक  
एकठा गजल संग्रह छहि---लेखनी एक वंग अलेखक ( पूर्वाचल  
प्रकाशन ( पटना ), रर्थ-१९+३०.)



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

हिनक अग्र विरवा एवा अछि--

जन्म पूर्णिमा जिलाक धमदाहा ग्राममे 1936 ई. मे भेलन्हि ।  
लल अरुन्धति गीत गएँसँ एर करिता लिखँसँ रिलेय बट  
। कोला मी पव ठाठ भेला पव ई सहजहि श्रीतारै  
अल्लादित करैत छथि । हिनक मात छोटे मैथिलीक गीत  
संग्रह, एक छिनी महाकाव्य, एक प्रयोगधर्मी काव्य, एक उपाख्यान,  
एक नाटक 'एक बाति' एरै एक हिन्दी नाटक, आ उपाख्यान गजल  
संग्रह प्रकाशित भेल छल ।

गजलकार परिचय श्रृंखला भाग-12

मियाबागमा "सबस" --10 JULY 1948, जन्म स्थान -मैरथ,  
मधुबनी विहार ।

गजल संग्रह---

1) मोहितलएन पत्रक निमोन ( प्रकाशक-सबना प्रकाशिन, मैरथ,  
प्रकाशिन साल-1989)



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

2) लोकवेद आनंदकिरी (संपादित) (प्रकाशक---विद्यापति  
सेन सन्तान, प्रकाशन साल-1990)

3) थोड़ आगि थोड़ गानि (प्रकाशक---नराबन्धु, प्रकाशन  
साल-2008)

विशेष-----श्रीमन्म जी अलंकार आखि द्वावारायोजित  
मैथिलीमे देन जाएँला गज्जल लेन पहिल सम्मान "गज्जल कमला-  
कोसी-रौगमती-महलदामन्म"क पहिल द्वावारा चयनकर्ता भनाह जे  
कि. 2011मे शुक लेन भन ।

हिनक अन्तरिबर्ष एना अङ्क---

प्रसिद्ध गीतकाव-गज्जलकाव,रौदमे कथा लेखन प्रोबन्धलेखन ।

अन्त प्रकाशित प्रति----- आँजुव भवि सिंगवहाव---करिता---  
१९+२, गीत वम्पि---गीत (संपादन)---१९९४, ले भेटैतो  
थानिस्तान---गीत---१९९४, आखि-आखि गीत ---गीत---१९९९,





विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

टमाक गहाड़ ( अमृदित उगनाम, माहिर अकादेमीसँ प्रकाशित--  
१९९९), उल्लोतमूर्यक धन्याक (कथासंग्रह) आ उगलोजगजन संग्रह ।

गजमकाव परिचय श्रुथना भाग-13

तावानन्द रियोगी 12/5/1966

महिली, महवमामे जन्म । पहिल पोथी अगल हाहक माझ  
(गजन संग्रह) १९९९ मे प्रकाशित । अन्त पुस्तक हस्तक्षेप  
(कविता-संग्रह), अतिश्रमा (कथा-संग्रह), शिनालेख (मधुकथा  
संग्रह), कर्मधारय (आलोचना ) । बाजकमल टोषवीक कथाप्रति  
एकठा टंगीकनी एकठा रियधव संकलन-संगीदन । माहिर अकादेमी  
मैथिली रान माहिर पुर्वकाव २०१०-तावानन्द रियोगीकेँ पोथी "अ  
भेठन तँ की भेठन" लेन । यली-देतना पुर्वकाव २०१० अमे  
सेहो प्राप्ति भेलहि ।

बि एन रु बिदेह *Videha* बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

" हावटान " आ " संकल्प " नामक दूरी पत्रिकाक किड अंकक  
संपादन ।

गजबकाव परिचय त्रैथना भाग-14

बमेशे-1961

गजब संग्रह---नागहल्ली---I PSI TA PUBLI CATI ON,  
1990

आ सिगाबाय ना सबस जीक ठोठ भए छथिन्ह आ सबस-बमेशे  
जोड़ ीक बमेशे छथि ।



जगत् सृष्टि मैथिली, मधुबनी, बिहार । चर्चित कथाकार ओ करि ।  
प्रकाशित ग्रंथ: सर्गांग, सर्गांगतव, दथन (कथा संग्रह),सर्गांग,  
समयत स्रवक आंग, कोसी धारक स्रुता, पाथव गव दूति (कार्य  
संग्रह), प्रतिष्ठा (आलोचनामेक विरूध),आ उगरोऊ गजन संग्रह

गजनकार परिचय प्रिथना भाग-15

सुबेन्द्र नाथ

प्रकाशित गजन संग्रह- गजन हमर हथियाव थिक ( नरावमु  
प्रकाशित, साल 2008)

जगत्-3-2 -1951

प्रकाशित पोथी---



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१) दृष्टिकोण ( आलोचना आ रंग) 2000मे प्रकाशित

२) समय शिवा ( कथा) 2008

३) मंडन शिवा मीमांसा, अद्वैत समागम ( संगीत) 2008

गजलकाव पवित्रा श्रुतिना भाग-16

बाजेन्द्र रिमान, जनकपुर, लंगान

प्रकाशित गजल संग्रह----सूर्यस्तम्भ पहिल

मैथिली, लंगानी आ हिन्दी भाषाक प्राङ्ग रिमान शिक्षाक हकमे  
रिमानाबिनि (पी.एच.डी.)क उपाधि प्राप्त कएल छथि । कथा निथि २  
यथेष्ट, यथेष्ट अवसरिहाव डा. रिमानक लेखनीक प्रशंसा मैथिलीक  
संस्कृत लंगानी आ हिन्दी साहित्यमे सेहो होगत बहनि अछि ।  
विभरण रिमानाबिनिअनुसार वा.वा.र. कैम्पस, जनकपुरधाममे  
प्राध्यापन कएनिहाव डा. रिमानक पूर्ण नाम बाजेन्द्र नाथ छथि ।



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

मानवीमिह

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

हिसक जग २७ जुलाई १९८९ ई. क२ भेन अछि । साहित्यकावक  
नर पीठ लै नवतुव ७३२२२२ कवरक कावणे ई डा.पीलेश्वर  
रौद जगकपुव-पविमवक साहित्यिक गुरुक कगमे स्थापित भ२  
गेन छथि ।

गजलकाव परिचय श्रुथना भाग-17

अवरिन्द ठाकुर

प्रकाशित गजल संग्रह---रङ्गुलीया प्रदेशे मे । ( नरावसु  
प्रकाशित, माग नरसुव-2011)

अन्य प्रकाशित प्रति---- पवती छुट्टि बहन अछि ( कविता),  
अस्त्रावक रिवाधमे ( कथा)

जग--14 February 1957, स्रपौन



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

## गजलकाव परिचय त्रैथना भाग-18

स्वर्धन मेखर टोषरी 1922-1990

प्रकाशित गजल संग्रह- गजल ओ गीत ( किछ गीत छै एंमे आ  
किछ गजल)

जन्म दवर्तगाक मिथिलासमे 1922 अ. मे भेलन्हि तथा मृत्यु  
1990 अ. मे भेलन्हि । किछ दिन विभिन्न जूरिकामे बहि  
पश्चात् साहित्यकावक जूरिण आवस्य कएल । किछ दिन 'रौदेलीक  
सम्पादन श्री स्वर्धनजी एर श्री प्रशुकांत मिथिलीक संग कएल  
तपेष्ठात् 1960 अ. सँ 1982 अ. धरि गठनामे 'मिथिला  
मिहिर'क सफल सम्पादन कएल । हिनक दू गोष्ठि बाधप्रति-



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

‘तथागत चाहक जिनगी, तैठागत आँच, तथा ‘पहिन साँम  
हिनक नष्टकक नीक बारहायिक अवतारक परिचायक अछि  
। दुनयामसँ हिनक दु गोष्ट उगन्यास गिहिव मे प्रकाशित भेल  
अछि । हिनक उगन्यास ए रतना समाव जे मैथिली अकादमी  
द्वारा प्रकाशित भेल आ जाहि पब 1980 क सालि अकादमीक  
प्रवक्तव देल गेल ।

गजलकाव परिचय श्रुतना भाग-19

जगदीश चन्द्र ठाकुर “अमिन”

निशेय---- अमिन आखि द्वारा प्रयोजित मैथिली गजल  
लेन देल जाए रैना “ गजल कमला-कौसी-रागमती-महाराज  
सन्धान” लेन हिनका साल २०१२ लेन अखि चयन कर्ता रैनाएन  
गेल अछि ।

मुन नाम जगदीश चन्द्र ठाकुर, जन्म: 27.11.1950, गैतपुर,  
मधुबनी । सेवा निवृत्त बैंक अधिकारी । मैथिलीमे प्रकाशित



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

सोपान-1. तैव आडनामे -गीत संग्रह-1978; 2. धावक ओग  
पाव-दीर्घ करिता-1999

संगति- ध्वसाव गजन नीथि बहन डथि ।

गजनकाव परिचय श्रुथना भाग-20

कालीकांत सा 'रूट' 1934-2009

हिनक किडु गजन उगनट्ट अडि ।

हिनक जन्म, महाण दार्शनिक उदयनाचार्यक कर्मभूमि समस्तेश्वर  
जिनका कवियन ग्राममे 1934 अ. मे भेलनि । पिता स्व.  
पंडित बाजकिशोर सा गायक मध्य विद्यालयक प्रथम प्रधानाध्यापक  
हुनार । माता स्व. कला देवी पृथ्वी हुनार । अतबन्नातक  
समस्तेश्वर कॉलेज, समस्तेश्वरसँ कयनाक पश्चात् गिराव सबकावक  
प्रथम कर्मचारीक रूपमे सेवा प्रारंभ कयनि । रौतहट कानसँ  
करिता लेखनमे विशेषी कटि हुन । मैथिली पत्रिका - मिथिला





विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मिहिर, माष्टि - पाणि, भाषा तथा मैथिली अकादमी पठना द्वारा  
प्रकाशित पत्रिकास्य समय - समय पत्र हिनक वचना प्रकाशित  
होगत बहन्ति । ज्ञानक विविध विधाकें अपन करिता एरै  
गीत प्रस्तुत कयन्ति । साहित्य अकादमी दिल्ली द्वारा प्रकाशित  
मैथिली कथाक विकास (संपादक डाँ रामकुशीनाथ सा ) ये हाथ  
कथा कावक सूची ये डाँ विद्यापति सा हिनक वचना “धर्म  
शास्त्राचार्यक उल्लेख कयन्ति । मैथिली अकादमी पठना एरै  
मिथिला मिहिर द्वारा प्रशिक्षा पत्र तेजस जागत डन । प्रभावस  
एरै हाथ वसक संग-संग रिचाव मुनक करिताक वचना सेहो  
कयन्ति । डाँ दुर्गनाथ सा प्रीति संकलित मैथिली साहित्यक  
इतिहासमे कलिक कपमे हिनक उल्लेख कएन गेल अछि ।  
प्रकाशित प्रति (मूलपत्रांत) : कवयित्री- करिता-संग्रह ।

गजमकाव परिचय प्रथमा भाग-21

धीरेन्द्र प्रेमर्षि



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ई मैथिली गजलक पहिल रीब छथि जे अगल पत्रिकाक माध्यमे  
पहिल गजल विशेषांक निकालथि।

राष्ट्रियत रिवरण

पूर्ण नाम: धीरेन्द्र ना

प्रचलित नाम: धीरेन्द्र प्रेमर्षि

जन्मस्थान: गोरिन्दपुर, गा.वि.स. रार्ड नं.-१, रंजुपुर, जिला-  
सिवहा, लखन

जन्मतिथि: वि.सं. २०२४, भादर १५ गते (३ सितम्बर १९७१)

शिक्षा: स्नातक

पिताक नाम: पं. प्रहलान ना

माताक नाम: श्रीमतीदेवी ना

मूल वृत्ति: लखन सबकावक लोकविहारा (प्रति विभागप्रमुख  
Plant Protection Officer)

प्रकाशित साहित्यिक प्रति:

समाजवादी समाज (लखन गजल-सङ्ग्रह)



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रकाशक: खेमनाथ-हविकना स्मृति समाज कल्याण प्रतिष्ठान,  
टिटरण: २०७३.

मनसिंयाका मैथिली एकाङ्की (लपानीमे अनुदित एकाङ्की-सङ्ग्रह),  
प्रकाशक: खेमनाथ-हविकना स्मृति समाज कल्याण प्रतिष्ठान,  
टिटरण: २०७३.

कर्मयोद्धा योगेन्द्र साह लपानी (सम्पादन); प्रकाशक: मिथिला  
शाठकना परिवार, जनकपुरधाम: २०७३.

लोक स्व सजारी ? (मैथिली गीत-सङ्ग्रह); प्रकाशक: लपान  
वाङ्मयीय प्रकाश-प्रतिष्ठान: २०७१ अग्रहण

भगत रौद्रक देव-भुम्भा (कनक दीक्षितक चर्चित पौथीक  
मैथिली कथा साक सङ्ग्रह सहस्रवृत्त), प्रकाशक: बाबो रौद्रक  
किताब, पाठशाला, नवितपुर: २०७३.९ अग्रहण

मैथिली करिता-सङ्ग्रह, म. (आठम शताब्दीसँ रीमम शताब्दीपरिक  
प्रतिनिधि मैथिली करिसभक करिताक सङ्ग्रह)

प्रकाशक: लपान वाङ्मयीय प्रकाश-प्रतिष्ठान: २०७३.

सुप्रकाश चमिबहन अर्द्ध (लपानीसँ मैथिलीमे अनुदित लोचन  
पिरी प्रकाशक करिता-सङ्ग्रह), प्रकाशक: मैथिली विकास मण्डल,  
काठमाडौं: २०७३.

सुप्रकाश धीरेन्द्र प्रेमर्षि रिमेष (लपानी लोचनसँ  
वर्णनसभक सङ्ग्रह); प्रकाशक: मिथिला लपान, सम्पादन:  
मासिकबने शोक: २०७२



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

शैक्षिक प्रति: विष्मा-पिहणी (मैथिली लोककथामात्र संग्रहीत  
रौतसन्दर्भ पुस्तक), प्रकाशक: पाठशाला विकास केन्द्र, सालाठिनी,  
भुवनेश्वर: २०७३

हमरा विधिना (मैथिली संस्कृतिसंग्रहीत लेखमात्र संग्रहीत रौतसन्दर्भ  
पुस्तक), प्रकाशक: पाठशाला विकास केन्द्र, सालाठिनी, भुवनेश्वर:  
२०७३

मैथिली रिभूतिसमात्र (मैथिली रिभूतिसमात्रक जरीनी संग्रहीत  
रौतसन्दर्भ पुस्तक), प्रकाशक: पाठशाला विकास केन्द्र, सालाठिनी,  
भुवनेश्वर: २०७३

हमरा मैथिली पोथी (कक्षा १, २, ३, ४ आ ५ क अष्टिक मैथिली  
रिषयक पाठपुस्तक), प्रकाशक: पाठशाला विकास केन्द्र, सालाठिनी,  
भुवनेश्वर: २०३.४ सँ २०३.५ धरि

मैथिली (कक्षा ६ आ १० क अष्टिक मैथिली रिषयक पाठपुस्तक)

प्रकाशक: पाठशाला विकास केन्द्र, सालाठिनी, भुवनेश्वर: २०३.१ आ  
२०३.५

हिन्दी (कक्षा १० क अष्टिक हिन्दी रिषयक पाठपुस्तक)

प्रकाशक: पाठशाला विकास केन्द्र, सालाठिनी, भुवनेश्वर: २०३.५

सांस्कृतिक प्रति:

डेग (शैक्षिक लेख हरा जागवा तथा सशैक्षिकसांग्रहीत मैथिली  
गीतसमात्र संग्रहीत)



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

खंडखान, ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रकाशक: सत्यव मिथिला, गोरिन्दप्रव, सिबहा: २०७७ रैमोथ

भोव (सकावामेक मोट तथा शोभि सङ्कार सङ्गर्हसङ्गर्हि मैथिली  
गीतसभक सङ्ग्रह)

प्रकाशक: समनोता लपान, काठमाडु, २०७७ जेठ

लहक रैएण (शोभि तथा सङ्कार सङ्गर्हसङ्गर्हि मैथिली गीतसभक  
सङ्ग्रह)

प्रकाशक: समनोता लपान, काठमाडु, २०७८ कार्तिक

गाना-रैजाणा (बिबिध मल्लवङ्गनामेक मैथिली गीतक सङ्ग्रह)

प्रकाशक: गंगा कैमेट, बयादिली: २०७३ रैमोथ

भज्ज दिराणन्द (छेठाँड मासुव वटित लपानी भज्जसभक  
सङ्गीत-निर्देशन एरै गावण)

प्रकाशक: श्रीमती कान्ता गौतम: २०७५ आमिष

रण-गीत (सर्वङ्गसङ्गर्हि चेतनामूक मैथिली आ भोजपुर्वी  
गीतसभक सङ्ग्रह)

प्रकाशक: रागसेग एमटी, काठमाडु, लपान: २०७५

चेतना (सामाजिक परिवर्तनक दिस उगूथ मैथिली गीतसभक  
सङ्ग्रह)



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रकाशक: एकाग्र एड लगानक सहयोगमे संकाय मिथिला: २०३०  
अग्रहण

Song of Light : प्रियतम हृदय कयोश्च (सार्थक गीति  
कामेष्ट तथा पहिल मैथिली सीडी)

प्रकाशक: म्यूजिक लगान: २०३०, सीडीक प्रकाशक: म्यूजिक  
मिथिला

प्रेम भेल तबहुकामे (विरिध मल्लिकार्जुन मैथिली गीतसभक  
सङ्ग्रह, कामेष्ट तथा सीडी)

प्रकाशक: मासुब कामेष्ट: २०३०

सिन्हा 2000.COM (हास्यरङ्गामेक कामेष्ट)

प्रकाशक: सिन्हाणी लगान आ बीमा कामेष्ट: २०३०

सिन्हाणी (हास्यरङ्गामेक कामेष्ट)

प्रकाशक: सिन्हाणी लगान आ बीमा कामेष्ट: २०३०

सिन्हाणीले (उद्देश्यमूलक हास्यरङ्गामेक गीतसभक सङ्ग्रह)

प्रकाशक: सिन्हाणी लगान, हास्यरङ्गा सदन: २०३०

स्वर्णित गीताना (सम्प्रेषणमूलक लगानी, मैथिली, भोजपुरी  
गीतसभक सङ्ग्रह)

प्रकाशक: स्वर्णित गीताना, लगान: २०३०



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

सुखक मल्ल (सैन्यशास्त्र तथा परिवार कल्याणसम्बन्धी मैथिली  
गीतसम्बन्धक संग्रह)

प्रकाशक: सेतु द टिप्पण, गुप्तमः २०३४

कविश्री दुनिया (लगातार रचनाएँ मैथिलीक पहिल गीत काले)

प्रकाशक: मिथिला मिहिरा लैकचिठि प्रो.लि.: २०४१

प्रकाशक: सुत:

सुतधर (मैथिली हास्य-संग्रह)

शेखर-सावनी (मैथिली गजलसंग्रह)

एमकीक जतवा (मैथिली गीत-संग्रह)

साँपक पएव (मैथिली निरंजन-संरक्षण)

७ गीत कोन गारै ? (मैथिली कथा-संग्रह)

सिद्धबाबु सुकज्जिम (मैथिली कवितासंग्रह)

लताको हारताव (लगातार हास्य-संग्रह)

The हडकी (संग्रह लगातार हास्य-संग्रह)

श्रीमत्प्रसादक निरंजन (मैथिलीमे अन्तराद कथन संग्रह)

मैथिली कथा-संग्रह (प्रतिनिधिमूलक कथासम्बन्धक संग्रह)



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बचसामेक कार्यान्वितर तथा सनसता:

लेडियो लपान, सगाटाव-राटक तथा ससादक (मैथिली, लपानी  
आ हिन्दी सगाटाव)

अरवि: रि.स. २०४९ प्रसर्ग रि.स. २०७१ टैल ससादक

काष्ठिप्रव एफ.एम., मैथिली कार्यान्वितर 'हेला मिथिला' आ ३ अत्र,  
परिकल्पना तथा प्रस्तुति

अरवि: रि.स. २०३५ फागुनसँ रतमानधरि

लपान एफ.एम., सगारेशी लोकतन्त्रसङ्गठनी कार्यान्वितर 'आराज',  
संयोजक आ निर्देशक

अरवि: रि.स. २०७३ अथादसँ रतमानधरि

लपान 1 ठेनिभिजन, लपानी साहित्यिक कार्यान्वितर 'बाया कस्तु'  
बायाक प्रस्तुति

अरवि: रि.स. २०७४ साउनसँ एक सादनधरि

लपानपत्र दैनिक, 'लगा' लपान परिसिद्ध अत्रुत्तर मैथिली खलक  
संस्थापक संयोजक

अरवि: रि.स. २०७४ आसिनसँ ७७ मासधरि

पल्लर, मैथिली साहित्यिक मासिक पत्रिका, ससादक तथा प्रकाशक





बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अरवि: रि.सं. २०३.० अथाहसं रतिमानववि

पन्नरतिथिना, दोमव मैथिली अष्टवर्ष पत्रिका (साहित्यिक),  
सम्पादक तथा प्रकाशक

अरवि: रि.सं. २०३.६ माघ

मैथिल समाज, सामाजिक तथा सांस्कृतिक त्रैमासिक, सम्पादक

अरवि: रि.सं. २०३.५ अमोजदेथि रतिमानववि

हिकोली, लपानी लान्तरासम्वर्षी मासिक पत्रिका, संशुद्ध सम्पादक

अरवि: रि.सं. २०३.२ अथाहसं रतिमानववि

कामना, लपानी मिलमासिक पत्रिका, सम्पादक

अरवि: रि.सं. २०३.३ टैत्रसं २०३.३ माघववि

उत्तम-गङ्गा, साहित्य तथा विविध समामासिक विषयसम्बन्धक पत्रिका,  
संशुद्ध सम्पादक

अरवि: रि.सं. २०३.६ त्रैमासिक रतिमानववि

यती, श्रान्ति, यौग तथा परिवार कल्याणसम्वर्षी त्रैमासिक पत्रिका,  
कार्यकारी सम्पादक

अरवि: रि.सं. २०३.४ अगहनसं २०३.३ पुसववि



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अथ उल्लेख गतिविधि:

लपानक अफिकाशि बाह्यीय अथरौर तथा साहिक पत्रपत्रिकाये  
नियमित कर्णै कथा, करिता, गीत-गजन, हाशुराश्रमण साहिक  
तथा अथ समामयिक लेखन ।

लपान, भावत, अमेरिका आ युएएस प्रकाशित लेखिव रिभिन्न  
पत्रपत्रिका एर ले मालिजनमे मैथिली, लपानी आ हिन्दी भाषाक  
एक हज्जारसँ लेखी लेख-वचना प्रकाशित ।

बीबीसी लपानी सेवा आ अल गडिया लेडियोसहित अलको  
पत्रपत्रिका, लेडियो तथा टेलिभिजन कार्यक्रममे साहिकार तथा  
भाषा अडिवाली / संस्कृतिकर्मीक रूपमे अन्तर्गत प्रसारित ।

कामना प्रकाशक लपान समाचारपत्र मे एक रर्यधरि सम्पादकीय  
पृष्ठक संयोजन ।

काशुपुव एफ.एम. मे हाशुराश्रमणबी लपानी भाषाक साधुहिक  
कार्यक्रम 'कर्मसाथि फर्मी, एड.बी.सी. एफ.एम. मे साधुहिक मैथिली  
कार्यक्रम 'टोरैठिया', मैथी एफ.एम. मे दैनिक रिश्तामेक  
लपानी कार्यक्रम 'मथन क निर्देशन तथा सञ्चालन ।

स्वतन्त्र समाचार सेवाक insonline.net मे पठिन लपानी  
अनलाइन त्रिरा समाचारक शुकशत ।

'हिमानय ठागस', साधुहिक लपान 'दृष्टि', 'रूधराव', 'हिमान आदि  
पत्रिकाये सुसु लेखन ।



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

‘लोकाली सञ्जीत-यात्रा’ समेत अल्लो महत्त्वपूर्ण पोथीक भाषा-  
सम्पादन एरि भूमिका लेखन ।

कथा, पटकथा, संवाद लेखन- मैथिली ऐतिहासिकता: ‘अहवजाली,  
‘आशीर्वाद’ आ ‘दुमहा’ ।

लपानी कथानक चर्चा ‘दुमहा’ क लेख कथारिचाव तथा  
गीतलेखन ।

जखन साहित्यिक गौणीसमेत कतिपय साहित्यिक तथा सांस्कृतिक  
कार्यक्रमक संयोजन ।

लपानी ऐतिहासिकता ‘आगच्छु’, लपानी ऐतिहासिकता ‘गोषु मा’ मे  
गीत, सञ्जीत, गायन ।

लपान, भावत तथा कतावमे अल्लो साहित्यिक / सांस्कृतिक  
समारोहमे सहभागी ।

पहिल मैथिली ऐतिहासिकता ‘मिथिलाक राधा’, ऐतिहासिक मैथिली  
ऐतिहासिकता ‘महाकवि रियापति’ तथा लपानी ऐतिहासिकता  
‘मदनरौतद्व-हविरौतद्व’ भाग २’ मे अभिनय ।

बिकट हिमाली जिला हल्लाक गतिहासमे पहिलरौत नष्टक मण्डल एरि  
अन्य विभिन्न स्थानपर लपानी, मैथिली तथा हिन्दी भाषाक  
नाटकसभक निर्देशन, लेखन तथा मण्डन ।

प्रकाश-प्रतिष्ठापक मूल-सञ्जीत समिति तथा लोकसाहित्य समितिक  
सदस्य बहि क्रियाशील ।





बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

समेत सभाबर्क पत्रकारिता प्रकाशक- २०७५ (प्रेस काउंसिल  
लगात )

जन-अभिप्रेत- २०७५ (सिवा समाज सेवा, काठमाडौं )

मिथिला दूत समाज- २०७५ (मैथिली सेवा समितिसहित दर्जनभरि  
संघ-संस्था, काठमाडौं)

मधुबनी युवकसंघी सहित सांस्कृतिक समाज- २०७५ (मधुबनी  
कला केन्द्र, काठमाडौं)

लोकतांत्रिक संस्था समाज- २०७५ (अखिल साहित्य समाज,  
सिन्धुपाल्चोक)

बिद्या-राज्यपति (D.Lit.)- डा. २००५ (बिष्णुमिश्र बिद्यापीठ,  
भागलपुर, बिहार)

मैथिली संस्कृतिक रचित समाज- २०७५ (मैथिली साहित्य परिषद्,  
महाराष्ट्र)

साहित्य भाषा- डा. २००७ (अखिल भारतीय भाषा-साहित्य समाज,  
भोपाल, म.प्र.)

उत्कृष्ट सजीवता समाज- डा. २००७ (संस्कृति मिथिला, महाराष्ट्र,  
बिहार)

जनअभिप्रेत- २०७५ (मैथिली सेवा समितिसहित संघ-संस्था,  
बिहार)



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवविज्ञान

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मिथिलावर्षे सम्मान- डॉ. २००३ (अनुवर्द्धित मैथिली सम्मान,  
नयादिल्ली)

रागेश्वरी सम्मान- २०७२ (रागेश्वरी सेवा समिति, बाजुरिबाज,  
सप्तरी)

समलक्ष्य महोत्सव सम्मान- २०७५ (समलक्ष्य संस्कृति समिति, सिवनी)

माथी की गंध कथा प्रकाश- डॉ. २००३ (अभिरुचि प्रकाशन,  
शिवपुर, मुंबई)

नरवर्ष सम्मान- २०३१ (नरवर्ष मंच प्रतिष्ठा, धर्मपुर, सागा)

भाव पदक- २०३४ (भाव कला केंद्र, रिवांनगर)

निर्देश-भ्रमः

भावत, टीन आ कताव ।

सम्पर्क पता:

पोस्टाधिकार्य, रावस्थान निर्देशनालय,

श्रीमन्त्र, पल्लोक, नवितपुर, लखन ।

होम नं.: ९११-९-३३३३३३३ / ९४९२+०१३३

अमेन- dhi pr e@yahoo.com आ dhi pr e@gmail .com



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

लघु: पञ्चमैथिली मैथिलीक दोसव गठबल्ल पत्रिका अछि जखन  
की रात्रिकता अ थिक जे भानसविक गाढ जे सन २००० सँ  
यादुमितीजगव हुन आ अथला ३ जुनाग २००४  
सँ <http://www.videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> निकगव अछि, मैथिलीक पहिल गठबल्ल पत्रिका  
थिक जकब नाम बादमे १ जनवरी २००५ सँ विदेह " पडलै ।  
अ छिपणी मात्र गतिहाम शुद्धता जेन अछि । मैथिलीक पहिलसँ  
नए क एखन धरिक हलक गठबल्ल पत्रिकाक नाम युवावहन,  
ओक पहिल पोस्टरक तारीख अ ठाम देखन जा सकैए---  
<http://www.videha.co.in/feedback.htm> जँ किनको  
नग 5/7/2004 सँ पत्रिकाक निक डहि तँ प्रस्तुत कएन जाए ।

( अ लघुमे धीरेन्द्र श्रेष्ठ, हुनक पत्नी कपी आ आ हुनक दु  
गोष्ट बानक । )

विदेहक लेखक

तस्मि <http://www.facebook.com/groups/videha/> पव  
जेन छिपणी देन जा बहन अछि । अ गतिहाम शुद्धता जेन  
नीक अछि ।



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

You, Ashutosh M shra, Rabi n Chaudhary  
Pratik, Rajeev Ranj an M shra and 12 others  
like this.

Jan Anand M shra Premarshi ji ekt a star  
bain chukal chhai th

6 hours ago via Mbbile . Unlike . 1

Ashi sh Anchi nhar श्री हमर कोशिशि बहन अछि जे  
स्थावक स्थाव सब सेहो ए ह्माथेमे आरथि से आरि गेल  
छथि । .

6 hours ago . Like . 4

Dhi rendr a Premarshi श्रीशिवजी, धन्यवाद परिचय  
शुद्धनामे हमरा बखरौक जेल । पल्लरमिथिनाक सम्दर्भमे हम  
परिचय कहल बही जे रव्य २००३ जनवरिसँ शुक्र भेल डन दूदा  
ओकरा हम निवृत्तवता नहि दऽ सकलहुँ । तै ओकरा हम  
कोनो दारौ नहि अछि । तै ओहिमे रतमानबनि सेहो लिखाएल  
अछि जे सरथि गनत अछि । अग रौयोडछामे कल सम्पादन  
जकरा दुनै से नहि भऽ पाएल अछि । ओना पल्लरमिथिनाकेँ  
भायारिद डा बाजारताव यादर मरिजिनक कएल दुनाह से  
समाचारो दुगन डन । दूदा हमरा ओ कष्टग तकरोमे सेहो  
भाँउत छएत । काका हम रारसुगणक मामनामे रँडु कमजोर  
छी ।





बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

3 hours ago · Unlike · 3

Dhirendra Premarshi २०३६ माघे संक्रान्तिदेखि  
लगावको मैथिली भाषाको पहिलो अष्टवर्षीय पत्रिका

पल्लव [www.pallavmitihila.mai npage.net](http://www.pallavmitihila.mai npage.net) सुरु गरिएको  
छ । यो पत्रिका

कार्यमाडोहित मैथिली विकास मण्डलको तर्फबाट प्रो. रमेश प्रेमश्रीद्वारा  
सम्पादन तथा

प्रकाशन गरिन्छ । यसमा मैथिली भाषामा विविध साहित्यिक सामग्री  
वाक्छिका

छन् । हरेक महिना यसका सामग्रीहरू अद्यावधिक गरिन्छ ।

(समग्रति लगावको मुद्रा आयोगक अध्यक्ष विषय कमजुद्धावा  
निधित पुस्तकमे सेहो पल्लवको रीत बाखन गेल अछि । एकव  
जे निरुद्धि से अस्यायी प्रगतिगत लेनाक कारणे आरौ नग  
लेछैत अछि । डा कमजुद्ध कितारिक निरुद्धि अगठाम द२ बहन  
छि-[http://www.kasajoo.com/itbook\\_lvinaya.pdf](http://www.kasajoo.com/itbook_lvinaya.pdf) )

mai npage.net : The Leading Main Page Site on  
the Net

[www.mai npage.net](http://www.mai npage.net)

2 hours ago · Like ·

**मानुषीमिह**

हम <http://www.pal1>

ବହନ ଡି ।



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

mai npage.net : The Leading Main Page Site on  
the Net

[www.mai npage.net](http://www.mai npage.net)

32 minutes ago · Like ·

Dhirendra Premarshi अहाँ सही कहै छी आशियञ्जी । जा  
रात हम उंगवका कसौठेमे सेहो निखल छी । (एकब जे निज  
छै से अश्विनी प्रसन्नतिक भेनाक कावणे आरै नग भेटैत  
अछि । ) उना एकछी रात हम कहि दी जे हमर जा द्वारा नग  
अछि मात्र जाणकारीभरि अछि । आरै जेँ कि ओकर प्रमाणा  
खतम भेल जा बहन छै तैँ भऽ सकै जे हम ओ बिरबणो  
हछी दी ।

22 minutes ago · Unlike · 1

Ashish Anchinhar है मेणपेज डछै लछै डोमेल हम  
प्रायः खतम भऽ गेल छै, तकरा बाद कियो दोसर गोठै  
ओकरा लेल छथि प्रायः । तेँ दुखारे मेणपेज डछै लछैक सर  
डोमेल पन्नर सेहो खतम भऽ गेल छै । तेँ हिसारै सेहो  
भानसबिक गाछ आ आब किछु सांगै जे यादगिरीज केव  
अनुसूत २०००मे गजेन्द्र ठाकुर जी द्वारा शुरू भेल सेहो याद  
द्वारा जियोमिरीज रैन्द कऽ देनाक बाद खतम भऽ गेलै छदा  
अथला एकब सब सँ प्रवाण निज ३ जुनाग २००४ अथला  
अछिये । उना हिसारै सेहो भानसबिक गाछ पहिन आ पन्नर  
दोसर गछैबलछै पत्रिका सिद्ध होगए आ तदनुसार परिवर्तन/  
सम्पादन कऽ देल छी.. सादर ।



विदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

about a minute ago · Like

गजबकाव गविचय त्रैथना भाग-22

रिजय नाथ सा

प्रकाशित गीत-गजब संग्रह---- श्रीक जल ( प्रकाशित मात  
2008, प्रकाशिक -मेथव प्रकाशित)

पिता-ग. बतिनाथ सा ( गुरि रिभागाधरक प्राडा दर्शन रिभाग,  
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)

गाम---ग्राम-पोस्ट---तनधरवा, राँसी, सिन्धुधरनगर,( उँतव  
प्रदेश)

शिक्षा---रिजय नाथक ( काशी हिन्दू विश्वविद्यालय)



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

वृत्ति---पत्रकारिता आ स्रष्टव लेखन, आर्यावर्तक संग्गादकीय  
रिभागमे विरिध मेरा, छूटफुलान्दक छिरी केव लेखन, आकाशिराणी  
आ दूवदर्शन पठनामे करिता पाठ आ अग्र्या तवहरक प्रभाव

गज्जनकाव पविचय श्रुथना भाग-23

बाग भरोस कागड़ा भ्रम, 1951

प्रकाशित गीत-गज्जन संग्रह----मोमक पयलेत अथव

जन्म-रैघटोवा, जिना धनुषा (लपान) । रैघटोवा: उनागत धुआ  
(करिता संग्रह), नहि, आर नहि (दीर्घ करिता), तोवा संगे  
जएरौ ले रुजरा (कथा संग्रह, मैथिली अकादमी पठना, १९५४),  
मोमक पयलेत अथव (गीत, गज्जन संग्रह, १९५२), अप्पल  
अनछिन्नाव (करिता संग्रह, १९६० अ.), बाणी चन्द्रारती (नाटक),  
एकठा आओव रैमन्तु (नाटक), महियान्त्र दूदरिद एर अग्र नाटक  
(नाटक संग्रह), अन्ततः (कथा-संग्रह), मैथिली संस्कृति रीट  
क्याउन्दा (सांस्कृतिक निरंकर सभक संग्रह), रिसवन्-रिसवन् सभ  
(करिता-संग्रह), जन्मकथन लोक छि (मिथिला पेंडिअस), लोक



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्करण **ISSN 2229-547X VIDEHA**

नाम: जेठ-जेठन (अभिसन्धान), घबमूह (उपन्यास) २०१२। लपान  
प्रकाशक प्रतिष्ठापक सदस्यता- श्री बाग भवाम कागड़ि (अभिसन्धान)  
(2010)

गजलकाव परिचय प्रथमा भाग-24

नवमे क्रमांक निकल

जुन 27 जुलाई 1950 भगवान् देवस्वामी (ममताशिव)

प्रकाशित प्रति----- अविषय, मनुष्य मदन वम ठेगकय, रिम  
राती दीप जवय (कार्य-) कथा-संग्रह- तबि गेल दर्दक  
गनाव। उपन्यास- ठेगकैत ठीस। नष्टक- छेथगव थोच।

गजलकाव परिचय प्रथमा भाग-25



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

योगार्णव हीरा

ए पत्रिका गजमकार डहि जे मैथिलीमे पूर्ण कपोन आ पत्रिका  
रौब अवरौ रौबक पोषण केनथि । ह्मदा एही कावणे मैथिली  
संपादक सब हिसका कात कए देनकहि

मूल नाम--योगार्णव दास हीरा

जन्म-30-1-1940

गाम--डूमरी, पत्रावस-गणपतगंज, थाना-बायोपुर्व, जिला सुपौल

शिक्षा-- हिन्दी भाषामे मास्टर डिग्री

लेखन---मैथिली आ हिन्दी दुनुमे

प्रकाशित पोथी--- बीड की तमशि, तले आदमी की तमशि (   
उपन्यासिका), मिष्टती डायी ( कहानी संग्रह), एक अछा रौ (   
एकांकी संग्रह), आज की कहानी ( गद्यक) । सब प्रकाशित पोथी   
हिन्दीमे । मैथिलीमे ह्मदिये हिसक पोथी आएत ।

गजमकार परिचय श्रुथना भाग-26



गजेन्द्र ठाकुर,

पिता-स्वर्गीय प्रगल्भ ठाकुर, माता-श्रीमती लक्ष्मी ठाकुर, जन्म-  
स्वान-भागनपुर 30 मार्च 1971 ई., मूल-गाम-मैरथ, भाया-  
समानपुर, जिला-मधुबनी (बिहार) ।

शिक्षा: एम.बी.ए. (मैथिली), सी.आ.सी., सी.एन.डी., कोरिद ।

बिदेहक <http://www.videha.co.in> प्रधान संपादक सहित  
अनेको लेखक संचालक आ पत्रिकादर्शक ।

प्रकाशित गजल संग्रह----बागि रैल रैलरौक दाम अगुरौव पोल  
डू

बिदेह----- हिनक चरित्रा कथा बिदेहता अडि---

1) ई मैथिलीक पहिल अकड़ी छथि, आ





विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

2) हिनका माध्यामे मात्र रौबरु मानमे कन ३३.०-४०००० नरनेथक  
आ कतिअन लेखक सामल अएनाह ।

3) अस्तुव-महारिआनय फ्रिक्टे प्रतियोगितामे "मैथ ऑफ द  
मीरीज" (1991), सम्प्रति अमेरिका गोल्लर

4) अतर्जनि लेन तिवहता आ कैथी युनीकोडक विकासमे  
योगदान आ मैथिलीभाषामे अतर्जनि आ संपादक शैक्षिक  
विकास, मैथिली विकीपीडियाक संपादक । गुगल मैथिली ट्रेन्सलेटमे  
योगदान आ शैक्षिक बृहत संकलन ओ प्रकाशन । संस्कृत रीथी  
नाटकक निर्देशन आ ओमे अभिनय ।

अन लेखन:

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-१

महाराष्ट्र (उपनिषद्)

महाराष्ट्र टोपडगर (पद्य संग्रह)

गल्प-गुह्य (विहारी आ नव कथा संग्रह)

संस्कृत (नाटक)

ब्रह्महन्त आ अमरुति मन (दूरी गीत प्रबन्ध)



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बौद्ध मन्त्राली/ किशोव जगत (बौद्ध बाँक, कथा, करिता आदि)

उत्क्रांति (बाँक)

सहस्रगीर्वा (उपन्यास)

प्रश्न-निर्देश-समालोचना भाग दु (कवकक्षेत्रम् अन्तर्गत-२)

धार्मिक बौद्ध बौद्धिक दाय अगुर्वाव पोल डू (गज्जल संग्रह)

शैलीमन्त्रम् (कथा संग्रह)

जलौदीप (बौद्ध-बाँक संग्रह)

कवकक्षेत्रम् अन्तर्गत

देवनागरी रमण

Kur uKshet r amAnt ar manak \_Gaj endr aThak ur .pdf

तिवहुता रमण

Kur uKshet r amAnt ar manak \_Gaj endr aThak ur \_Ti r  
hut a.pdf

ब्रैल रमण

Kur uKshet r amAnt ar manak \_Gaj endr aThak ur \_Br a  
i l l e.pdf

सहस्रगीर्वा-ब्रैल मैथिली (पी.डी.एफ.)



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

महाराष्ट्र-ब्रह्म-मैथिली

मिथिलाक इतिहास- भाग-२ (शीघ्र)

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बौद्धाचार्य (शीघ्र)

The Comet

The Science of Words

On the dice-board of the millennium

A Survey of Maithili Literature - Vol .II -  
GAJENDRA THAKUR (soon)

Learn Mthilakshar Script तिवहूता (मिथिलाक्षर)  
सीथू

Lear n\_M t h i l a k S h a r a \_G a j e n d r a T h a k u r .p d f

Lear n B r a i l l e t h r o u g h M t h i l a k s h a r S c r i p t  
ब्रह्म सीथू



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Lear nBr ai l l e \_t hr ough \_M t hi l ak shar a.pdf

Lear n I n t e r n a t i o n a l P h o n e t i c S c r i p t  
t h r o u g h M t h i l a k s h a r S c r i p t अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक  
रूपमात्रा सीधू

Lear n \_I n t e r n a t i o n a l \_P h o n e t i c \_A l p h a b e t \_t h r  
o u g h \_M t h i l a k s h a r a . p d f

सह-लेखन:

गजेन्द्र ठाकुर, बागेश्वर कुमार सा आ पञ्जीकार विद्यानन्द सा

MAI THI LI -ENGLI SH DI CTI ONARI ES

Mai t hi l i \_Engl i sh \_Di ct i onary \_Vol .I .pdf

Mai t hi l i Engl i shDi ct i onary \_Vol .I I \_Gaj endr aT  
hakur .pdf

ENGLI SH-MAI THI LI DI CTI ONARI ES

VI DEHA ENGLI SH MAI THI LI DI CTI ONARY

Engl i shMai t hi l i Di ct i onary \_Vol .I \_Gaj endr aTh  
akur .pdf

जीलाम मैथिली (४३.० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी  
परिष्कार

बि एन ए विदेह *Videha* विदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) विदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई  
पत्रिका *Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal* विदेह प्रथम टैथिली पत्रिका ए पत्रिका



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जीलाम टैथिली (४३.० ए.डी. २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी  
पञ्जी (Click this link to download)

<http://www.box.net/shared/yx4b9r4kab> (Click  
this link to download)

OR right click the following link and save  
target as:-

[http://videha123.wordpress.com/files/2009/11/  
panji\\_crc1.pdf](http://videha123.wordpress.com/files/2009/11/panji_crc1.pdf)

AND click this link to download some of  
the jpg images of palm-leaf manuscripts of  
Panji.

<http://www.esnips.com/web/videha>

AND CLICK EACH OF THE FOLLOWING 17 LINKS  
TO DOWNLOAD ALL THE 11000 JPG IMAGES IN 17  
PDF FILES.

पञ्जी (मूल मिथिलाक ताड़पत्र)

दूध पञ्जी

**मानुषीमिह**

## মোদানন্দ বা শোখা পণ্ডী



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

मूल गीत-१

गजलकार परिचय प्रथम भाग-27

महा जी

प्रकाशित गजल संग्रह----माँस आँगनमे कतिआएन छी ।

अन्य प्रकाशित पोथी----प्रतीक ( रिहसि कथा ), हम प्रकृत  
छी ( साक्षात्कार)

शीघ्र प्रकाशित पोथी---- तैया जी ( उपन्यास) आ एकठा हाँक  
संग्रह

हिमक अन्य विवरण एसा अछि-----मूलनाम- मल्लो ज कमार  
कर्ण, जन्म-27 जनवरि 1971 (हठौठ कपोली, मधुबनी), शिक्षा-  
स्नातक प्रतियोगिता, मैथिली साहित्य । वृत्त-अतिरिक्त, भारतीय जीवन  
रीति निगम । पहिल रिहसि कथा- 'कठि' भारतीय मण्डलमे 1995  
प्रकाशित । पहिल कथा-कहव आ हम ' भवि वात भोव मे



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

1997मे प्रकाशित । एथन धरि दर्जना रिहनि कथा, नघ् कथा,  
झरिका, गजन आ रिहनि कथा सङ्ग्रही आलेख प्रकाशित ।

रूपातः मैथिली रिहनि कथाकेँ स्तुत रिया कर्णे स्थापित कबरौक  
दिनामे सङ्घर्षवत ।

गजनकाव परिचय प्रथमा भाग-28

शान्तिनक्षत्री टोपरी

ए शीमती शैफलिका रर्मा जीक रौद मैथिलीक दोसव महिना  
गजनकाव दुधि आ सतसँ पहिल अष्टिहाव आथव द्वावा हिनका  
गजन निखरौक जेन प्रेषित कएन गेल । मल ए अष्टिहाव  
आथवक खोज थिकीह ।

शीमती शान्तिनक्षत्री टोपरी, ग्राम गोरिन्दपुर, जिला सुपौल निवासी  
आ बाजेन्द्र मिश्र महारिण्यनय, सहवसा मे कार्यवत  
पुस्तकालयाध्यक्ष श्री प्रामाणन्द नाक जेष्ठ सुपुत्री, आठव ग्राम  
महियी (पुनर्वासि आवागङ्गी), जिला सहवसा निवासी आ दिदी कुन





बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आँख जकालासिन्धु सँ जुड़न अख्यक आ समाजशाली श्री अक्षय  
क्याव टोषवीक अक्षिणी छथि । प्राणीशाली सँ स्नातकोत्तर बहिनो  
शिक्षाशालीक स्नातक शिक्षार्थी आ एकठाँ समाजशाली सँ साक्षिक  
छनिने आस जौवनक सामाजिक रीति-रिवाज आ थाम कऽ  
महिलाजगत सामाजिक समता आ प्रगतिनामे हिनक विशेष अधिकार  
स्वातंत्र्य ।

गजबकाव परिचय श्रृंखला भाग-29

सदमे आनम "गौहव"

विशेष---अक्षिणीक आँख द्वावा प्रयोजित मैथिली गजब लेन  
देन जखन रीति " गजब कमला-कौमी-रागमती-महार्जदा सम्मान"  
सँ 2011क विजेता छथि । धातव्य अक्षि जे ए सम्मानक  
पहिल विजेता छथि ।

गाम-गुवसौलिया, भाया- जयनगर, जिला मधुबनी ।



## गजबकाव परिचय त्रुथना भाग-30

अनित कृमाव मल्लिक ( अनटिन्हाव आथव गव " अनित " नामस  
उपस्थित )

हिनक परिचय हिनक अगल शेट्टमे-----

हम अनित कृमाव मल्लिक पिता श्री सुलेन्द्र नान मल्लिक माता  
श्रीमती सुशिला देवी मल्लिक । हमर जन्म २२ दिसम्बर १९७२ मे  
सागा जिला, मेटी अंचल, लगान मे भेल । हमर पुरखी ग्राम  
महिमारी, थाना सिंगरौवा, जिला दरभंगा सां डुनाह, कविरौ ११०  
मान पहिले बागा मोमल के समय हमर रौरी स. जिरनाथ मल्लिक  
लगान अयनाह, सबकारी लोकरी गोष्टिवा मे भेटैलहि आ रौद  
मे पठैरविका भेटैलहि त लगान के भ क बहि गेलहुँ हम  
सत । हमर १० कक्षा तक के शिक्षा सागा के गकुल मे  
भेल, स्नातक तक के शिक्षा हमरा रिवर्गज आ काठमांडू मे  
भेटैल, जल प्रशिक्षण रियस मे स्नातकोत्तर के अन्तिम रैवथ डन  
रूदा काका रैस पुरा नहि क सकलहुँ । २ भाङा डी, ४ रैलिन..



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

हम सब माँ जेठे जी भाग्य के विराह विदेह गुण मे सदस्य  
हुथि श्री वृषेण चन्द्र नान, कृष्णक जेष्ठ कथा माँ भेन । हमर  
मातृक समेता, ग्राम पोष्ट, पंचांग, जिना दसिगा भेन । हमरा  
मैथिली भाषा आ अंगन संस्कृति प्रति के प्रेम हमरा अंगन दादी  
मृ.जोगमाया देवी माँ भेठेन ओ हमर आदर्श हुथि । हम  
कठोर के समय मे नष्टक सब निथेन हुनहूँ, गीत ओ सब  
गलेन हुनहूँ सांस्कृतिक कार्यक्रम सब मे लगानी, हिन्दी, बाङ्गा  
या त हरेक बाङ्गरी भाषा मे । मैथिली मे लिखना गुँमु  
विदेह माँ झुडना के रौद मात्र नुक भेन । मास मागत अक्टूबर  
२०११ मे पहिल पोष्ट हुन "आखर आखर मेह, निथे जी" । २  
पत्रक पिता जी, पत्नी संगीता कृपा करी हुथि । आशिय जीक  
रौतओन रैनीक काङ्गठ पव सबन रैनी पव गजन निथेन जी,  
एकठा दरौंग के कम्पनि मे रारहाणक जी आ अगला नीजी  
रारसाय अछि त समय के कल करी बहेत अछि । अचिहाव  
आखर त कय रैव ओ मोटि बिजिठ करैत बहलौ की संतरतः  
हमहूँ मिथ जायरे हुनहूँ ले मिथ सकनहूँ अथनि धरि । हमरा  
लगान मे लोक मैथिली मे निथेन, पठेन, भाषा के सम्मान  
भेठेन से नीक नलेन अछि त जे समय भेठेन अछि कोशिय  
करैत जी, एकव अनारा अंगन जग स्थान के रौटा सबक शिक्षा  
प्रति सचेत जी आ जे संतर होगत अछि कबराक चेष्टा  
करैत जी

गजनकाव परिचय श्रुथना भाग-31



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवमिह

मिहिव मा

डा अणटिहाव आखवक थोज डुथि ।

रिणेश---- मिहिव जी " अणटिहाव आखव " द्वारा आयोजित  
पहिल आन-नागल मोगियवाक रिजेता डुथि ।

हिनक परिचय हिनक अगल शैलमे-----

गाम - नखलीव (समावपुव)

जन्म - २ जून १९७३

शिक्षा - स्नातक (रिज्ञान) , स्नातकोत्तर (प्रबंधन)

संघति - जे. आ. आ. आ. पी रिपुब्लिकन. लाइडा मे डिप्टी  
बजिस्ट्रार

परिवार - पत्नी - श्रीमती रीदना मा, पुत्री - त्रुति आ श्रिया ,  
पुत्र - आशीष

अभिकटि - माहिर ( पद्य ), "अणटिहाव आखव" के प्रेषणा मो  
गजन रिवा मे प्रारंभिक प्रयास



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीमिह

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

आकांक्षा - बिदेह तृतीय माहिल मे मैथिली माहिल के शीर्षक  
देखरै

गज्जनकाव परिचय तृथना भाग-32

उमप्रकाश

हिनक परिचय हिनक अंगल शेरमे-----

हमर नाम उम प्रकाश मा अछि । हम उम प्रकाश नाम सँ गज्जन  
निथेत छी । हमर बाबुजीक नाम श्री पीताम्बर मा आ माताजीक  
नाम श्रीमती बामकामा मा अछि । हमर जन्म ०३ दिसम्बर १९७९  
अछि । हमर बाबागाम दुम्री, पत्रानय मधेपुर, जिला मधुबनी मे  
भेल अछि । हमर पौष्टक गाम डाढ, पत्रानय मधेपुर, जिला  
मधुबनी अछि । हम छह भाइ रहल मे सर सँ जेठ छी ।  
दसरीक गायतन १९८४ मे रीवपुर, जिला सुपौल सँ पास केल



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

डी। अशुबलातक १९५३ मे सी. एस. सागस कउजेज, दबिउंगा  
सँ आ लातक १९९० मे लगेर सिंह कउजेज, झुजखण्डवण्ड सँ  
पास केनहूँ। सबकारी मेरा मे १९९२ मे अगनहूँ। २००१ मे  
प्रामाणिक तेरेना पब आगकब अधिकारी केनहूँ आ विभिन्न स्थान सँ  
होगत एखन भागनखण्ड मे पदस्थपित डी।

साहित्यक प्रति प्रेम पिता सँ तेरेन अछि। ओहो साहित्य अध्ययन  
मे रहूत कटि बाथे छथि आ गोष्ट आध बचना मेहो करैत बहै  
छथि। हमर पठाङ केव नियम रिक्ता बहन झुदा साहित्यक प्रति  
प्रेम ओहो समय उकेरै छन आ अगल डागरी मे किछ किछ  
निथेय बहै छलौ। झुदा ले करलो ओ बचना देखेनिये आ ले  
सुलेनिये। हम २०१० सँ लेखनक पब सक्रिय केनौ आ २०११ मे  
बिदेह ग्रुप मे शामिल कएन गेलौ। ओ घटना हमरा केन  
परिवर्तनक घटना छन। बिदेह पब आदवणीय गजेन्द्र भाङ आ  
अग्रज आशीय भाङ (हमरा सदिखन नालीए जे ओ हमर हवएन  
अग्रज छथि, जे एकाएक तेरेना) सँ सम्पर्क केन। ओ दू  
गोष्टे हमर तीतर मे ब्रकाएन गजेन्द्रका केँ रोहव आनि  
दुनियाक सामल ठाठ क२ देनथिन्ह। ओहि समय आशीय भाङ  
हमरा अलटिहाव आख मे योगदान केन आसक्ति केनथि।  
अलटिहाव आख पब हमरा गजेन्द्रशाम्बरक नियम सँ पठराक  
अरसर तेरेन, जे हमरा केन रहूत उपयोगी सिद्ध केन।  
आशीय भाङक प्रेक्षा पब हम अवरी रोहव मे गजेन्द्र निथनाङ  
शुक कएलौ। हमर निथन गजेन्द्र अलटिहाव आख रूनाग पब  
पठन जा सकैए। हम गजेन्द्रक अन्तरे कथा, पद्य आ समीक्षा  
मेहो निथे डी, झुदा झुथा कप सँ हम गजेन्द्रका डी।

गजेन्द्रका परिचय त्रिथना भाग-33



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अभिहित

हिनक परिचय हिनकेँ मोड़मे----

राबू जी-श्री नरिण कुमार मिश्र

माँ- श्रीमती रिता देवी हम सतीश्वर जिलाक लोमड़ । थाना  
अंतर्गत करियन नाम क गाँव के बहिनहार छी । हमर जन्म 11  
/ 1/1993 मे भेल । राबू जी एकटा किसान छथि तँह हमर  
प्राथमिक पढ़ाई गाँवक स्कूल मे भेल आ हाई स्कूल  
लैन्गनाथ पुर सँ 2008 मे मैट्रिक केलौं । ७९व सी .एम  
.साईंस कॉलेज दरभंगा सँ भेल आ एते सँ गीत सँ स्नातक क  
बहन छी । हमरा भाया सँ कोला रियेले प्रेम ले बहन ।  
आ मैथिली आहमन बहरोक काका कहियो ले पढ़लौं हूदा  
हमर राबू श्रीगीत भोला एमव {हमर राबू तक एमव लिखाई  
हुन हूदा राबू जी सँ मिश्र भ गेल जे की हमर हवीकक आला  
टाटा सँ लिखै छथि } शिक्षक बनथिन तँह हम भाया सँ रैसी  
दूना ले छलौं । 2008 मे हम पहिन रैब लिखलौं जे की  
एकटा मैथिली मे भगवती गीत हुन आ तेकर बाद प्रायः



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

उपसंहार **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मैथिली, हिन्दी, भोजपुरी मे गीत आ रौद मे मैथिली मे  
किछ करिता निखलौ । हमर किछ छि किछ गीत सर सुनल  
हुनथि आ किछ गायक किछ मे गेल हुनौ रौद रौकी सर  
डागरीये मे समेटन हुन हुदा २०१२ के जनरवी मे बिदेह सँ  
जुड़ना के रौद हमर बचन अगल सरलक संग भेटन ।  
जनरवीक अन्त मे श्री आशीष अचिह्नार जीक आशीर्वाद भेटन  
आ अचिह्नार आख सँ भेटै भेल ।

गजमकार परिचय श्रुथना भाग-३४

टुटल अगाव ना

अ अचिह्नार आखक खोज छथि ।

लिनक परिचय लिनकहि मेझ्ये----

पिता-श्री अक्ष ना





बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

माता-गीता देरी

जन्म-०३-०२-१९५३

ग्राम-सड़वा, मदनशंकर स्थान

पोस्ट-मदन

भाषा-बैरुबरी

जिला-मधुबनी

जन्म-स्थान-मिसराव (माया गाम मे)

भाषा-ब्र० शुशिल मा (बाज्जाली)

आवृत्तिक शिक्षा-माया गाम मे (१०वाँ धरि)

अंग्रेजी शिक्षा- अन्तर्गत-स्नातक (राजिजा) एर स्नातक (राजिजा)  
दरिभंगा में, टुंदवावी महारिद्यालय, रितीय-प्रबंध मे डिप्लोमा  
(रेजिगकव गज्जालीष्ट आर मेलेजमेष्ट, मधुबनी)

वारसादिक जिरण- एकठा रूवाष्ट्रीय कंपनी मे लेखा-रिभाग मे  
कार्यरत

परिवार-निम्न मध्यम वर्गीय प्रयक परिवार

कटि-अध्ययन-अध्यापन, नाटक-संगीत, सामाजिक सरोकार में जुड़ें  
आ साहित्यिक गतिरिधि.



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

मासिक लेखन-२००० श्रद्धा म.क.एक छोटे करिता, लेख श्रद्धा  
द्वर्तगा लेखियो श्रद्धा एर विभिन्न पत्र-पत्रिका सब म  
प्रकाशित-प्रसारित.

किडु रात्रि जिनकर अन्तर्गत म कहियो उन्मुख नहि होयार- श्री  
रिजयकांत मिश्र (अध्यापक)-कन्हौली शैलगाथ मा-सुमावी, श्री  
तावाकांत मा (संपादक, मिथिला समाद), डॉ. विवेक नाथ मिश्र  
(मैथिली रितागाथा, सी.एम.कालेज)

(हम श्रद्धा त नहि कहि सकै जे मैथिली म हमरा कहियो छै  
नहि छन कि एक त हम मैथिली म रातक धरि सब दिन एडिक  
रियस के कप मे एकवा पठनहुँ तखन मैथिली राकवण म  
कहियो छै नहि छैन अरु. हमरा कहियो मैथिली पठन  
आ कि निथरा मे रैनी दिनुत नहि छैन कि एक त ए जहिया  
रैजैत-सुलैत छी ओहिया निथैत छी आ सब दिन मैथिली  
मासिक कटिब नछैत बहन अछि...हमरा, मैथिली मे करिता  
श्रद्धा हम निथराय छावु कएनहुँ एकवा पाँडा हमर पावित्राविक  
आर्थिक रिपणता छन...एकछी एहन समय आयन जखन नछैत बहन  
जे पठनग रिचहि मे छोट पछत कि एक त अतिभारक  
पठनगि खर्चा देन मे असमर्थ भै छैन बहनि...छोटा कय  
कहियो नहि कहनहि...सबदिन उन्मुखित करैत बहनहि...हमरा  
जहिया द्वर्तगा म गाम जगत छलौ मासक खर्च अन्तर्गत लेन  
माँ-बाँझीक छिन्ना स्रष्टुतः दृष्टिगोचर होगत छन...लोकक  
मिया-पुत्रा गाम अन्तर्गत त माय-बाँझ हर्षित होगत छै...हमर  
माय कलैत छन...हमरा, खुन रैति पठनगि जिद आ तर्ग पठनग  
नहि छोटन छैन...एहि समय मे पवमादकीय श्री तावाकांत मा  
छी (संपादक-मिथिला समाद) एकछी सुमार देनहि जे द्वर्तगा  
लेखियो-श्रद्धा मे हरेक-मास किडु कार्यक्रम क२ किडु धर्माज  
कयन जा सकैत अछि आ मासक खर्च निकालन जा सकैत अछि.



বিদেহ ১১০ ম অংক ১৭ জুলাই ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৭ অংক ১১০)

মানুষবিদ

সংস্করণ ISSN 2229-547X VIDEHA

হমাৰা ও সন্মার সৃষ্ট কয়নক আঁ ফেব সঁ নর-উমোহক সঁগ  
অগল ধৰাজন কয় গঠরাক বিচাব ঠননহ্. তকোন একটা  
প্রাগরেষ্ঠ ফুন যে মাস্টরী পকডি জেনহ্...ফেব ডা. ধীৰেন্দ্রনাথ  
মিশ্র (তকোন্ ীশ বীভাগাধ্যক্ষ-মৈথিলী, সী.এম.কলেজ) কে  
মাস্তাদর্শন ভেঠন..কেদ্রিয় প্রস্তুকানয়, দবভঁগা যে ভবি দূপহবিয়া  
অগরে মৈথিলী কে স্পোখী পত্ৰী

....জে যোণ যে অরৈত গেল নিখৌত গেলহ্ আঁ এক মান যে  
পচাস ঠা সঁ রেশী করিতা নিখনহ্....আঁর মোলা নাগয় নাগন..মিত  
নর উল্লাস .....লেডিয়ো স্টেশন মেহো ২-৪ ঠা কার্যক্রম কবরাক  
অরসব দেনক..স্নাতক খতম ভেন..আঁগাঁ গঠরাক যোণ ভন দু ঠা  
ভেঠে ভাগক ভরিয় মোচি অগল ভরিয় দাঁর পব নগা  
দেনিযেক..বোজী-বোজগাবক অরসব যে ক্ষুদ্র গ চলি  
গেলহ্..ফাগি: দিল ঘুবন ..ফেব অগলা জহাঁ ধরি সকনহ্ আঁগাঁ  
পতনহ্..(ফাগলাস সঁ ভিশ্লামা কয়নহ্)....এখনহ্ গঠতহি  
ভী...মমিনা স্নাতক কয়নক..ভেঠকা ভাগ এখন ওজিগীযবিগ কয়  
বহন অছি...আঁর সতোয অছি....বাগক ফল ভেঠন..হাঁ এহি সমোনা  
যে পছিনা ভন রঁবখ যে সাহিত্যিক বচনামেকা জেনা হেবায় গেল  
ভন..ক্ষুদ্র সঁজোগ জে কনকতা স্থাপুরিত ভেনহ্..ফেব তাবাকাজী  
ভেঠনাহ আঁ নরউমোহ পারি কিড নিখরাক প্রাস শক  
কয়নহ্..কিড সফলতা মেহো ভেঠন..আঁ ফেব বিদেহ ভেঠন..একব  
সুরি পাঠক ভেঠন..গুককপ মিত্র ভেঠন .....আঁ সভঠা হেবায়ন  
সগলা জেনা ভেঠে গেল...অলে রৌপ রে ও কথা ত অনারষ্টক  
নমহব ভেন জা বন অছি..একবা এতহি খতম কক...অহাঁ সভক  
স্নহ রেব-রেব কিড নর নিখরাক...জিগীক গুণরাক জেন প্রেবিত  
করৈত বহৈত অছি ...এহল স্নহ সভ দিল রঁগন বহয় এতরৈহি  
ভগরতী "রৈদেলী"সঁ কামলা.)



## गजलकाव परिचय त्रैथना भाग-35

श्रीगती करी सा

अ अलटिहाव आथवक थोज थिकीह ।

पिता--सु. ताराकाशु सा

लेहव--- रौना सिमरी, जिना थगड़ा या

मासुव--ग्राम-पो. --- समसा मसमोवटक, जिना रौगुसबाग

पति---श्री कमला काशु सा

शिक्षा--- स्नातक ( संस्कृत )



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

गजमकाव पविचय श्रुतीना भाग-36

प्रस्तुत अर्द्ध समरेत गजमकाव पविचय । एमे हन 27  
गजमकाव दुधि । किछ गजमकावक रिस्तुत पविचय देरौक गछा  
हुन, ह्रदा रैव-रैव आग्रहक रैवजुद ओ लोकनि छै पब उग्ररूप  
बहिनो अगन पविचय ले पठा सकनह तँ ए मात्र हनक नायोनखसँ  
काज छा बहन छी । ए मभ गजमकाव अर्द्धहोव आखबक  
खोज छै ।

विश्ववारी हमाव शेरमा, सुनीन हमाव मा, रिकाम मा  
बिजल, लोनिष, दीप नावाय, रिद्यार्थी, प्ररीण नावाय, टोधरी प्रतीक,  
रिणीत उपेन, भारणा नरीण, भायव मा, बरि मिश्री भावदाज,  
जगदार्णद मा मय, अजय ठाकुर मोहन, प्रभात बाय भुष्ट,  
श्रीमती गवा मल्लिक, मल्लारव हमाव मा, प्ररीण नावाय, टोधरी,  
स्वाती नान, नितेने मा लोनिष, हमाव पंकज मा, उमेनि मडन,  
मनीय मा लोखा भाग, अतय दीपबाज, नरन श्री पंकज, मल्लोज,  
ह्रदय हमाव कर्ण, ह्रदय मयंक, अरिनाशि मा अश्व



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ए बासापव अणम मतिर [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पव  
पठाउ ।



सैम्व, कर्णिक

डा. अक्षय कुमार सिंह,

उज्जैन गाय : रसैत शैव ?

की कछ, रैतुत दिन पव 1 जून 2012 के महारीव हस्पिटल गेल  
बही । हस्पिटल की गेल छ, त्रि मडली मंग कोशी कात जएरौक  
अरमव परि लागि गेल । अरमवो एहन जे बागो रौव  
सेफेस्टीक नातिक जग-दिन पठनामन शैवके छोड़ कोशीक



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवविज्ञान

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कठेव पव रैसन 'रैबुआना' आ पुरी तठैरैबक कात ये स्थापित  
महियी एथडक एकलौता कालेज, माल शिक्षकक, डाक्टर,  
समाजक कालेज नहि अपितु सेफेठवीक रैयष्ट्रिक सम्पत्ति, ये  
मनाउन जा बहन छन। एहि अरसव पव शिक्षित आत्मकावीक  
होखेमे हमरूँ समाहित छनहुँ। जहिना ओहि ठाम पहुँचनहुँ कि  
सेफेठवीक नजरि हमरा पव पड़तहि कहि उठनाह, "ओ अक्का  
रारु। कहिया अएनहुँ, थोजो- थरवि नहि बथेत छी।  
अपगत मैसुव जाएकेँ हमरा सरकेँ रिमबिये गेलहुँ। आर हम  
हिनका सतक लेन कतेक थरु। आर हमरो उमेरि भेल।  
अहाँ तँ जनिटे छियेक, जे काज ठाकासँ तेक ओ तँ ठेके  
कवते ल। देखियौ ल ठाकाक अंतरमे कालेजक छतक  
ठनाग ककन अछि आ, एकठा रौत रैसनहुँ कि नहि, एहि रैसन  
फस्टे पार्ट मे एडमिशन सेहो लेखत।" तखनि हुनक नाति  
आरि कहैत छनि जे- "नानाजी हमरा पेमारे नागन अछि, हम  
कतए पेमारे कवर, एहि ठाम कतहुँ राखकय कहाँ देखेत  
छियेक? तहि पव ओहि ठाम जमकन रैसन एम.ए. पासमभमे  
सँ केओ राजि उठनाह- 'एतेकठा फील्ड अछि कतहुँ अहाँ  
पेमारे कए निअ।' ओ रैचा कलक कान छुप बहन आ मोटेत  
राजि उठन- 'एना कतहुँ खुजमे राखकय कएन जागत छैक,  
जँ गुरुकुल भए जएत तँ?' नानी-निबानी रिश्तेरिद्वानसभसँ  
प्राप्त डिग्रीधारीक लेन एहि प्रथम कोला उतव नहि छन। अछा  
छोड़, हमरूँ कोन हेलवामे हँसि गेलहुँ, आधुनिकता -  
रैबुआनाकता एर प्रगति - पवपवामे उमववन जा बहन छी।  
अखन जग-दिक केक कठराये एर मासुक भोजमे रिनय  
छन। भगवान जी, अवरिन्द जी, एजिनतागजी एर रिजय  
जीक रिचाव भेल जे किअक नहि एहि रीचक समयमे कोशी पव  
रैलेत पुन देखन जाय। सतगोठे ए.सी.सँ स्मरित गाड़िमे  
रैसि कोशी रौह दिस रिदा भेलहुँ जे कालेजसँ मात्र एक  
किलोमीटर पव छन। 'रैबुआना' राजावमे ओ लोकनि अगन-



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अपण पमिन्नक हिमरसँ खएरौ-पिरौक जेन रसु-जात किले  
जेनाह । गाड़ लेँ रौह पव नगा सरंगोछे उतुका दृष्ट एर  
रौलेत पुनक कार्यकेव गतिशीलताक आनन्द खागत-पौरित जेर  
प्रावत कएन । एहि ठाम हम एकठा रौत कहि दी जे रिजय  
जी, जे अपण पंचायतक प्रधाण (अधिया) सेहो बहि दुकन छथि,  
सहस्रमा जिनक महिरी प्रखण्डक सरसँ पौघ जमीदार स्र. गंगा  
रौरुक एकलौता पुत्र थिकाह । करीर मतवह रर्य पहिले प्रा.  
(डा.) स्वायच्छन्द सिंह (मैथिली प्राध्यापक, ए.एन.कालेज,  
पठना)जीक आराम रौहादुबधुवमे हुनकसँ परिचय जेन छन एर  
परिचय आश्रयतामे परिवर्तित जेजोगवात ओ कहल छनाह  
कहियो अहाँ हमर गाम दनु; हम अहाँकेँ कोशी नदीमे नाह पव  
रौसा मिनहविक संग कोशीक ओहि गाव कचहरी (कामत,  
रौसा) देखएर । समय आपेक्ष नहि जेनाक कारणेँ एहन संभर  
नहि भए सकन छन । अदा आग कोशी रौह पव गप्पक क्रममे  
उतेक रर्य पहिलका रौत छलि पड़न । ओ राजि उठनाह-  
'अकण जी आर हमर कचहरी पव चाबि चक्का छलि जागत  
अछि ।' हम ३ स्रमि रिसिततँ जेरे कएनहुँ, अरिष्टमनीयता  
सेहो हुनकी मावि बहन छन । रौह पव सरंगोछेक रिचव जेन  
जे तेसव दिन हम सर कोशीक ओहि गाव कचहरी पव जाएर  
एर ओहि ठाम दिन-रातिक भोजन कए रातिमे आपस भए  
जाएर । रिजय जी उतहिँ मौरागनक माधामे अपण कचहरीक  
मेलजबलेँ रौस-पट्टिस गोछेक दिवका एर वतुका भोजनक  
रावस्था कवरौक जेन आरथक निर्देशे दए देनहि । पछाति हम  
सर कालेज आरि भोजलोगवात सहस्रमा घुबि गेनहुँ ।

पुरनिधिवित कार्यक्रमक अग्रसारें कोशीक पुरविया एर पडुरविया  
धावक रीट अरहित सावा पंचायतक शिमौना गाम जएरौक जे  
तिथि निश्चित छन ओकरा प्रति हम कलक उद्गमन छनहुँ,  
किएकतँ सूर्य भगवानक प्रकोपक कारणेँ प्रचल गवामीमे घबसँ





विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रैहवाएर नू केँ आसविण देरै मण डन । की कहू ! निर्वारित  
तिथिकेँ हेषक घंठी रौजरेँ धारैत भए गेल एरै हमरो जगण  
पड़न । सहस्रमाँ जगरेँनाक जेन दुष्टी ए.सी. हाउ कावणियो  
नागन एरै हम सरेँ ओहिमे सरोव भए रिदा भए गेलहुँ  
‘ उजड़त गाम आ रैसत मेहव क रास्तिकताक अरजोकर्णार्थ ।  
ए.सी.हाउ गाड़ ी एरै ठण्ड । पोय पदार्थक कावणै यात्रामे कोला  
रैसी तकलीफ नहि भए बहन डन । हम सरेँ रैखवाहामे कोशी  
पव रैले रना पुन ठण्डि ओहि गाव शिमौला गाम दिस रैखहुँ ।  
ओहि पंचायतक प्रधान (झुथिया) श्री अरुण यादव जमिक पेशक  
गाम शिमौला डनि, मेहो हमरा सभक स्वागतार्थ एरै बडामे  
कोला तबहक तकलीफ नहि हो, ताहि जेन हमरासभक संग  
डनाह । कामत पव शीघ्रतर्षिघ्र पहुँचराक जेन सड़क माझकेँ  
झोड़ा कोशी नदीक काते कात गाड़ ी रैख नागन । रौद्रा  
अएराँस रैखत पहिनि कोशीक कठनियाँ एरै ओहिँ उगठैत  
लोकक दृष्टिँ द्वादयतँ दरित भेले कएन, अपितु कोशी मैयाक  
एहन ताँडरसँ डरो भेल जे कही हमरहुँ सभक गाड़ ी  
कठनियाँक कावणै नदीमे नहि समा जाय । ओहि ठामक लोक  
जीवनकेव मार्गिक चित्र मैथिली साहित्यकेँ के कहय, ताबतक  
आलको साहित्य मध्य विद्यालय लेखक लोकनि प्रस्तुत कए टुकन डनि,  
तै ओतुका दुकरताक हम की रैखान कक, एहन शिष्ट-सामर्थ  
हमरामे नहि अछि । ए.सी. हाउ गाड़ ी बहजोपव हमसरेँ स्वकज  
भगवणक प्रकोपक पूर्ण अग्रभर कए बहन डनहुँ, पर्वट ओहि  
ठामक लना-तुठका, रूख-रणिता सभ केओ अण-अण काजमे  
मस्त डन । कोशीमैयाक धावमे छेँ-छेँ लना-तुठकाकेँ  
उमकैत देखनहुँ तँ हमर देहक बाग्याँ डकसँ तुठकए नागन  
जे कही ३ सरेँ तामि ल जाय । ओ सरेँत जेना एहन हितिसँ  
अनभिज्ञ अणामे मस्त भए कोशीमैयाक धावमे निश्चित भए  
उमकैत डन जेना मायक कोवामे लना ।



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

थेत रा थेतक रीट ठायव गाड़ ी एरै ट्रैकैवक जीथ पव  
चलेत हमवहँ सभक गाड़ ी धुवा उड़लैत, खीवा, ककबी, पवोड़,  
सज्जमि, कदौया, झूग एरै मकड़क लुझैक ठाम-ठाम नागन  
ठवैक अण्णगम दृष्ट देखि नागन जेना अण्णपूर्ण झुतः एहि ठाम  
रौस करैत होथि, गंगा रौबुक कचहरी एरै हारा प्रधान अकण  
यादरक गाम पहुँचि गेल । शिशौना पहुँचतहि सम्पूर्ण गामक लोक  
स्वागतार्थ एरै जित्तामार्थ आरि गेलाह । महगुवा गिरामी श्री  
बामनबेने मिह उर्फ 'झुथियाजी' आकशिराणी पठना, रिजयजी,  
प्रांजन भाग्यजी एरै अवबिन्दजीकेँ उतुका लोक पहिनिहँ चिहँत  
ढुनतै हूक सभकेँ ओ लोकनि नाम एरै सङ्गैक आवाव पव  
प्रणाम करैत गेलाह । हम यादलयेव ठाकुर उर्फ 'भगवान जी  
(महिषी), मिथिलेने, लक्ष्मण एरै सिकन्दरकेँ उपचारिकता एरै  
आतिथ्यरने प्रणाम करैत रैसाउन गेल । अकण यादर जे ओहि  
गामक रैष्टीक अतिरिक्त सिकसपुत्र प्रधान (झुथिया) एरै रिजयजी,  
जे ओहि गामक जमीन्दार छथि, दुनूक लोकप्रियता ओहि ठाम  
एकचित ग्रामीणक आरतगतसँ रूखना गेल । किछ समायोपवाँत  
रिजयजीक गिरा पव खम्मीक मासु, भात, बोष्टी, मनाद एरै  
दलीक मग भोजन नगाउन गेल एरै हम सँ भोजनोपवाँत  
आवागक झुझाये आरि गेलहँ । पाँच-ढुँ रैजे माँसक नकवक  
हम सँ कोशीक गढुरिया पाव, जे रैनदारव नदीक नामसँ  
जानन जागछ एरै एहि नदीमे कोशीक कोला धावसँ पैघ माछ  
पाउन जागछ, क कात गेलहँ, जतए हष्टिया नागन ढुन । हम  
सँ ओहि रैनदारव नदीक कडेव पव छोष्ट-झीन हष्टियाक  
अरलोकन कएलहँ एरै पान खागत उतुका स्थिति पव रात करैत  
बहलहँ । हम एरै झुथिया जी (आकशिराणी, पठना)केँ छोड़ि  
सभ छोष्टे रैनदारव नदीमे उतवि खुरै उमकैत गेलाह एरै  
भगवान जी ओहि क्रममे अण्ण गवक मोलाक रैनन मागतवा  
येयाक चकती मेहो गमा देलनि ।



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

समयानुसार भोजनप्राप्तता हम सब कटहरी पत्र आपस अर्पित गेनहूँ ।  
गवर्गीक अधिकतम कार्पण्ये ओहि गामक दूध मज्जिना युनक छत  
पत्र उछाउन नगाउन गेन एरि हमसब ओहि ठाम आबाम करब  
नगनहूँ । शिशुशालाक पुर भागमे एकठा पौष भरणक निर्माणकार्य  
देखि हम पुष्टि लेसनहूँ जे एतेक पौष पक्का के रैगरी बहन  
अछि, ताहि पत्र उछाक दूधियाज्जी अकषा यादर कहननि जे ओ  
रौट्टा बाहल सैम्बक कपमे सब गाममे रैनाउन जा बहन  
अछि । कौशिक दूध रैमे रैसन गाममे दू महना युन, रौट्टा  
बाहल भरण, कतहूँ सौर्जिग हाथ सडक तँ कतहूँ-कतहूँ कट्टी  
सडक, जे एक गामसँ दोसर गामकेँ जोड़ैत, एतरेँ नहि  
गामक रीटो-रीट सिमेलैत तँ नन सडक देखि एरि उछाक  
लोकक दूधसँ नीतिनी बाज्यक सुशोभक रैखान सुनि रिहाबक  
कन्याशाला सभारना जलैत देखनहूँ । बातिमे हमसब हेलु भात-  
लोटी, माछ, समद एरि दलीक संग भोजन कएनहूँ एरि पाषा खाए  
सहसमा आपस जख देरौक आग्रह कएन तँ ओहि ठामक लोक  
कहए नगनाह जे एना कतौ भेलैत यै, जे एतेक बातिकेँ  
द्वारि पकसँ अतिथि रिदा होएत । तौआ सबकेँ मनलैत हम  
सब रिदा भए सहसमा अगल-अगल आराम पत्र गहूँटि गेनहूँ ।  
दूदा हमर मनमे रैसन उजड़ैत गामः रैसैत शेरब क संगक  
संग, जे ओही ठाम सब तबहै खाबिज होगत प्रतीत भेल,  
सद्यः देखन कौशिक रीट रैसैत गाम शिशुशाला, ओहि ठाम निवास  
करैत निश्चल लोकक सम्पूर्ण विकास दिस उठाउन सबकाबक डेग  
आओव तेज कोना हो ताली रीट उमवा गेन ।

ए बचनपत्र अगल मंतर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पत्र  
पठाओ ।



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



टिप्पण करवा मा

सबबा, मदलमेव खुन

मधुबनी, बिहार

### मिथिला-मैथिली आन्दोलन

मिथिला मे मिथिला-मैथिली-मैथिल के जन जे कोना संघर्ष  
एखनपरि भेल अछि ओहि मे सभसे रेशी साहित्यकारक भागीदारी  
देखल गेल अछि. लोकता आ कि आम जनता कहियो मुन  
आन्दोलन रा संघर्ष (किएक तऽ आन्दोलन शीघ्र भेल नहि केले  
एखनपरि कोना) मे नहि जोड़ल गेल जेकर नतीजा छैक जे  
आगपरि अधिकतर मार्ग के सन्ता द्वारा ठोकवाउन गेलै, संघर्ष  
अंग मुन उद्भूत सँ भेलैकैत बहन आ संस्था सभ पारिवारिक  
रैनि के बलि गेल अछि. दुःखभार एहन पड़ल छैक समाज पव  
जे आमजन आन्दोलनकारी सभकेँ चर्काव सँ रेशी किछ नहि  
बुनेत छथि. जँ कियो कतौ मैथिल अस्तित्व बर्कार कोना  
तबहक नर कार्यक्रम ठेलैत छथि तऽ ओहि मे लोक के रारसाय  
सँ रेशी किछ नहि देखाय छैक.एहि दुःखति के जन मुन कग मे



বিদেহ' ১১০ ম অংক ১৭ জুলাই ২০১২ (বর্ষ ৭ মাস ৭৭ অংক ১১০,

মানবদুঃখ

সংস্করণ, ISSN 2229-547X VIDEHA

দু'টা রাত জিন্দাদার ঠেক. পহিন জে জখণ সত্তা সমাজক  
উচরস্বাক হাথ মে বহি তখন ও কতিখাএন আ পড়খাএন রস্বাক  
লোক কে উখোণক লেন কোলা উল্লখণীয় কাজ নহি কেনক.মতদিন  
ওহি উপেক্ষিত রস্বাক কে জোণ-ঢাকব রঁনা খঠলৈত বহন.ওকব  
মোফা কলৈত বহন.এহি সময় মে মিথিলা মে সার্মতরাদী মোচক  
প্রসাব তেলন ল ভেন জে এখলোধবি ও অধিকশি লোকক পড়োড  
নহি ছোড়নক অছি.স্পষ্ট ঠেক জে এহি সঁ মিথিলাক বিকাশ  
অরবোদিত ভেলৈ.লোক মে বৈশিষ্ট্যতা বৈশিষ্ট্যক আ ফমশি:  
উপেক্ষিত রস্বাক মে প্রতিশোধক বীজারোপণ কেনক.

ফেলো জখণ ও উপেক্ষিত সমাজ একত্রিত ভেলৈ আ  
সত্তা হাথ নগলৈ ত২ এছ সময়ক বাজলতা সত্ত নংগ প্রায়:  
আমজনতাক দুখ-দর্দ সঁ কোলা সবোকারে নহি বহলৈ.কমোরৈশি  
ওহো সত্ত অগণ পুরি২তীক নকলে কেনক আ সমাজ কে বিভিন্ন  
রস্বাক মে বঁষ্ট সত্তাসীল বহরাক জোগাব কলৈত বহন অছি.ওকব  
সত্তাদুত ভেন সার্মতরাদী লোকক জুয়া ত২ জুড়া গেলৈ দ্বন্দ  
ঐঠন এখলা নহি গলৈ.এহনা মে ফাঁক-ফাঁক মে বঁষ্টন সমাজ  
ককরো আশচর্যচকিত নহি কলৈত অছি আর, হঁ এহি বঁষ্টন সমাজ  
কে ঢুঢকাবি-গুঢকাবি সত্ত অগণ-অগণ স্বার্থ সিছি মে নাগি গেন  
ঢাহে ও অগবা রস্বাক প্রতিবীদি হো কিবা পিড়ড । রস্বাক.

শোমন-প্রশোমনক সহযোগ সঁ নিবাসি আমজন সেহো এহনা  
মে উদাসীল ত২ অগণ-অগণ বোজী-বোজগাব কে গুঠ বুমি  
দহোদিশি ছিড়ি আয় নাগন.ফনস্বকপ,খল্ড-খল্ড ভেন মৈথিল  
সমাজ দিশাবদিশ কমজোব হোগত জা বহন অছি.এখনহু মৈথিলী



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आदिमनसक सबस अधिकशितः साहित्यकाले रक्षा ठेकल भुषि रा  
कियो एषाहियो कहि सकैत अछि जे सबस ठेकराक भौन केल  
भुषि मैथिली साहित्यकाले रिगलता आ गृष्टराज्य एमशिः हूणकव  
सतक संधर्षक रिगलता पब प्रमटिह नगरैत बहन अछि. आ  
जखल अगल घब मे ककरो मोजन नहि बहते तखल दूगियाक  
लोक कत२ मे ओकरा मोजव देते. तर्ग ए साहित्यकाल  
आदिमनसकावी सत सतदिन अगल प्रयास मे रिगल लोगत  
बहनाह अछि.

आदिमनस सतक दूगियाक दोसब कावा अछि जे  
एखनधरि जे कोलो आदिमनस चनाउन गेल अछि ओकर मूल  
उद्देश, ओहि सँ समाज के लोगत रैना फायदा आ नहि भेनापब  
लोगतरेना लोकमान, आ आदिमनस रिगलता कपलखा आगधरि  
कहियो आमजनताक मोँसा नहि बाखन गेल रा रैनी कान एहि  
सत पब समाज कपे आगस मे चर्चा-परिचर्चा नहि कवाउन गेल  
आ रैनीकान हवरैछि ए मे निर्णय न२ किछु दमेक लोक  
आदिमनस ठाँनि दैत भुषि.हेब यदि सामान्य नागरिक अगला के  
एकत रूनेत अछि त२ ताहि मे ओकर कोन दोष डेक.

जहिना कावसत सपथ डेक तहिना एकब समावाला  
एकदम सपथ डेक.कोलो आदिमनस तखल सहन लोगत जखल  
लहुरकता सत अगल समीची मोट, आगसी द्वैक लाग कबताह,  
समाजक सतसक लोक के ओहि आदिमनस सँ जोडताह आ  
आदिमनस मूल उद्देशक प्राप्ति हेतु ठोस नीति रैना ओकरा  
आमजनक समोकाव सँ जोडताह.



ई बालागब अणन मतिर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) गब  
गठिड ।



जगदानन्द सा मन्त्र

ग्राम पोस्ट- हविश्वर डीमठन, मधुबनी

## दूरी बिरुति कथा

### १. छरौड तौख

एकादशौक तौख, गामक डीनर सारै केँ रौरुक एकादशौ । डीन-  
डोन सँ सम्पूर्ण जेरौड केँ लातन छैन । दमो गामक लोक  
सब कियो छैन गाडी सँ कियो साइकिल सँ कियो पथर,  
सामक ड ए रजे सँ लोकक कबमान एनाग शुक । लाथारी  
सर आरि-आरि केँ रैमति । रैमथ केँ पुर्न रारस्था । कबीर  
पैतिस हाथक तँ डीनर सारै केँ दगल डनि आ आरैरना  
आग्रुतक केँ धियाग बाधि दगलक आगाँक रौबी-साबी केँ साह



मानवीय

बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सुथवा कए कै एहेन सागियाणा नागन जे ओहि मै पाँट सए  
लोग एक सँगे रैस सकैत छि । राबँशुक कोला कमी नहि ।  
भोजन सँ पुरँ सँ राबँशु देखि बग़ाजी सँ कै लोक नहि  
सकना आ अगल नग मै रैसन सुरोधजी सँ रँजना -  
"कीयो दोस्तु डीनव तँ कोला तबहक कमी नहि डोवनि,  
एतेकठै सागियाणा, एतेक लोक कै लातनाग....."  
सुरोध - "हाँ"

बग़ा - "जराँड लातनाग कोला मामूली गप्प ड़िक ओछ मै  
एतेक डीन-डोन सँ, खाजा, मुँगराँ, पोल्टाआ, बसग़ला आ सभ  
लाथारी कै एक-एकठै जेठै सेहो ।"

सुरोध - "सुननहुँ तँ हमहुँ गहे सभ ।"

बग़ा - "कि अगल की कहि ड़ीयैक, सभठै कतेक खर्चा  
डीनव कै लागि जेतै ।"

सुरोध - "हम कोणा कहू, हम तँ नहि कहियो जराँड खुरेनहुँ  
।"

बग़ा - "ड़ोक अहाँ कै तँ सदिखन दूह फ़ुनजे बहै, ओना  
हमारा हिसारै आँठ-दस नाथ रुपैया तँ नगरेँ कवतै ।"

सुरोध - "आँठ-दस नाथ रुपैया डीनव कै जेन कोन भारी  
ओनाहो क़कब रँवथो कै जोगना ड़ुलैह जे कहियो राबँ मरथि  
आ ओ दिन आरि गेनहि तँ ख़ि तँ हेरै कवता, ख़्शी मै  
आँठ नाथ की आ दस नाथ की..... ।"

## २. अनाथ

अम्मी रँवथक सोमनाथजी भवन-श्रवण समाव ड़ोयि अगल प्राण  
रिशेर्जन कए जेना । सभ मलाकामला पूर्ण तैयो सांसारिक मोह





बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

माया सँ राखन, सत कियो हुनक मृत देह केँ टाक कात सँ  
वेबल, दूथी, राखन, कलैत ।

दूठा रैछी, दूधक घृतोह, पौता-पौती सँ सगे, खाली रैडका  
रैछी झूँझ मै लाकरी कलैत । हुनको तिन चारि दिन पहिने  
सोमनाथजीक रिंगवन झाड़ केँ राँवत झेलन भए गेल बहनि  
आ ओ गाम हेतु रिदा मेहो भए गेल बहनि । आर कोला  
घड़ ी आरि सकेत छवनि ।

सोमनाथजी रैडका रैछीक आगमन । हुनका आरैत देवी सत  
समागक कण्ठारोह मै रिबनि भए गेलनि । हुनकर छोट भाँज  
हुनका देखते देवी भवि पाँज केँ पकवि कलैत -

"भँजया --- राँव छोरि छनि गेली हूँ-हूँ ..... आर केँ देखत  
...

रैडका छोटका केँ कवेज सँ नगेल हुनक पीठ केँ सहनारैत  
मन सँ - "ले ले तू किएक कले छे, तौवा जेन तँ एखन हम  
जीरैत झियोक तौह सँ कीछ । अनाथ तँ आँज हम भए  
गेलहुँ, मए चारि रँथ पहिने छनि गेली आ आँज राँवउ...."

ए बचनारव अपन मतिर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर  
पठाउ ।



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

३. गद्य



३.१

किशोर काबिगव



३.२

अ. मेनिश्वर कुमार "बिदेह"



३.३

जगदीश चन्द्र ठाकुर अमिता



३.४

अमित मिश्र



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मानवीय



३.३. उदय कृष्ण सा



३.३. जगदीश सा मय



किशोर काशीग

अथिया ज्ञी देवलि

(हस्त करिता)

रौमतरै ले कोला काज बाज करैत छि  
हम त कहै एका छी खबहो ल थोछु  
अहाँ हूँका रोछ द दिगुन



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

सबै किछु त झुथिया ज़ी देखलिन.

झरैलका के रिवधा पिनमिन  
बूठरौ सबै के झरैलका पिनमिन  
बार्थ समाय गमाउं त रौकावी पिनमिन  
सतठौ पिनमिन त झुथिया ज़ी देखलिन.

डिग्री डिप्लामा नहि अछि तै सँ की ?  
आरै पठाइ लिखाइ एकदम नहि कक  
हबदम हुनके संपर्क मै बद्ध  
शिक्षामित्र के लोकवी त झुथिया ज़ी देखलिन.

सबकाबी खरात हाइ ले पचायती बाज  
आरै बही नहि गेल कोलो काज बाज  
रिवधा पेमन पाम कबाहुं कामिन थहुं  
कम्प्याक रौदररैठ त झुथिया ज़ी कबलिन.

झुठिवा रागा के गदिवा आराम  
झुठिवा रागा के नागन तबाम  
तुखले मवी ज़ायर त री. प. एम.  
अनुदान योजना मै लेन भेलौह की पाम ?

अपन काज बाज छोडि के  
बौलोकक टकुर नगाहुं  
झुथिया ज़ी त भैठे भए जेतार  
छाहो पाम के खर्च त उहे देखलिन.

कमाए खठौ के अहाँ कबर की ?  
हुमियाँहिक हब कियक जेतारै  
रैठौ बहन अछि सबकाबी खरात



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अहाँ दोगन जाँड रौद मै ठगवा बहि ठेकरै.

मगनी के चाँडव दागन सँ पोष्टे भरी जायत  
कहियो तुखने बहि अहाँ मवरै  
कोड़ा ल अहाँ के ठेके झुथिया जी उके.  
झुथिये जी के कहन ठाँ अहाँ कवरै.

बाहत पौकेज के हेवा हेवी केनहि  
आरँ आँधि हुनकर दोहलेलौह  
सबकारी निशुँ मै अहीन नाम ठाँ अडि  
उग पव मागन त झुथिया जी कबयिहीन.

ई बचनपर अगल मतिर [ggaj\\_endra@videha.com](mailto:ggaj_endra@videha.com) पव  
पठाऊ ।



छा. मेनिष्वर कुमार

“विदेह”

एम.सी.(आम्र.) -

कायचक्रिसो

कालेज अँफ आइरिद एन्ड क्विस्ट सेन्टर, निगरी - प्राधिकरन,

पु॥ (मेलवास्ट) - ८५१०८८

सुल्लवि प्रिय



सुखवि धिया तै सुखिया,  
मग् उव रैनन  
तै उरिगी ।  
कहरौ कवत सत मेसिधिया,  
हम मेसि हगव  
अहै धेयगी  
। ।

छलैत मक जिमगीक मिमि,  
कत मवीटि डकलैत डन ।  
मिवस एकमवि रैष्ट जिमगीक,  
मोष लै थकलैत डन ।  
थाकन - प्यासन अ रैठेली,  
घाम मयेग अगम्यौत डन ।  
पानि मिमियो, डौन कमियेग,  
कत२ भैठैत अकलत डन ।

एक दिन एहिना तै किछ मनि,  
निधि देनक  
भाग्यक मनी ।  
जा२ गठन, देखन - निथन डन,  
मग आगाँ  
एक सखी  
। ।



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

नीक कि अधनाह ? पहिल,  
पठि क२ मै नथि: रूमि गड़न ।  
मल सशक्ति डल अलसो,  
झासि ल रिमि की लिखन ।  
की हमर मलाभार कैँ ओ,  
अपविटित मथि रूमि सकत ?  
रा अगल डुरि - दर्श - उरैडूर,  
अगल रौठैँ ओ छनत ।

डनहूँ गलधुल ये देखन ता,  
सग  
रैमनि  
कगमी ।  
एकठक देखेत हमरा,  
ठोव पव  
झरु - हँसी  
। ।

की दिस - सगला देखन हम,  
पव रूमन, नथि: माँट डी ।  
नथि: जव, शीतल नगए जे,  
झाँ तँ तेहल आँट डी ।  
पासन पथिक कैँ पासि भैठन,  
डहँ घनगव प्रेम केव ।  
नग लीवक झुड आभा,



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

के तकए, मृग हेम केव ।

करिक मग भारक पियामन,

अही छी

मोव डरशी

।

अही डव - अक्षर समाहित,

कार्य - पठनक

शोच्यी । ।

### सांग मे बिरह

बिस्मय - बिस्मय सांग रबिसय,

हहवारय अछि

हिया मथि मोव

।

कावी - कावी रादव

गवजय,

सिहवारय अछि

पोले -

पोव । ।





दिस दुपहरिया, बाति निरीड़तम,  
संग्रत मल -  
मृदग रँड  
जोड़ ।  
पी संग ओहना हमझू नटितहू,  
नाटय जहना  
हर्षित मोव  
। ।

पिक - बर, पी - पी मदन जगारय,  
गति मोव  
जहना छन्द  
चकोव ।  
मथि हे ! भाग्य हमर रँड मिश्रव,  
निर्दलि केहेन  
अडि  
टितछेव  
। ।

सुबतित धवनि - बगनि - कटि सुम्व,  
दादुर ठँव -  
ठँव कवगड  
जोव ।  
सिहकय प्रविरी, बहि - बहि गडुरी,  
तकसत बाति  
होगड मथि  
भोव । ।



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

### अही सप्रेम कहे छी

अही सप्रेम कहे छी ।  
अहाँ नमिः खुले छी ।  
पता नमिः किए, आग निशुब  
रैलन छी । ।

अहँ गजोबिये बनी ।  
हम अरुबिये सही ।  
हे अए (ए) छमा, कहाँ हम टानी गँजी  
छी । ।

प्रीति नहिअः सही ।  
अनाशुद्ध बनी ।  
रूदा घृणित मलँ, किए लेना  
छेलै छी ? ?

छी हमरूँ सम्भव ।  
रूदा दोष एतरेँ ।



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीमिह

द्वन्द्व मे अहँक, प्रेम प्रतिमा  
पूजे छी । ।

डब मेविक किछ ?  
रैबजोविक किछ ?  
एहेन छी ल पतित, अहाँ राखै  
डबै छी । ।

ए बचनपर अपन मतिर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर  
पठाउ ।



जगदीश चन्द्र ठाकुर अग्रिम

की तेरेन आ की तेरा गेन ( आमे गीत )

जीवनकेव आगमे रसत

आयन कहियो हँसिते-हँसिते

किछ कोठ्री डन मे खुन रँगन

मडि गेन दूदा डरिते-डरिते



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवमिह

से ठीस छद्दयमे अछि एखन्हू

किहु तप्पात-सण किहु सेवा जेन

हम सोचि बहन डी ज़रियमे

की जेठेन आ की हेवा जेन ।

२

बौरा दुनाह थिम्मा कहगत

स्वनि-स्वनि क२ डन अजगत नगगत

अ मूठ डले कि मले डन

बहि जेन मोष गुण-धूण कवगत

उग प्रष्ट-कहैया केव हापे

डन नाग कोणाक२ नथा जेन

हम सोचि बहन डी ज़रियमे

की जेठेन आ की हेवा जेन ।

२



मोले अछि एखनहुँ ओ रिहाडि  
मोले अछि ओ फुली-पाखर  
मोले अछि ओ लोदी-दाली  
मोले अछि एखनहुँ लसना-घर  
टुला नग मायक टुप्पी पर  
कए लेब आँखि डन लोवा गेल  
हम मोटि बहन डी झीरनमे  
की भेटैत आ की हेवा गेल ।

२

अंगनामे पमरिया नटगत डन  
सभ करूना-पाती कबगत डन  
ओ लोझ-लात आ लाव-दोव  
पाहुन रबियाती चनगत डन  
मुडन- उंगलन- रियाहेमे



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

हुन सभक चेतना थिया गेल

हम सोचि बहन छी झीरनमे

की भेटैत आ की हेबा गेल ।

मोठका-मोठका पोथी पठलौ

पोथी लेब सभ पन्ना बढलौ

हुन प्रेम कतेको सोसाँमे

बहि तकब निदल कतह देखलौ

हम पौनहुँ एकदिन अपनार्लै

सय-सय रीबोमे घेबा गेल

हम सोचि बहन छी झीरनमे

की भेटैत आ की हेबा गेल ।

२

हमरा सोसाँमे हुन परित

हमरा सोसाँमे हुन गलब



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

हम कतः जाँ हम कौरव जाँ

टहँदिस पमवन ठी डन अहोव

डन अहोव वस्तु सतः

डन पयव आगि पव धवा गेन

हम मोटि बहन डी ज़ीरनमे

की भेटन आ की लेवा गेन ।

२

ई बचनपव अपन मंत्र [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पव  
पठाऊ ।



अमित मिश्र

गीत

लैला कल मिना ले

दिन मे अपन रँमा ले /2/

हमरा भ गेलो तौले सँ प्याव सजनी . . .

लैला कल मिना ले . . . . .



मानवीमिह

बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

दिन बहे छी सोटेत बाति बहे छी जागन  
हेते मधुव गिनन ओ आशि बहे ये नागन 12/  
लेना के राई थ क दिन मे उतवि जो  
प्रेम नगव मे रसि जो जिनगी गुजवि जो  
तोले लेन मे हमर सँसार सजनी  
लेना कले गिना . . . . .

दुनियाँ के बीत केहन भेन रिगवीत छै  
जानि ले तैयो कि ए नागन प्रीत छै 12/  
साथ जे तोहब बहत दुनियाँ सँ नडि जेरै  
एक दु रैव ले स्र रैव मवि जेरै  
लेन गिना क प्रेम कब स्त्रीकाव सजनी  
लेना कले गिना . . . . .

ई बचनोपर अपन मतेर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पर  
पठाऊ ।



टेल कयाव सा





बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

सबका, मदलेशेव अल

मधुबनी, बिलब

गजब-1

आखर आखर सजा निथे छी गीत अहाँ ले सजनी

टाँटव गाँतव हम तके छी त्रीत अहाँ ले सजनी

अगल कलेजा कोड़ा गाँठ, सौबत पुनि मिमलेजो

लहक बस मे बीजा गढ़ छी बीत अहाँ ले सजनी

अहाँक कप ले आगाँ हम हारि लेनहुँ अगला ले

अप्ला हारि रिमावि निथे छी ज़ीत अहाँ ले सजनी

मधुब गिलन के रौना कहियो त२ मधुघट पीरौ

सोचि-सोचि घट-घट पिरौ छी तीत अहाँ ले सजनी



अंगना, घब, दनाब, सजा, रौंठ तलेत छी रौंमन

"टनल" लहक रूँ तले छी शीत अहाँ ले सजनी

-----रौं-१९-----

## गखव-2

रौंठी महग, महगो वृष भेन डे

रौंठी स्वत सजा वृष भेन डे

सौंमै शेरव सहसह लोक गखव

गायक दनाबा-घब वृष भेन डे



प्रगतिक पथ अष्टाचार अछन छै

सता समाजक जन्म घुन भेल छै

थोती कवय जे मे दीन भेल छै

रंगमण रंगारी दून भेल छै

कवली अंगन बहि देखैत लोक छै

"टंढल"हुसिक खातिर धून भेल छै

२२२२ २२२२ २२२

### रौप-गजव-1

तेया के नरका बुझि आ हमरा दीदी के खेवण

उ'त२ सौमे गाम घुमे छौ हमरा अंगना मे रौछ



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

दुला-देकी, रतिन-रामन, आगाँ मे ले कवरौ हम

हमरो दाली कापी-पिम्पिन, रैथी के देनही जेहन

रौआ डड डालि खेतो हमरा ले दूधो गवगठ

जौ ले कवरौ ठहन तखन नगतो मोन केहन

रहुत सहनियो आर ले चमतो तोहब दुलती

हमरो दाली रैथवा आर ले चमतो कनडप्पन

ले माय हाग रैदनि जाले रैथी ले रैथी मे कम

"टदन" गमकेत भरिया बटले हमरुँ अगन

-----रर्ग-१९-----

### करीअ-1

देखलौ माँस अँगना उगरेत सगना

देखलौ टोरेष्टिया पब जोठेत सगना



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

देखलौं हष्ट ककरो मोनलैत सगला

ककरो सुठक दोरैव तौनलैत सगला ।

## करीअ-2

नील लेल रिट माजम काजव करिया

कग नलैए अगम धरम गजोरिया

निश्चय अहाँ जलैत छी ठेना-ठांगव

भेन रैतारु छै तै गामक नरतुविया।

## करीअ-3

कखला रनि रिगफा टिकोव करै छै

सत्ता हाथ नगितहि हूफकाव भलै छै

लता रोष्टक लेन कतरौ कग धरै छै

कतहु अगम कतहु गयताव करै छै ।

## 1.) अकाल



टुप्पाहि बहैत छी

हवदमा रस स्रलैत छी-

लोकक रोजरै,

किदम-कहाँदम, अछिन्है,

रिग्न पौलीक रात,

उतवा-टोड़ १, थूकम-हज्जति,

हूमिक पंटेती, अफिक अछैयैती..... ।

रस देखैत बहैत छी ठूँकव-ठूँकव-

मावा-पिष्टी, अकबक कणैसी,

देवादि ततरावि, सासु-प्रतोहूक अछि वि,

थेतक दछि वि, रैरैहाक तियावि,

कलैत प्रतोहू आ प्रजति अमावि,

धधकैत लहस, लस-परिहास,



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०),

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

भोजक उल्लास, महाजन के त्रास..... ।

टोक पवहुक टाहक टूफ़ी,  
घुब तगहक कण्ठसुकी,  
टोरैमिया झूफ़ी,  
रैपौती रैतुर केव दंत,  
पुवथाक कीर्ति-सुंत,  
लहक सीगाण.....,  
रैस हवदम बहेत डी अकाशति,  
रैणजे रैकाण,  
किडु नहि रैजेत डी,  
टुप्पहि बहेत डी,  
रैमिक२ अकाण ।

## 2.) समयस रैवसे डे बुझी



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

सगसग रवस डै रूमी

डै नाटि बहन गवटुमी

सुनि के रौगक छैठकावी

सँसनीह करैंग अमावी । ।

रैगना छैकवाण नगौल

रैसन डन आस नगौल

रूम् भेलै जरावी ओकवा

भवि पोथ पेलके छैगवा । ।

लौआ केव भैठलैक टानी

रूम् जेना नुडस पातानी

घमि-घमि जोन पिजलैठै

खल खता पानि उंगडै डै । ।





बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

जखल चमकन बिजलौका

माकाँक्ष भेल घोषली डोका

केस्यो जेठो २ नागन कठमैती

केस्यो कबय गेल गटैती । ।

काँकोड़ रिन मँ रँहवायन

ओ नलौड कल अग्रतायन

टाँग्रव मँ मलन रँलनक

बटि-बटि केहन सजेनक । ।

छै सुव-सगल मुसवी

मोटे जे कोना के समवी

घब-दुआवि ओकव दहेलौ

बूनु अप्पणी खेत मे हँसलौ । ।



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

कैथो गार्मि बहन टोमामा

ककरो जेन थोन तमागो

हवथित छै थेत-पथाव

जगन, गलाड सभ धाव । ।

### 3.) निर्वन्ता के आरि भगवै । ।

करिगोछी मे हमरी जेरैग

कथो बातिभरि हमरी रैछरै

पाछो मथ गब हमरी सज्जै

सभरौ आगाँ हमरी रैछरै । ।

मटक मथ मे हमरी रैस्रै

सभरौ भाषा हमरी कवरै

बाबू भवथिन्ह हमरौ बहरै



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

रैठे संगहि कबलै-गदलै । ।

तगमा सभलै हमले छाली

हमले कनम रैस बहे आली

सभ करियौ हमले राह-राली

बहि कबलै त२ जेरै हम ठाली । ।

मिथिला-मैथिल हमर रैपौती

एँ गाव-उहिगाव हमले कूँठमैती

तगँ हमली कबलै गँटैती

हमले छी छनटे जेठलैती । ।

गढुआ सभ ल आगु आरैय

देखु, केयौ ल गान रैजारैय

केयौ ल कतौ कला अगारैय



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवमिह

रैम ठगवे सत जय-जय गारैय । ।

जागु मैथिल आरैहू जागु

हे गछिना सत आरु आगु

मिथिला-मैथिल मान रैटारु

निर्दल्ला के आरै भगारु । ।

#### 4.)हे, रूमनिये की ?

हे, रूमनिये की ?

हाग

हाग रैदलि गेलैए ।

आरै मिथिलाव-गढ़मिहाव,

गीक-रैजायके थनमिहाव,

मोछगव पोथी भुपेमिहाव,

कोला नरका रौत रैतैमिहाव,



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०),

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवमिह

आलोचक किंवा छप्पहि बहसिनाब,

सभक कोला योजब नहि छै ।

आरं योजब छैक ओकरे जे-

रंजब मे घुमथि,

मिट पब स्वतथि,

मागक धर कथथि,

टंदा उग्रथि,

अनका ब्रमथि,

गाय-गाय रूमथि,

लात-हकाब पुरथि,

मठ अकाम छुनथि,

गठ पत्र छुमथि,

टोक पब लेसथि,

अगना के सैतथि,



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

श्रुति सगवो भवसति,

मानुषीभिः

आथा-पी ले समवधि । ।

## हाथक

### 1.) नावहि नाव

अकलौदय काल

नील अकास

।

### 2.) गम्भीरी दानि

सूर्योदय-काल मेघ

एकहि वंग ।

### 3.) अथले आर्दी

अथले बाथल कथे



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

बिदेह के ?

#### 4.) रितले बाति

उंगले भोककरो

जगले आस ।

#### 5.) अगले कोआ

निगता छै कोगनी

गवती-भास ।

#### 6.) अरिया नाथ

जलोदीग सगरो

दालीक डाल ।

लेख



1.) ठाँहि-गठाँहि

जै कहलौ ककरो

जड़ते देह !

2.) भ२ गोन डेक

मवखार मखथ

मावहि मग ।

3.) एक भेन डे

रुद-रु-रुदावह

पैट एकात ।

4.) पिया बिदेशी





बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

अन्यथा उमिता

मिथिला-नारी ।

5.) रौप्यीक रौप

रौप्यीक रौप

किन्तु रव । !

6.) दिस देखाव

केरुण अतुल

खून-खुनामे ।

ए बचसाव अण मतिर [ggaj\\_endr\\_a@videha.com](mailto:ggaj_endr_a@videha.com) पव  
पठाउ ।



जगदानन्द मा मय



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवमिह

ग्राम पोस्ट- हरिप्रव दीर्घा, मधुबनी

## गद्य-१

देख कह मुंगरी रूतों रूठां डे

नाम ककरो गरीबक नहि सुनां डे

टाहि निर्धन कए नहि योगवा रौरा

पेठे भवि जाग सरे दीनक दरौं डे

मीठ भाषा रवथ पाँटे कते दै डे

जीत केँ राद लते सरे सुकां डे

घुम था था केँ रँगले लोकना गावा

आन दगड़ि सँ चमाडी रैड चरौं डे



भ्रष्ट लता घुमे रीएमडरनु मै  
एथला तक गवीरक मय रीष्टा छै

( रौहले-झुमोकिन, २९२२ १२२२ १२२२)

-----

गद्य-२

कान ले अगन देखै कोआ थिहावै  
कहू-कहू कोआ आहाँ मिथिला स्वावै

घोष तब कमियाँ कोठी तबहक माड  
मोष होगतो कहू कियो कोआ मिवावै



नागन आणि ज़ीरनक सिमाएरै कोना  
की ज़ीरनक भवि खड़न खड़ गज़ावरै

कहियो तँ रँसरै आ ककरो रँसाएरै  
भठैकैत सीथ कतैक आलो उँजावरै

गानि केखलो मल्ल गिमासलो कै गियेरै  
की रँनि नादान गवती गव ठँगावरै

(सबन रारिंक रँलव, रँ-१३.)

-----  
-----

गज़व-३



सतकै हय करि सनाय सत रूनेत अछि गदहा

सतकै गप्प हय अले छी सत कहैत अछि गदहा

सततवि गहन हाहाकार मन्त्र थाय गोन टाडा

अष्टाचार मै दुर्गि आङ्ग देशे चनरौत अछि गदहा

नरहरक हँसन भगव मै साधु करए करैछी

देखु गाँधी ऐंणी पहिब किछ कहलैत अछि गदहा

भगवा छेना पहिब-पहिब आँधि मै मौकै गिबटाङ्ग

धर्माचार रैनन रैनन धर्म रैटैत अछि गदहा

जंगन रैनन समाज मै, मोहित सँ भिजन धवती

मेव सगरो गडा गेलै टैन सँ सूतेत अछि गदहा



(सबन वार्षिक रैलव, रू-२०)

-----  
-----

### गद्य-४

हमर अनैके प्रीतक थिम्मा आर दुनियाँ रिसवत नहि

हग-हग तक लोकक मोन सँ अगल नाम छैत नहि

सूर्य टास केँ प्रेमानाग सँ अ दुनियाँ प्रकाशित अछि भेल

हूणकव संग रिस कथनहुँ अ दुनियाँ टमकत नहि

भोला शैक डमक रैजारीथि पावरी नाटेत अंगना



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

हृषिकेश दूरे के अन्धकार कथना श्रुति छत नहि

प्रश्न नकारिनि सगरो गोकुल गोरवधन परित उठा

रिषि बाधिका संग कथना हृषिकेश दूरे के अन्धकार कथना श्रुति छत नहि

हुन भौडा के प्रीतक थिम्सा सततवि रूत पवस भेलै

मय स्वर्गाक नाम रिषि प्रेम कथा और गमकत नहि

(सबन रात्रिक रूत, रू-२२)

ए बचाना अन्धकार मतिर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब  
पठाउ ।

बिदेह नृत्य अंक मिथिला कला संगीत



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



१. बाजनाथ मिश्र (चित्रमय मिथिला) २. डमेश  
मंडन (मिथिलाक रसपति/ मिथिलाक ज़ोर-जुलु/ मिथिलाक  
जिह्वा)



बाजनाथ मिश्र

चित्रमय मिथिला झागड शो

चित्रमय मिथिला

(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>)

२.





बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



उमेश मंडल

मिथिलाक रत्नपति स्नागड शो

मिथिलाक ज़र-जुब्बु स्नागड शो

मिथिलाक ज़िन्गी स्नागड शो

मिथिलाक रत्नपति/ मिथिलाक ज़र जुब्बु/ मिथिलाक ज़िन्गी  
(<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/> )

ए बच्चापन अपन मतिर [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब  
पठाउ ।



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बिदेह नृत्य अंक गद्य-पद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा) लेखक उदय शर्मा (मूल हिन्दीसँ  
मैथिलीमे अन्वराद रीति उपाय)

मोहनदास (मैथिली-देवनागरी)

मोहनदास (मैथिली-गिरीजाश्रम)

मोहनदास (मैथिली-ब्रैल)

२. छिन्नमस्ता- एता खेतमक हिन्दी उपायमक अशीता मा द्वारा  
मैथिली अन्वराद

छिन्नमस्ता

३. कलकत्ता दीर्घक (मूल लपानीसँ मैथिली अन्वराद लीपती कपी  
श्रीक आ ली श्री श्रीराम लोचन)

भगता लेखक देव-शर्मा

बीजाना प्रते



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



अमित शिरी

## बीव गखव

भगसा धव दिशि दोड़ननि रौआ  
अगल जलथग माँगननि रौआ

बीट आँगल ये डूँट पिठ १ नगोला  
डुवगला , डोनन खनननि रौआ

देखननि माँ के ठाँठ हाथ हेलेल  
छोष्ट हिसवि कोवा रैनननि रौआ

दादी एनथिल जेल रौँठी रौआ के  
दूध देख क रौँठी हेलननि रौआ

बारू खनथिल गिवटाग मोहारी  
हूँकको चाली मे जौद खननि रौआ

गौद गृह्ठा हाथी , देर मोठेव काव  
रौते मलजौ ले माँगननि रौआ

मंग ये जाएँ घुमे नए सकस  
"अमित" सँ चवि नहु जेननि रौआ

रौ-13



\*\*\*\*\*

सखी सरै गेन नागन डैक बेना छन  
छलै ली माग घुमै जेन मेना छन

कहै छन सबरतीया सज्जन डै सकस  
अरुव रौनवक देखै जेन खेना छन

कते डै तीड डोडै ली पकड आँडुव  
उठा जे अगन गोदी तखन मेना छन

म सौ पु पौ कबत रैड पीपली फुक्का  
गुडीया कीन दे सरै भवन ठेना छन

कल डै बुथ मिस्री देख नागन ली  
गवम कचरी कल अरुवली न केना छन

महाअन्न[1222 तीन रैव सरै पीतिमो]  
रैहले\_हज्ज

\*\*\*\*\*

अरुव उलठन पड़न नाव पव  
रैदवो रैमले चाव पव

मुस दोली गहुँम भवन घव  
कोगनी तन दै ताव पव



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

बादि पव गाय दै दुब डै  
नजब देल श्रवण ठाव पव

स्नागत जेन रौश्रा कए  
हुन झूँके ग्रथन हाव पव

भोव भेलै उठन बाजा यौ  
"अमित " रौश्रा चटन काव पव

\*दीर्घ \_रुद्र \_दीर्घ ३ रैव\*  
रैवले -रुद्रदायिक

\*\*\*\*\*

आग तावा केव नगरीसँ एथिण माँ  
अगल कोवा नष्ट द हमरा उठैथिण माँ

खेनरै माँ संग आ कसरै हँसरै  
पकड़ि आँडूव गाम-घर मे रूँतेथिण माँ

थाकि जेरै जखन भोजन कवा हमरा  
गारि जोड़ १ आँचक तब स्रुतेथिण माँ

बास कक्का के पक डैक मवथहिया  
स्वबज के रँकवी सँ हमरा रँचेथिण माँ

हमर सगी संग माँ के घुमै सर्कस  
आरि घर हमरो मिलाया न जेथिण माँ



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

कत सँ एते मेघ काबी ग अरैव मे  
“अशित” मल देवाग ये कथन एथिन माँ

यगनातन-यगनातन-यगनातन

2122-2122-1222

रहले-कनीर

\*\*\*\*\*

कोगली कहनके सुगाम  
हम रैड पौघ डी तौवाम

सुगा कहनके जूनि राज  
तोड़ि ये देरौ लोन रोड म

गाडी-रिबडी तू घुमे डली  
काबी कग देख ले एगाम

कोगली तुनकि क राजन  
मीठ राजे डी हम तौवाम

हम घुमे डी अप्पन मोल  
रान्हन बहे तू पिंजवाम

उठम-रैजड १, धका -रुकी  
खल-खलाम तेन पौवाम

मोव डी तखन कहननि  
ले नड तू अगल तेवाम



मानवमिह

बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सुगा "अमित" बास गले डै

सोथ ले कोगनी गलेयार

रर्प- 10

\*\*\*\*\*

माँछक चाँडव पाणिन दुब पातक थावी रैलरै

माँछक दुल्लि पव थीव बागल तबकावी रैलरै

बाँझक टिली कानो के दली लोषा फुलक दुवा हेते

बैनक चक्रवा सगरी के लेलना सँ पूवी रैलरै

बैसा के लोषे आनि मुठ-मुठ के गुजा-पाठ कवरै

बारी सँ एकवैगा माँलि फुमावि लेन साड़ १ रैलरै

लेव कवरै थुछा के बियाह थुछा या थुछै सजेरै

साजि एते बियाती बारी के नाठी के गाड़ १ रैलरै

ले डव माँछक के आग डुष्टी डै चन गीता खेनरै

आग "अमित" नाचरै-लोरे रैडका खेनाड़ १ रैलरै

रर्प -१६

\*\*\*\*\*

संग चन ले गिन क सरै खेन खेलेरै

एक दोसर के पकड़ि लेन देडेरै

कोगनी के गीत रैदव नटेरै हम



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

टाँस तावा धवि पहुँचि आग देखैरै

कागजक लेया रँगा हुन कमलक टन  
टन रँङ्गी पोथवि तमा नार लहेरै

दीप माँछि क गढ़ि क सरै देरैता गुजरै  
लोपि अबहुन खेत मे टन पछै एरै

माँछि लेछैएरै आ माँस धवि खेनरै  
"अमित" गढ़रै मल सँ रँङ्का त रँसि जेरै

हागनातुन-हागनातुन-महागुलन  
रँहने-कवीरै

\*\*\*\*\*

लौखा एहिठाम काले डै  
माँ जनखग रँसैरै डै

बारी आनननि छँफना  
बारी छँनी रँसैरै डै

कक्का नगारै डुधि मानी  
काकीयो अगला नीपे डै

रँनहा रानी पानि भले  
जूसमरो देवा फारै डै

पागा डुधि पवदेमे मे





बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

प्रिण-प्रिण ह्योष रोजे डे

दीदी पठ गोन गकुन  
सोषु तेया खेत जोते डे

मरै नागन डे काज मे  
ते "अमित" रौखा काले डे

रर्ष-९

\*\*\*\*\*

बोले-बोले रूर्गा रोजे डे  
सोषा रौखा के डुठारै डे

बरैकी रौडी दुध देते  
तीरो कका दुध दुँ डे

माँ देननि दुमनि भवि  
गर्ध-गर्ध पिरे डे

दुये दाँत के हँस रौखा  
आ हगहनियाँ काँटे डे

बबन कठौत पानि मे  
रौखा नहाग डे कुँदे डे

पाँडव काजव ठोप्पा  
बर कपड । चमले डे



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

हाथी घोड़ा । श्री मृगमृगा  
"अगित" रौश्या रौजरे डै

रर्ष-9

\*\*\*\*\*

डबकडोवि मे मृगमृगा रौड मीठ रौजरे डै  
जुता मे नागन पिपछ गौ गौ बाग न्नारै डै

तीन ठंगा ग्वरुमा गेदे रौश्या घुमे अगना  
रौकरी के रौटा देखिटे कुदि कुदि क नाटे डै

भाव रना नाट देखारै रौश्या के दनाग पव  
दू ठाँग पव नाटन भाव रौओ नाटि हँस डै

भवि कठैरी दुध पिरै जेए ठग ध काले डै  
जखन पुठौ नाम त माएक नाम रौतरै डै

नाटेत बहेए सर ननना एहि सँभाव मे  
रौश्या के हँसी देख "अगित" कनम चनारै डै

रर्ष-17

\*\*\*\*\*

आग लौना\* मे माड चन मावरै कल  
जान मडवदानी रना फेरै कल

रौत ठाँगा डै खसन गाडी भवन डै



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

उकवो मोवी भवि क टन आनर कल

माहु छैनी थाएर लेखी भात लो  
डोनपाती टन मंग ये खेनर कल

छेष्ट लोआ डी पौय मन छै मोट लो  
आर कथला मनाव ले रैष्टर कल

एक डी हम सर एक थारी ये बहर  
" अमित " नरका मिथिला अंगन मांगर कल

हागनातन-क्रुतुह गव्वन-क्रुतुह गव्वन  
2122-2212-2212  
रैहले-हमीम

\*लोना(पोथरि के नाम)

\*\*\*\*\*

मुगले आग रियाह छेते  
मेना बानी कमियाँ रैगले

पोड । रयली ठुव वसग्रमा  
पुवी मङ्गी पनाडु रैगले

कोगली रैहिन गीत गोते  
जुगनु मंगी रैरैर जनेते

रैदव मामा ठोन रैजेते



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवमिह

मोव चाटी सुमि क नाचते

हाथी दादा नचका न जेते

खबला थुरै रंग होइते

जंगल के मरै रबियाती

बानू भैया मरै के रैसैते

मेव देते आशीष "अमित"

गीदव मरै मने पछ ते

सबन रार्कि रँहव

रर्ष-10

\*\*\*\*\*8

मथी मरै चन तोड़रै आगके ली

सहेदा गाड़गव हकैरै मागके ली

रैह ठे परन केहन मीठगव ठे मल

तगानक बौद जड़रै ठे दामके ली

कल जे रँवह रौतन मे गामि भवि जे

कवरै रणभोज ठे रँचका जामके ली

महउते मावते घोडा जखन कौआ

ठके ठे हँकि ठेगा नर नामके ली

अगल मोबी भवन हेते माँममे ली

"अमित" कतवा कते हेते दामके ली



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,  
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

महागान-महागान-महागान  
1222-1222-2122  
रहने-कबीर-

\*\*\*\*\*

गीत गव छै रोग रोगी चनन गयुन  
नान गियव छैस चमके भवन गयुन

माथ छैपी छैयै मे छै नैच नैकन  
दाग सँगै चनन मोल वनन गयुन

थेन नैहो नीक थेनै छै रोगी  
रक्षा छै मेदनन थेनक रैनन गयुन

छि पाड़ मे नली छै मोन उकव  
गीत सगड़ । गव त थुरै नैनन गयुन

ले गहाड़ । गठरै ले सीथरै ककहवा  
आरै छै कण्ठरै सीथा वहन गयुन

भेन डुष्टी सँग हग्न घव चनन उ  
नाम जहिया "अमित" अगला निथन गयुन  
महागान  
2122 तीन रैव  
रहने-वनन

\*\*\*\*\*



माँ धवा माँ चान छै  
सूर्य दादा ले आन छै  
छै रिनाङ मोंमी चतुव  
लेत मुमा के जान छै  
अरुव खेहाले छेव के  
उडन छेवक त' प्राण छै  
आम सरेँ रँगवा खेनले  
डाँठि तौडे मीतान छै  
चनन हाथी जी छेन छै  
मूठ रँडका छै कान छै  
रौघ छै हम सरेँ छी तखन  
मेव जंगान के मोन छै  
हांगनातन-रुतुहांगन  
2122-2212  
दोक कका दोक ककी  
देखु रौखा डीले राँगी  
दाँतो काँटे केशो घाँटे  
माले छै जल ओ नारी  
182



टिनी लेटे टुवा लेटे  
डानी लेए माँतो छाडी

दीदी डी ताले लो लोखा  
ताले लेए कीले बाखी

लोवा मे तू शोले डे लो  
माले खेले मंगे लेडी

आठ था दीर्घ सर पाति मे

अमित मिश्र

\*\*\*\*\*

रौन गज्जन

हुमन कटोरी डे मीठगव डे खीव  
सुखदगव डे डोना डोक मे डन जीव

कमल किए मोना आरि खेले मंग  
जन्दी टनु खा जाएत कोखा खीव

छाडी न गफुलो टनर खेनर पठर  
ओतो अहाँ मंग लणक नागन डीड

डे नान कक्काके नान पाकन आम  
जाह्मन खसन कावी , भेन कावी टीव

दिनकर अहाँ टला बाग आ नक्का



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

जीतरे अहाँ माँक आँखि माक तीव

सुस्तुह गङ्गा-महङ्गात-महङ्गात

2212-2221-2221

रौले- सनीम

अमित मिश्र

\*\*\*\*\*8

रौले गङ्गा

रौले गङ्गा रौले कथन

रौले जखन मेघक रमन

नाटे मोर रौले टोल

गौले कोकनी नर भजन

हविसर गाढ फुलाएत

देता रौले दिनकर जखन

खवला तखन जीतत दौड

आनस जोडि काजे मगन

दे एवोगलनक आनि

पति निथ निथ त दासा अगन

धवती के रौलेनि वाम

भोले भोले करियौ नमन

आँखि पकडि रौले डेग

बाथु "अमित" थुजले नमन





महर्षिनाम्(2221} दु रौव सरौ पाँतिमे

अगित शिरी

\*\*\*\*\*

रौव गज्ज

उडन सरौठा टिडेगाँ गाढगव ह्वैसँ  
जौ रौसन चावगव चारो खसन च्वैसँ

हमव गाडी नतामक डाठि आ सगरी  
चले छै तेज अगल झूठ कले ह्वैसँ

गिनासक दुव मिमियो नीक ले नाछो  
भवन तौना दली आँडुव नगा स्रवैसँ

अगल रौछी अगल लीया त ता बैया  
अगल सरौवा कले अगलगव ले ह्वैसँ

यष्टका ह्वैले जौम जौम जौम  
जडे छै डुबडुबी डुब डु डुबैसँ

महर्षिनाम्

1222 तीन रौव

रौवले हज्ज

अगित शिरी



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

\*\*\*\*\*

मानवीय

रौत गजल

काबी महिम ले दुध उल्लाव छै कते  
तबि मोन पाबी पीरि दुखै छै कते

बसगव जिनैरी गवम नवमे नवम छै  
नङ्ग रैनन रैननक रैनन छै कते

छै पात हरियर फुल शोभित गाढ छै  
जामन निटी आमक ग मज्जा छै कते

दु एक दु आ चाबि दुनी आठ छै  
अम्मी कते लै जानि सतब छै कते

भाव रैन देथारै सरैके नाँट लै  
सठ आनि छुडपे दोड टकर छै कते

रौत गजल

याँछे गहिरै बुखने हम बहरै लै  
माग लै हम गयुन जेरै कवरै लै

महिम पोसरै सरै दिस टवाएँ माँसक  
रैन ओकव पीठगव पोथी पठरै लै

खेत जेतै कोबरै पछैयै मोनस  
मनु पानिक धावा जकाँ हम रैनै लै



मानवीय

बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

टाँष के गुँजे छै सगव लोक जग मे  
नाम चमकारौ जेन चला रैरै छै

झीन जे खेजौना हमर ठोम डमक  
आरै हम काँगी कनम रिन ले बहरै छै

यागनातुन-कृतुयागनातुन-यागनातुन  
2122-2212-2122  
रैहले-थहरीय

अमिात मिाि

\*\*\*\*\*

रौन गज्ज

बाणी मेघ सगरो जल पठाएत ना  
रौश्रा हमर खेतत आ नहएत ना

छनटे छेह पामिक रीट सडकपर ना  
ते पब कागजक लेया रैहएत ना

देहसँ घाम टुरै बौद छै काम ना  
रीठैर आरै तल के ले रैहएत ना

बोगत धाव रैसन खेत के आडि ना  
कादो कबत पालो ह'ब छनएत ना

हेनत मान भवि सौखरि भवन पामि ना  
रौश्रा "अमिात" माँडक मोव थाएत ना



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

महाभारत-महाभारत-महाभारत

2221-2221-2212

रहने-करवी

अति शि

&&&&&&&&&&&&&

रान गजन

पाकन गिब गिब केवा

थाएत सर मीठ पेट ।

खाजा मिठाई जिलेरी

रौखा भवन डे चर्चवा

मूह मोव बाजाक सुमव

टमा नजा गेन देवा

डाँक त घुँघरु डणकलौ

लेनक जखन घबक हवा

माएक ओ कवत मेरी

हाडत "अति" खुर देवा

महाभारत-महाभारत

2212-2122

रहने मज्जमा



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

## बैराज लोकनि द्वारा स्वकीय श्लोक

१. प्रातः काल ज्योतिर्गर्भ (सूर्योदयक एक घंटा पहिल) सर्वप्रथम  
अपन दुनु हाथ देखबौक छली, आ ज श्लोक रजबौक छली ।

कवाथे रसते नक्षीः कवमल सबसती ।

कवमले हितो ज्योति प्रभाते कवदर्शनम् ॥

कवक आगाँ नक्षी रसते छथि, कवक मयमे सबसती, कवक  
मुनमे ज्योति हित छथि । भोवमे ताहि द्वाले कवक दर्शन  
कवबौक थीक ।

२. संध्या काल दीप जलबौक काल-

दीपमले हितो ज्योति दीपमल जलदर्शनः ।

दीपाथे शिखरः प्राकृतः संध्याज्योतिर्मोक्षद्वारे ॥

दीपक मुन भागमे ज्योति, दीपक मयभागमे जलदर्शन (शिखर) आ  
दीपक अग्र भागमे शिखर हित छथि । हे संध्याज्योति ! अहाँकेँ  
नमस्कार ।

३. स्वतंत्र काल-

वार्ग कर्ण हनुमन्त रौनतेय बृकोदकम् ।

शेखर सः सार्वभौम दुःस्वप्नक्षय नृपति ॥

जे सब दिन स्वतंत्राँ पहिल वाम कमलपद्म, हनुमान्, गण्ड  
आ २ तीमक सवण करैत छथि, हनुमन्त दुःस्वप्न नष्ट भऽ जागत  
छथि ।



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवसिंह

४. नहैरौक समय-

गर्भं च यद्गते तैर गोदारवि सब्रति ।

नर्मदे सिङ्गु कारेवि जल्लेसिन् सन्निधिं रुक ॥

हे गर्गा, यद्गता, गोदारवी, सब्रती, नर्मदा, सिङ्गु आर  
कारेवी बाव । एहि जलमे अपन सन्निधि दिअ ।

३. उतवै समुद्रद्वय हिमाद्रश्चर दक्षिणम् ।

वर्यं तत् भावतं नाम भावती यत् सप्रतिः ॥

समुद्रक उतवसे आर हिमाद्रक दक्षिणसे भावत अछि आर  
उतका सप्रति भावती कहलैत छथि ।

३. अहना दीपदी सीता तावा मन्दोदरी तथा ।

पथकं वा सन्निधिं महापातकशिकम् ॥

जे सत दिन अहना, दीपदी, सीता, तावा आर मन्दोदरी, एहि  
पाँच सन्निधि-स्त्रीक सवां करैत छथि, हुनकर सत पाप नष्ट भै  
जागत छथि ।

१. अग्निथोमा रैनिर्वासो हनुमन्त रितीयाः ।

प्रपः पवश्वामश्च सप्रुते चिब्रुगिरिणः ॥

अग्निथोमा, रैनि, वास, हनुमान्, रितीया, प्रपाचार्य आर पवश्वाम-  
आ सत ठाँ चिब्रुगिरी कहलैत छथि ।

+साते भरत स्वधीता देरी शिखर रासिनी



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

उपेक्ष तपसा लुट्टा यया पशुपतिः पतिः ।

सिद्धिः साक्षात् सतामस्तु प्रसादास्तु धूर्जटेः

जान्त्रिकोपेक्षतेषु यन्त्रिणि शेषिनः कला ॥

६. रौद्राक्ष जगदामन्द न मे रौद्रा सबन्धती ।

अपूर्णे पंचमे रश्मि रश्मिणि जगत्त्रयम् ॥

१०. दूरस्थित मन्त्रेश्वर यजुर्देव अध्याय २२, मंत्र २२)

आ अक्षरिण्यु प्रजापतिवन्द्यः । निभोक्तता देवताः ।

स्वाधुक्तेतिष्ठन्दः । यद्वज्रः स्वः ॥

आ अक्षरिण्यु प्रजापतिवन्द्यः । निभोक्तता देवताः ।

शुभेऽप्यरातिराधी महावधो जायता दोग्ध्री क्षैरोत्तमधराणां

मष्टिः प्रवक्षिष्योरा जिष्णु वपेष्टाः सन्नेष्टो हराण्य यजमान्य

रौद्रो जायता निकामे-निकामे नः पर्जन्या रयितु हवराण्य

नन्वयवः पटुता योषोक्तमो नः कम्पताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सन्तु पूर्णः सन्तु मन्त्रार्थः । शिवार्थः

बुद्धिनामोऽस्तु चित्तामयस्तु ।

ॐ दीर्घायै नमः । ॐ सौभाग्यरती नमः ।

हे भगवान् । अग्न देवमे सुयोग्य आ मरुत विद्यार्थी उपेक्ष

होथि, आ शुभके नाम कएनिहार सैनिक उपेक्ष होथि । अग्न

देशिक गाय शुभ दुध दय रौद्रा, रौद्रा भाव रहन कवये सक्क

होथि आ योद्धा । इवित कपे दोगय रौद्रा होथि । मन्त्रार्थ

नगवक लभ्य कवरामे सक्क होथि आ हरक सतामे उपेक्ष



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

भाषण देरैयरीना आ लहलह देरौमे सफ़म होथि । अपन  
देशेमे जखन आरथक होय रया होए आ ठुयधिक-रूँठी सरदा  
परिपक्व होगत बहए । एरै ह्येमे सब तबहै हमरा सबक  
कन्या होए । शत्रुक रूँछिक नानि होए आ मित्रक उदय  
होए ॥

मन्याके कोन बनुक गडा कबरौक छाही तकब रनि एहि मनेमे  
कएन गेल अछि ।

एहिमे राटकगुणामातङ्काव अछि ।

अग्रय-

ब्रह्म - बिद्या आदि ग्राम परिपूर्ण ब्रह्म

बाष्पे - देशेमे

ब्रह्मरन्-ब्रह्म बिद्याक तेजस हकत

आ जागत- उपेक्ष होए

बाज्यः - बाजा

शुभे- बिना डब रना

अग्रय- रान छेरौमे निष्ठा

रतिराधी-शत्रुके ताका दय रना

महाबन्धो-पेय बथ रना रीव





बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

दोस्त्री-कायना(दुव पूर्ण कवए रानी)

पेखरोठिठराणां: पेख-रो रा राणी रोठिठरा- पेघ रैवद

नां: -आं: -हवित

सहि:-योड ।

पुवर्णिरोरा- पुवर्णि- रावरावले धावा कवए रानी रोरा-रनी

जिष्टु-शेकुले जीतए रानी

वपेष्टा:-वथ पव हिव

सुतेष्टा-उत्तम सतामे

हराश-हरा जेहन

गजमानश-वाजाक बाजामे

रीना-शेकुले पवाजित कवएरना

निकामे-निकामे-निशचयकतु कार्गमे

न:-हमर सतक

पुर्ज्या-मेघ

रयितु-रया हेध

फलरवा-उत्तम फल रानी



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

उपन्यास:- उपनि:

पाठ्यपुत्र:- पाक

योगेश्वर-अनन्त नन्त कलैरक हेतु कनन जेन योगक वक्ता

न:-हमरा सतक हेतु

कम्पताम्-समर्थ होए

त्रिभिन्नक अग्रवाद- हे अग्र, हमर राज्यामे अग्र शीक धार्मिक  
रिप्या रीना, बाज्य-रीव, तीव्रदज, दुध दए रानी गाय, दोगय रीना  
जन्तु, उग्रमी शारी होथि । पार्जन्य आरथकता पडना पब रया  
देथि, फल देय रीना गाछ पाक, हम सत संपत्ति  
अर्जित/संवर्धित करी ।

## 8.M DEHA FOR NON RESIDENTS

### 8.1 to 8.3 MAITHILI LITERATURE IN ENGLISH

8.1.1.The Comet -GAJENDRA THAKUR

translated by Jyoti Jha chaudhary

8.1.2.The Science of Words - GAJENDRA THAKUR

translated by the author himself

8.1.3.On the dice-board of the millennium-

GAJENDRA THAKUR translated by Jyoti Jha

chaudhary



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

8.1.4.NAAGPHANS (I N ENGLI SH)- SHEFALI KA

VERMA translated by Dr. Rajiv Kumar Verma  
and Dr. Jaya Verma

विदेह नूतन अंक भाषागत बचना-लेखन

Input : (कोशिकमे देवनागरी, मिथिलाक्षर किंवा फोनेटिक-  
रोमनमे णेगण कर । Input in Devanagari,  
Mthilakshara or Phonetic-Roman.)

Output : (परिणाम देवनागरी, मिथिलाक्षर  
आ फोनेटिक-रोमन/ रोमनमे । Result in  
Devanagari, Mthilakshara and Phonetic-  
Roman/ Roman.)

☒ English to Maithili

☐ Maithili to English



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ग्लिनि-मैथिली-कोय / मैथिली-ग्लिनि-कोय प्रोजेक्टके आगु  
रैद डि, अगन सुमार आ योगदान ज-मेन द्वारा  
[ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पठाउ ।

बिदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-मैथिली कोय (गैबल्लेपब  
पहिन रैव सर्च-डिक्शनरी) एम.एस. एस.क्यू.एन. सर्व आधारित -  
Based on ms-sql server Maithili-English  
and English-Maithili Dictionary.

१.भावत आ लपामक मैथिली भाषा-लेखनिक लेखन द्वारा  
रैनाउव मानक गेदी आ २.मैथिलीमे भाषा संपादन पाठ्यक्रम

१.लपाम आ भावतक मैथिली भाषा-लेखनिक लेखन द्वारा  
रैनाउव मानक गेदी

१.१. लपामक मैथिली भाषा लेखनिक लेखन द्वारा रैनाउव  
मानक उठाव आ लेखन गेदी

(भाषाशास्त्री डा. बागारताव गान्धरक धाकाके पूर्ण कपसँ सञ्च न२  
निर्धारित)

मैथिलीमे उठाव तथा लेखन

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षराव: पञ्चमाक्षरानुसार ७, ए३, १, ष एरै म  
अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अक्षराव शिष्टक अक्षरमे जाहि रक्षक  
अक्षर बहैत अछि ओही रक्षक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-  
अक्षर (क रक्षक बहैरक कावणे अक्षरमे ७ आएन अछि । )  
पञ्च (च रक्षक बहैरक कावणे अक्षरमे ए३ आएन अछि । )  
खण्ड (छ रक्षक बहैरक कावणे अक्षरमे १ आएन अछि । )  
सञ्चि (त रक्षक बहैरक कावणे अक्षरमे ष आएन अछि । )  
खन्ध (प रक्षक बहैरक कावणे अक्षरमे म आएन अछि । )



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

उपराध रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाङ्कक  
रैदनामे अधिकनि जगहगव अस्त्रावक प्रयोग देखन जागछ ।  
जेना- अक, पट, थंड, मरि, थंड आदि । राकवारिद पडित  
गोरिन्द माक कहै छनि जे करखा, टरखा आ ठरखामँ पूर्  
अस्त्राव निखन जख तथी तरखा आ परखामँ पूर् पञ्चमाङ्कले  
निखन जाए । जेना- अक, टटन, अडा, अत्रु तथा कम्पन ।  
झुदा हिन्दीक गिकठ बहन आधुनिक लेखक एहि रीतकेँ नहि  
मालैत छनि । ओ लोकनि अत्रु आ कम्पनक जगहगव सेहो अत  
आ कम्पन निखेत देखन जागत छनि ।

नरीन पछति किछु स्वरिवाजक अरथु डेक । किछक तँ एहिमे  
समय आ स्थानक रैदत होगत डेक । झुदा कतोक रैव  
हनुलेखन रा झुदामे अस्त्रावक डेठ सन रिन्दु स्पष्ट नहि  
लेनामँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि ।  
अस्त्रावक प्रयोगमे उटाका-दोयक सम्भारना सेहो ततरै देखन  
जागत अछि । एतदर्थ कमँ न२ क२ परखा धरि पञ्चमाङ्कलेक  
प्रयोग कवरै उचित अछि । यमँ न२ क२ उ धरि अस्त्रावक  
सम्भ अस्त्रावक प्रयोग कवरौमे कतहु कोना रिवाद नहि देखन  
जागछ ।

२. ठ आ त : ठक उटावण ~ व ह जकाँ होगत अछि । अतः  
जत२ ~ व ह क उटावण हो उत२ मात्र ठ निखन जख । आन  
ठाम खाली ठ निखन जखरौक छली । जेना-  
ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेडआ, ठम्, ठेवी, ठाकनि, ठाठ  
आदि ।

ठ = गढाग, रैठरै, गठरै, मठरै, रूठरौ, माँठ, गाठ, बीठ, टाँठ,  
मीठ, पीठ आदि ।

उपराध मिट, सतकेँ देखनामँ ज स्पष्ट होगत अछि जे  
माधवगता मिटिक शुकमे ठ आ मध तथी अत्रुमे ठ अरौत



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अब्धि । ओह निसय ड ओ डक सन्दर्भ सेहो नागु होगत  
अब्धि ।

३.२ ओ रँ : मैथिलीमे “र”क उँचावण रँ कएन जागत अब्धि,  
झुदा ओकवा रँ कएमे नहि लिखन जखरौक चाली । जेना-  
उँचावण : रँखनाथ, रँद्या, रँर, देरँता, रँरु, रँरि, रँरुदना  
आदि । एहि सभक स्थापन एमणि: रँखनाथ, रँद्या, रँर, देरँता,  
रँरु, रँरि, रँरुदना लिखरौक चाली । सामान्यतया र उँचावणक लेन  
ओ प्रयोग कएन जागत अब्धि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४.५ ओ ज : कतहू-कतहू “ज”क उँचावण “ज”जकाँ करैत  
देखन जागत अब्धि, झुदा ओकवा ज नहि लिखरौक चाली ।  
उँचावणमे यरु, जदि, जझुना, जुग, जारँत, जोगी, जदु, जम  
आदि कहन जखरँना शैर्, सभकेँ एमणि: यरु, यदि, यझुना, यग,  
यारत, योगी, यदु, यम लिखरौक चाली ।

३.१ ओ य : मैथिलीक रँतनीमे ए ओ य दुनु लिखन जागत  
अब्धि ।

प्राचीन रँतनी- कएन, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि ।  
नरीन रँतनी- कयन, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।  
सामान्यतया शैर्क शुकमे ए मात्र अरँत अब्धि । जेना एहि, एना,  
एकव, एहण आदि । एहि शैर्, सभक स्थापन नहि, यना, यकव,  
यहण आदि प्रयोग नहि कवरौक चाली । यद्यपि मैथिलीभायी  
थाक सहित किछु जातिमे शैर्क आवस्थामे “ए”केँ य कहि  
उँचावण कएन जागत अब्धि ।

ए ओ “य”क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीन पञ्चतक अक्षरक कवरँ  
उँपग्रज मानि एहि पञ्चकमे ओकर प्रयोग कएन गेल अब्धि ।  
किएक तँ दुनुक लेखनमे कोना सहजता ओ दुकरताक रँत नहि  
अब्धि । ओ मैथिलीक सरँसाधारक उँचावण-शैली यक अपेक्षा एस  
रँसी निकट छैक । थाम क२ कएन, हएँ आदि कतिपय शैर्केँ



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवविज्ञान

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X, VIDEHA

लेख, लेखी आदि कथमे कतहु-कतहु लिखल जाएँ सेहो “ए”क  
प्रयोगले लेखी समीचीन प्रमाणित करैत अछि ।

३. हि, हु तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पत्रिकावमे  
कोला रातपव रैन दैत कान शिद्धक पाछाँ हि, हु नगाउन  
जागत छैक । जेना- हुनकहि, अगनहु, ओकवहु, तकौनहि,  
छेष्टहि, आनहु आदि । ह्रदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपव  
एकाव एरै हुक स्थानपव ओकावक प्रयोग करैत देखल जागत  
अछि । जेना- हुनके, अगला, तकौले, छेष्ट, आला आदि ।

१. य तथा थ : मैथिली भाषामे अधिकशितः यक उच्चारण थ  
नोगत अछि । जेना- यडल (थडल), योडमी (थोडमी),  
यष्टकोण (थष्टकोण), वृषेश (वृथेश), सन्तुय (सन्तुथ) आदि ।

+ ध्वनि-लोग : निम्नलिखित अवस्थामे शिद्धसँ ध्वनि-लोग भऽ जागत  
अछि:

(क) फिनाग्रयी प्रत्य अगमे य रा ए वृत्त भऽ जागत अछि ।

ओहिमे सँ पहिल एक उच्चारण दीर्घ भऽ जागत अछि । ओकव  
आगाँ लोग-सूचक छि रा रिकारी (१ / २) नगाउन जागछ ।

जेना-

पूर्व कप : पठए (पठय) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय)  
पडतौक ।

अपूर्व कप : पठ गेलाह, क लेल, उठ पडतौक ।

पठय गेलाह, कय लेल, उठय पडतौक ।

(ख) पूर्वकालिक प्रत्य आग (आए) प्रत्यमे य (ए) वृत्त भऽ

जागछ, ह्रदा लोग-सूचक रिकारी नहि नगाउन जागछ । जेना-

पूर्व कप : थाए (य) गेल, पठाए (ए) देरै, नहाए (य)

अएलाह ।

अपूर्व कप : था गेल, पठा देरै, नहा अएलाह ।



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवविज्ञान

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

(ग) स्त्री प्रत्यय एक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीन्मध्ये  
ब्रह्म भन्ना जागत अछि । जेना-

पूर्ण कर्ण : दोसरि मानिनि छनि गेलि ।

अपूर्ण कर्ण : दोसर मानिनि छनि गेल ।

(घ) वर्तमान प्रदत्तक अन्तिम त ब्रह्म भन्ना जागत अछि । जेना-

पूर्ण कर्ण : गठित अछि, रोजित अछि, गलित अछि ।

अपूर्ण कर्ण : गठि अछि, रोजि अछि, गलि अछि ।

(ङ) क्रियापदक अरमाण एक, उक्त, एक तथा हीकमे ब्रह्म भन्ना  
जागत अछि । जेना-

पूर्ण कर्ण : छियोक, छियेक, छलीक, छोक, छैक, अरितेक,  
होएक ।

अपूर्ण कर्ण : छियो, छियो, छली, छो, छै, अरिते, होग ।

(च) क्रियापदीय प्रत्यय ह, ह् तथा हकारक लोप भन्ना जागत ।

जेना-

पूर्ण कर्ण : छहि, कहनि, कहनहुँ, गोनह, नहि ।

अपूर्ण कर्ण : छनि, कहनि, कहनौ, गोन, नग, नगि, नै ।

६. ध्वनि स्थानान्तरण : कोला-कोला स्वर-ध्वनि अर्थात् जगहसँ छुटि  
कऽ दोसर ठाम छनि जागत अछि । खस कऽ क्षय ग आ उक्त  
संयोजनमे ग रौत नागु होगत अछि । मैथिलीकवण भन्ना गेल  
शेदक मया रा अन्तमे जौ क्षय ग रा उ आरौ त ओकर ध्वनि  
स्थानान्तरित भन्ना एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना-  
गेलि (मेगेल), गानि (गागेल), दालि (दागेल), माष्टि (मागष्टि),  
काढ (काउढ), मास (माउस) आदि । ह्रस्व तन्मे शेद, सभमे ग  
निश्चय नागु नहि होगत अछि । जेना- बगिर्क बगम आ  
स्वर्णर्क स्वर्णस नहि कहल जा सकैत अछि ।

१०. ह्रस्व ( ) क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया ह्रस्व ( ) क  
आवृत्तता नहि होगत अछि । कवण जे शेदक अन्तमे अ  
उच्चारण नहि होगत अछि । ह्रस्व संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना





विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्करण, ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिलीमे आधुनिक (तस्मा) शैली, सभमे हननु प्रयोग कएन जागत  
अछि । एहि पौथीमे सामाजिकता सम्पूर्ण शैलीकेँ मैथिली भाषा  
संस्कृति निश्चय अस्माक हननु रितीन बाखन गेन अछि । अद्भुत  
साहित्य संस्कृति प्रयोजक जेन अस्माक स्थापन कतहु-कतहु  
हननु देन गेन अछि । प्रस्तुत पौथीमे मैथिली लेखक प्राचीन  
आ नवीन दुनू शैलीक सभन आ समीक्षण पक्ष सभकेँ समेटि कए  
रर्षि-रिचार्ज कएन गेन अछि । स्थापन आ समयमे रचितक सभहि  
हननु-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसेँ सेहो सभन होरहरना हिस्सा  
रर्षि-रिचार्ज गिनाएन गेन अछि । रतिमान समयमे मैथिली  
मातृभाषी पर्यस्तकेँ आन भाषाक माध्यमसेँ मैथिलीक उन्नति  
पढि बहन परिश्रममे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव  
धान देन गेन अछि । तखन मैथिली भाषाक मुन विशेषता सभ  
कथित नहि होगक, ताहू दिस लेखक-संस्करण सभकेँ अछि ।  
प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक कहने छनि जे  
सभनतक अनुसंधानमे एहन अनुसंधान किछहु ल आरंभ देरीक चाली  
जे भाषाक विशेषता छहिये पढि जाए ।  
-(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक धारणाकेँ पूर्ण रूपसेँ सज्ज  
नए निर्धारित)

## १.२. मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-नैति

१. जे शैली, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसेँ आग धरि जाहि  
रतिनीमे प्रचलित अछि, से सामाजिक: तहि रतिनीमे लिखन  
जाय- उद्देश्यार्थ-

### ग्राम

एथन

ठास

जकब, तकब



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

बिदेह, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवविज्ञान

तमिकव

अभि

अग्रह

अथन, अथनि, एथन, अथनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकव, तेकव

तिनकव। (रैकपिक कपेँ ग्राह)

अड, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कपेँ रैकपिकतया अगनाउन जाय:  
तय गेन, तय गेन रा तय गेन। जा बहन अडि, जाय बहन  
अडि, जाए बहन अडि। कव गेनाह, रा कवय गेनाह रा कवए  
गेनाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखन जाय सकैत  
अडि यथा कहननि रा कहनहि।

४. 'अ' तथा 'उ' ततय लिखन जाय जत स्पष्टतः 'अ' तथा  
'उ' सदृश उच्चारण भेल हो। यथा- देखेत, डलैक, रौआ,  
लौक गरादि।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द, एहि कपेँ अग्रह होयत: जेह,  
सह, गह, उह, लोह तथा देह।

६. ह्रस्व अकारांत शब्दमे 'अ' के वृत्त कवरि सामान्यतः अग्रह  
थिक। यथा- ग्राह देखि आरह, मानिनि गेनि (मह्यय मात्रमे)।

७. स्वतंत्र रूप 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चारण आदिमे त  
यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकपिक कपेँ



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

‘ए’ रा ‘य’ लिखन जाय । यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा  
अएनाह, जाय रा ज़ाए गलादि ।

४. उच्चारणमे दु स्वरक रीट जे ‘य’ ध्वनि स्रतः आरि जागत  
अछि तकरा लेखमे स्थान ऐकल्पिक कएने देन जाय । यथा-  
यीआ, अठेआ, रिआह, रा धीआ, अठेआ, रिआह ।

५. सांख्यिक स्रतत स्वरक स्थान यथार्थतः ‘ए’ लिखन जाय रा  
सांख्यिक स्वर । यथा:- मैएग, कनिएग, किवतनिएग रा मैआँ,  
कनिआँ, किवतनिआँ ।

१०. कावकक रिभक्तिक निम्नलिखित कए ग्राह्य:- हाथकेँ, हाथसँ,  
हाथेँ, हाथक, हाथमे । ‘मे’ मे अस्वभाव सरिआ लज्जा धिक ।  
‘क’ क ऐकल्पिक कए ‘केव’ बाखन जा सकैत अछि ।

११. पुरिकानिक प्रियागदक रौद ‘कय’ रा ‘कए’ अस्वभाव ऐकल्पिक  
कएने नगाउन जा सकैत अछि । यथा:- देखि कय रा देखि  
कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गलादि लिखन जाय ।

१३. अर्छि न’ ओ अर्छि न’ क रौदना अस्वभाव नहि लिखन जाय,  
किंतु भागक स्रविधार्थ अर्छि ‘ओ’, ‘ए’, तथा ‘न’ क रौदना  
अस्वभावो लिखन जा सकैत अछि । यथा:- अर्छि, रा अर्क, अखन  
रा अछन, कर्छ रा कँछ ।

१४. हनत छि निश्चयतः नगाउन जाय, किंतु रिभक्तिक संग  
अकावांत प्रयोग कएन जाय । यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सब एकन कावक छि मोहमे स्रष्टा क लिखन जाय, हष्टा



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

क नहि, सयं उ रिबडिक हेतु हवाक निखन जाय, यथा यव  
पवक ।

१७. अस्मिन्मिककेँ छन्दरिन्दू द्वावा राउ कयन जाय । पर्वत  
रुद्राक सुविधार्थ हि समाज जठन मात्रागव अस्मिन्मिकक प्रयोग  
छन्दरिन्दूक रैदना कयन जा सकैत अछि । यथा- हि केव  
रैदना हि ।

१८. पूर्ण रिवाज पामिसँ ( । ) मुटित कयन जाय ।

१९. समस्त पद सँ क निखन जाय, रा हागहणसँ जोडि क  
, छै क नहि ।

२०. निख तथ दिख शिष्टमे रिकारी (२) नहि नगाउन जाय ।

२१. अक देवनागरी कयमे बाखन जाय ।

२२. किछ धूमिक जेन नरीन छि रैगरीउन जाय । जा जा नहि  
रैगन अछि तारैत एहि दू धूमिक रैदना पुरैरत अय/ आय/ अय/  
आय/ आउ/ अउ निखन जाय । आकि ऐ रा ओ सँ राउ कयन  
जाय ।

ह./- गोरिन्द मा ११/०५/१७ श्रीकांत ठाकुर ११/०५/१७ अलेन्द मा  
"स्वप्न" ११/०५/१७

## २. मैथिलीमे भाषा सम्पादन गार्हक्य

२.१. उँचाव निदिने: (रौलेड कयन कय ग्राह):-

दुनु न क उँचावमे दौतमे जीह सँत- जेना रौजू नाम,  
रुद्रा न क उँचावमे जीह मुर्गमे सँत (ले सँतैत तँ उँचाव  
दोय अछि)- जेना रौजू गणेशे । तानरा शैमे जीह तान्सँ,



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

यस्ये मुसुमि आ दसु सस्ये दातसु ससुत । सिमो, सत आ मोयण  
राजि क२ देखु । मैथिलीमे स के रैदिक ससुत जकाँ स  
सेहो उँचवित कथन जागत अछि, जेना रया, दोय । य  
अलको स्यनपव ज जकाँ उँचवित लोगत अछि आ न ड जकाँ  
(यथा सयोग आ गस्ये सजोग आ

गस्ये उँचवित लोगत अछि) । मैथिलीमे र क उँचावण र, ने  
क उँचावण स आ य क उँचावण ज सेहो लोगत अछि ।  
ओहिना दस्य ग रैमीकान मैथिलीमे पहिल राजन जागत अछि  
काका देरनागवीमे आ मिथिलास्यवे दस्य ग अकवक पहिल  
लिखला जागत आ राजला जयरौक चाली । काका जे हिन्दोमे  
एकव दोयपूर्ण उँचावण लोगत अछि (लिखन त पहिल जागत  
अछि दस्य राजन रौदस्य जागत अछि), से सिफा पछतिक  
दोयक काका ह्य सत ओकव उँचावण दोयपूर्ण ठगसु क२ बहन  
छी ।

अछि- अ ग ड अँड (उँचावण)

छथि- छ ग थ - छैथ (उँचावण)

गहँटि- ग हँ ग ट (उँचावण)

आरौ अ आ ग ज ए अँ ओ उँ अ अः म अँ सत लन गात्रा  
सेहो अछि, दस्य अँमे ज अँ ओ उँ अ अः म केँ सस्यस्यव  
कगमे गनत कगमे अँस्य आ उँचवित कथन जागत अछि ।  
जेना म केँ वी कगमे उँचवित कवरौ । आ देखियो- अँ लन  
देथिओ क अँयोग अँस्यत । दस्य देखिअँ लन देखियो  
अँस्यत । क सँ ह थवि अ समिलित लेनसँ क सँ ह रँलेत  
अछि, दस्य उँचावण कान हनसु स्य गेदक अँस्यक उँचावण  
अँस्यत रँलेत अछि, दस्य ह्य जथन मलोजमे ज अँस्यमे रँजेत  
छी, तथला प्रवणका लोककेँ रँजेत स्यनरँहि- मलोज२, रासुरमे  
ओ अँ स्य ज = ज रँजे छथि ।

ह्यव त्र अछि ज आ ए१ क सस्य दस्य गनत उँचावण लोगत  
अछि- गा । ओहिना स्र अछि क आ य क सस्य दस्य उँचावण



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

होगत अछि छ। हब मे आ व क सयउ अछि से (जेना ऐमिक) आ म् आ व क सयउ अछि स (जेना मिस)। ए भेन त+व ।

उठाकाक आँडियो हागत बिदेह आँकगल

<http://www.videha.co.in/> गव उगळ्टे अछि। हब केँ / म / गव गुरि अकवसँ सटी क२ लिखू द्दता ठँ / क२ ल्हा क२। एमे मँ ये गलिन सटी क२ लिखू आ रौदरना ल्हा क२। अकक रौद ठी लिखू सटी क२ द्दता अन्ग ठी लिखू ल्हा क२ जेना

डल्लो द्दता सभ ठी। हब उअ म सातम लिखू- डल्लो सातम ले। घवरनामे रौव द्दता घवरानीमे रावी प्रयउ कक।

बहए-

बहे द्दता सकेए (उठाका सकेए-ए)।

द्दता कथला कान बहए आ बहे ये अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कया जगहमे पाकिंग कवरोक अन्गम बहे ओकवा। प्रदुनागव गता नागन जे दुनदुन नामा ए डागरव कनछे ससक पाकिंगमे काज करैत बहए।

डल्लो, डल्लो ये सेहो ए तबहक भेन। डल्लो क उठावण डल्लो-ए सेहो।

सयोगल- (उठाका सयोगल)

केँ/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग गद्यमे ले कक, गद्यमे क२ सके छी। )

क (जेना बायक)

- बायक आ सगे (उठाका बाय के / बाय क२ सेहो)

मँ- स२ (उठाका)

छन्दरिन्दू आ अन्गनाव- अन्गनावमे केँ धरि प्रयोग होगत अछि द्दता छन्दरिन्दूमे ले। छन्दरिन्दूमे कलक एकावक सेहो

उठाका होगत अछि- जेना बायसँ- (उठाका बाय स२)

बायकेँ- (उठाका बाय क२/ बाय के सेहो)।



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानुषीमिह

बिदेह ISSN 2229-547X VIDEHA

केँ जेना बागकेँ भेन हिन्दीक को (बाग को)- बाग को= बागकेँ  
क जेना बागक भेन हिन्दीक का ( बाग का) बाग का= बागक  
क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव ( जा कव) जा कव= जा  
क२

सँ भेन हिन्दीक से (बाग से) बाग से= बागसँ

स२, त२, त, केव (गद्यमे) एते टाक गेहँ सरहक प्रयोग  
अरुद्धित ।

के दोसब अर्थे प्रशङ्क भ२ सकेए- जेना, के कहवक ?

रिभक्ति “क क रँदना एकव प्रयोग अरुद्धित ।

नगि, नहि, ले, नग, नँग, नगँ, नगँ ँ सभक उँचावण आ लेखन  
- ले

उन्न क रँदनामे उन्न जेना महगुर्ण (महउन्नगुर्ण ले) जतए अर्थ  
रँदनि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक संशुद्धाक्षरक प्रयोग  
उँचित । सभति- उँचावण स भ ग त (सभति ले- कावा सनी  
उँचावा आसानीसँ समुद्र ले) । रुदा सरोतम (सरोतम ले) ।

बाहिर्द्वय (बाहिर्द्वय ले)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

पौडिमे/ पौडि लेन/ पौडिमे लेन

पौडिमे/ पौडिमे/ (अर्थ परिवर्तन) पौडिमे/ पौडिमे

ओ लोकनि ( हँठी क२, ओ ये रिंकावी ले)

ओख/ ओहि

ओहिमे/

ओहि लेन/ ओले व२

ऊएखौँ लेखौँ

गँउजग्याँ

देखियौक/ (देखिओक ले- तहिना अ ये द्रव्य आ दीर्घक मात्राक  
प्रयोग अरुद्धित)

झकाँ / जेकाँ



मानवीमिह

विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

तै/ तै/

हलत / हलत

नमि/ नमि/ नै/ नै/ ले

सौ/ सौ/

रै/

रै/ (सोवाउन)

गा/ (गा/ नमि), रुदा गा/क दूध (गा/क दूध ले।)

रुदा/ रुदा/

हम/ हम/

मर - मर

मर/क - मर/क

ध/ - त/

ग/ - रौ/

रु/मर - मर/मर

रु/मर/ मर/मर/ रु/मर/ - मर/मर/

हम/ और - हम मर

आ/ आ/ कि

मर/क/ क/क (ग/मे प्रयोगक आर/कता ले)

हो/ हो/

जा/ (जा/ ले, जेना देन जा/क) रुदा जा/ - रु/मि (अर्थ  
ग/र/तन)

ग/र/ जा/र/

आ/ जा/ आ/ जा/

मे, कै, म, ग/ (मे/म/ म/ क/ त/ क/ द/ म/ म/ म/ क/ रुदा म/ रा/ म/ रि/र/ म/ रुदा/ग/ ग/मि रि/र/ र/कै म/। जेना ए/म/ म/।

ए/म/ , म/ (रुदा क/ म/)

रि/र/क प्रयोग मे/क अ/मे, रौ/मे अ/र/क क/ ले।

आ/र/र/ आ/ अ/मे अ/ क/ रौ/ रि/र/क प्रयोग ले जेना

दि/





बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

, आ/ दिय , आ, आ ले )

अपेन्द्राणीक प्रयोग रिकारीक रैदनामे कवरै अघटित आ मात्र  
फाँटक तकनीकी युगतक परिचायक)- गुना रिकारीक संस्कृत  
कप २ अरग्रह कहन जागत अछि आ रतनी आ उँचावण दुनु  
ठास एकव जाग बहेत अछि/ बहि सकैत अछि (उँचावणमे जाग  
बहते अछि) । दूदा अपेन्द्राणी सेहो अग्रजोमे पसेमिर  
कसमे जागत अछि आ होँचमे गेहमे जतए एकव प्रयोग  
जागत अछि जेना *raison d'être* एतए सेहो एकव उँचावण  
लेजेन छेव जागत अछि, माल अपेन्द्राणी अरकानि ले दैत  
अछि रकन जेडेते अछि, से एकव प्रयोग रिकारीक रैदना  
देनाग तकनीकी कपे सेहो अघटित) ।

अगमे, एहिमे/ एमे

जगमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ अगथन

कै (कै बहि) मे (अवस्थाव बहि)

भ२

मे

द२

तँ (त२, त ले)

सँ (स२ स ले)

गाढ तव

गाढ वग

साँस खन

जो (जो go, कले जो do)

ते/तअ जेना- ते दुआले/ तगमे/ तगले

जे/जअ जेना- जे कावण/ जगसँ/ जगले

ए/अअ जेना- ए काका/ एसँ/ अगले/ दूदा एकव एकठा खास

प्रयोग- नावति कतेक दिसँ कहैत बहेत अग



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ले/वष जेना लेम/ नगत/ ले दूखल  
नह/ लो

लालो ललो/ लल्ल/ लल्ल/ लल्ल/ लल्ल

जग/ जगि/ जे

जहिराग/ जहिराग/ जगिराग/ जेगिराग

एहि/ एहि/

अग (बालक अजय बाल) / अ

अगड/ अडि/ अड

तग/ तहि/ ते/ तहि

उहि/ उग

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीर

बलही/ बलहि

ते/ तग/ तग

जगिर/ जगिर

नग/ ले

डग/ डे

नहि/ ले/ नग

गग/ ले

डहि/ डहि ...

समय गेबंदक संग जखन कोला रिभक्ति जूठे डे तखन समे

जना समेगव गत्यादि। असगवमे द्दम आ रिभक्ति जूठल

द्दमे जना द्दमेस, द्दमेमे गत्यादि।

जग/ जगि/

जे

जहिराग/ जहिराग/ जगिराग/ जेगिराग

एहि/ एहि/ अग/ अ

अगड/ अडि/ अड

तग/ तहि/ ते/ तहि





मानवमिह

बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१. कव रैना/कव रैना/ कव रैना कव रैना/कव रैना /  
कव रैना

१. रैना रैना (श्रुत), रैना (स्त्री) ९

श्रीधर श्रीधर

१०. श्रीधर: श्रीधर

११. दुःख दुःख

२. दल दल दल दल/दल दल

१३. देवदह देवदह, देवदह

१४.

देवदह देवदह/ देवदह

१५. दुःख/ दुःख दुःख/ दुःख/ दुःख

१६. दल/दल दल/दल

१७. एथला

एथला

१८.

रैना रैना रैना

१९. ३/३२(सर्वांग) ३

२०

२. ३ (सर्वांग) ३/३२

२१. रैना/रैना रैना/रैना

२२.

जे जे/जे २ २३. ना-बुद्ध ना-बुद्ध

२४. देवदह/देवदह/कवदह

२५. तथल/ तथल

२६. ज्ञा

बुद्ध/ज्ञा बुद्ध/ज्ञा बुद्ध

२७. निकन/निकन

नागन/ नागन रैना/ रैना नागन/ नागन निकन/रैना नागन

२८. ३/३२ जत/ ३/३२ जत/ ३/३२

212



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

२९.

की बुबब जे कि बुबब जे

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यदि(योग गीत) कुदि/यादि/कुदि/यादि/

यदि (योग)

३२. ओहो/ ओहो

३३.

हंस/ हंस हंस

३४. लो आदि दस/लो किरा दस/ लो रा दस

३५. सान-सन्व सान-सन्व

३६. छह/ सात छह/सात

३७.

की की/ की२ (दीर्घाकाव्यमे २ रजित)

३८. जराँ जराँ

३९. ककल/ ककल ककल

४०. दना दानि दना दानि/दना दानि

४१.

. लाल गल/गल

४२. किछ आँ किछ आँ/ किछ आँ

४३. जाँ छव जाँ छव जाँ छव जाँ छव जाँ छव जाँ छव

४४. गहँ छव जाँ छव जाँ छव जाँ छव गहँ छव जाँ छव

४५.

जराँ (हरा)/ जराँ (होजी)

४६. नय/ नय क/ क२/ नय क२ / नय क२/ नय क२

४७. न/नय क२/

क२

४८. एन / एन / एन / एन

४९.

अलीक अलीक



मानवीमिह

बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

३०. गहीव गहीव

३१.

धाव गाव केनाथ धाव गाव केनाथ/केनाथ

३२. जेकाँ जेकाँ

झकाँ

३३. तहिना तेहिना

३४. एकव थकव

३५. रैहिन रैहिन

३६. रैहिन रैहिन

३७. रैहिन-रैहिन

रैहिन-रैहिन

३८. नहि/ ले

३९. कवरौ / कवरौया/ कवरौया

४०. तँ/ त २ तय/तय

४१. तैयाबी ये जेठ-जाय/जेठ, जेठ-जाय/जाय

४२. गितीये दु भाग/भाग/भाग

४३. जा पोथी दु भाग/भाग/ भाग/ लेन। यारत जारत

४४. माय ये / माय दूदा मायक मायक

४५. देहि/ दया दया/ दयाहि/ दयाहि दहि/ देहि

४६. द/ द/ द

४७. उ (संयोजक) उ२ (संयोजक)

४८. तका कय तकाय तकाय

४९. गेले (on foot) गेले कयक/ केक

१०.

तहुमे तहुमे

११.

प्रतीक

१२.

रैजा कय/ कय / कय

१३. रैजाया/रैजाया

214



मानवीमिह

बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१४. कोवा

१३.

दिवका दिवका

१३.

ततर्धि

११. गवर्णोवहि/ गवर्णोवनि/

गवर्णोवहि/ गवर्णोवनि

११. रौब रौब

११.

छेह छेह (अथवा)

१०. जे जे

१५

. से/ के से/के

१२. एवका अथवा

१३. उगिवाव उगिवाव

१४. सुव

/ सुवका सुव

१३. सवक सवक १३.

द्वि

११. कवगयो/उ कवगयो ल देवक /कवगयो-कवगयो

११. प्रवा

प्रवा

११. सगड १-सगड

सगड १-सगड

१०. गव-गव गेव-गेव

११. खेववैक

१२. खेववैक

१३. वग

१४. लो-लो - लो



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानुषीमिह

१३. **ब्रूमव ब्रूमव**

१३.

**ब्रूमव** (संशोधन अर्थमे)

११. **त्येरु यथरु / अथरु / मेरु / मथरु**

१४. **तातिव**

११. अयनाय- अयनाग/ अयनाग/ एनाग

१००. **निन्न- निन्द**

१०१.

**विग विग**

१०२. **झाग जाग**

१०३.

**जाग** (in different sense)-last word of sentence

१०४. **छत नव आदि जाग**

१०५.

**ल**

१०६. **त्येवाय (pl ay) -त्येवाय**

१०७. **मिकागत- मिकागत**

१०८.

**ठग- ठग**

१०९

**गठ- गठ**

११०. **कनिए/ कनिये कनिये**

१११. **वाकस- वाकने**

११२. **लोग/ लोय लोग**

११३. **अडवन्त-**

**उक्त**

११४. **ब्रूमवहि** (different meaning - got under stand)





मानुषीमिह

बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

११३. बूसयनहि/बूसयनि/ बूसयनहि (under stood  
himself)

११७. टनि- टव/ टनि लाव

११९. खथाय- खथाय

११९.

मोष गाडवनिह/ मोष गाडवनि/ मोष गावनिह

१२०. कैक- कएक- कएक

१२०.

वग न ग

१२१. जखनाय

१२२. जखनाय जवनाय- जखनाय/

जखनाय

१२३. हागत

१२४.

गवरैवहि/ गवरैवनि गवरैवहि/ गवरैवनि

१२५.

टिखेत- (to test) टिखेत

१२७. कवैया (willing to do) कवैया

१२९. जेकवा- जेकवा

१२९. तकवा- तकवा

१२९.

बिदेसव आलमे/ बिदेसव आलमे

१३०. कवरैवहि/ कवरैवनि/ कवरैवहि कवरैवनि

१३१.

हाविक (डटावण हाविक)

१३२. उज्ज्व रज्ज्व आसोच/ आसोच कागत/ कागत/ कागत

१३३. आषे भाग/ आषे-भाषे

१३४. निछ / निछा/ निछा

१३५. नय/ ल



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

१३७. रीति नृप

(ल) निज ज्ञाय

१३८. तथैव ल (नृप) कहेत थि। कहे/ नृप देवेत तव नृप  
कहेत-कहेत/ नृप-नृप/ देवेत-देवेत

१३९.

कतेक लोके/ कतेक लोके

१४०. कथा-धारा/ कथा- धारा

१४१

- वग नृप

१४२. रथवाग (for playing)

१४३.

तथैव तथैव

१४४.

लोकेत लोके

१४५. का किये / केत

१४६.

कणे (hair)

१४७.

कस (court-case)

१४८

- रथवाग/ रथवाग/ रथवाग

१४९. जलवाग

१५०. कथा कथा

१५१. तथैव तथैव

१५२. कथा कथा

१५३. तथैव/ तथैव/ तथैव/ तथैव/ तथैव

१५४. तथैव/

तथैव

१५५. तथैव (तथैव तथैव तथैव)- तथैव

१५६. तथैव/

218



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

कवक

१३.७. गवरी गर्ग

१३.१

. रवदी रदी

१३.४. सुना लोवाह सुना/सुना/२

१३.९. एनाथ-लोनाथ

१३.०.

लोना ल येववहि लोना ल येववनि

१३.५. नदी / ले

१३.२.

लोना डलो

१३.३. कतह/ कतो कही

१३.४. उगविगव-उगवगव उगवगव

१३.३. लविगव

१३.३. लोना/लोनाथ लोनाथ

१३.१. गग/गग

१३.४.

क क

१३.९. दवरैल/ दवरैल

१३.०. गग

१३.५.

धवि तक

१३.२.

धुवि लोह

१३.३. लोवलोह

१३.४. रैल

१३.३. लो/ लु

१३.३. लोह/ लोहमे लोह

१३.१. लोह / लोह

१३.४.



मानसुषीमिह

बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

कवयौग्य कवयौग्य

१७. एकैछी

१८. कवितथि / कवतथि

१९.

पहुँचि/ पहुँच

२०. बाथनहि बथनहि/ बथननि

२१.

वगनहि/ वगननि नागनहि

२२.

बुनि (डुँचावनी अगल)

२३. अछि (डुँचावनी अगल)

२४. एवथि लावनि

२५. रिंतोल/ रिंतोल/

रिंतोल

२६. कवरौउनहि/ कवरौवनहि

कवरौवनहि/ कवरौवन

२७. कवरौवनहि/ कवरौवन

२८.

आछि/ छि

२९. पहुँचि/

पहुँच

३०. रौंती जवाय/ जवाय जवाय (आनि नगा)

३१.

मे मे

३२.

हाँ मे हाँ (हाँमे हाँ रिंतुमे छी कए)

३३. खैव खैव

३४. खैव(spacious) खैव

३५. होयतहि/ होयतहि/ होयतनि/ होयतनि/ होयतहि

३६. हाथ मटियाँ/ हाथ मटियाँ/ हाथ मटियाँ

220



मानसुषीमिह

बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१००. एकैका एकैका

२००. देखी देखी

२०५. देखी देखी

२०२. सतुवि सतुव

२०३.

साहेब साहेब

२०४. गोलोह/ लोवहि/ लोवहि

२०३. लेखीक/ लेखीक

२०३. केला/ कएनहुँ/ केला/ केबू

२०१. किछु न किछु

किछु ल किछु

२०४. घुमेनहुँ/ घुमाउनहुँ/ घुमेनहुँ

२००. एका/ अनाक

२५०. अः/ अह

२५५. नया/

नया (अर्थ- परिवर्तन) २५२. कनीक/ कनीक

२५३. सरीक/ सतक

२५४. गिला/ गिला

२५३. क२/ क

२५३. जा२/

जा

२५१. आ२/ आ

२५४. भ२ / भ ( शॉर्टक कनीक आतक)

२५०. निधम/ निधम

२२०

.लेखीक/ लेखीक

२२५. पहिब अकब ठा रीदका रीदक ठा

२२२. तहि/ तहि/ तहि/ तै

२२३. कहि/ कहि



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानसुषीमिह

२२४. तँ/

तँ / तगँ

२२५. नँग/ नगँ नयि/ नहि/लै

२२६. हे/ ह्य / एवीहँ/

२२७. छयि/ छै/ छैक /छग

२२८. दृष्टिअ/ दृष्टियै

२२९. औ (come)/ औ२ (conjunct ion)

२३०.

औ (conjunct ion)/ औ२ (come)

२३१. कला/ कोला, कोषा/कोषा

२३२. गोलैह-गोलहि-गोलि

२३३. लेखीक- लेखीक

२३४. केला- कएला-कएनहँ/कएला

२३५. किड न किड- किड ल किड

२३६. कहैत- कहैत

२३७. औ२ (come)- औ (conjunct ion-and)/औ । औरै-

औरै /औरैह-औरैह

२३८. हयत-हैत

२३९. घुमैतहँ-घुमैतहँ- घुमैतहँ

२४०. एवाक- एवाक

२४१. होमि- होमि/ होमि

२४२. उ-बाय उ योगक रीट (conjunct ion), उ२ कहवक (he  
said)/उ

२४३. की ह्य/ कोषी एवी ह्य/ की है । की हग

२४४. दृष्टिअ/ दृष्टियै

२४५.

. मोमि/ मोमि

२४६. तै/ तै/ तयि/ तहँ

२४७. जौ

/ जौ/ जौ









मानवीमिह

बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२९३. ठाढ़ (तीन अक्षरक तेन रैदना प्रत्यक्षक एक आ एकठा  
दोसबक उपयोग) आदिक रैदना ह्र आदि। महठह्र/ मह्र/  
कठर्/ कठर् आदिये उ सशङ्क काला आरथकता मैथिलीमे ले  
अछि। **रउर**

२९३. **रैर**/ **रैगी**

२९५. **रौना/राना रैना/ रना (बहेरैना)**

२९५

**रादी/ (रैदलैरानी)**

२९६. **राउर्/ राउर्**

३००. **अनुबर्द्धिय/ अनुबर्द्धीय**

३०१. **रैय/ रैय**

३०२. **मयठबका/ मयठबका**

३०२. **वाली/ वाली (**

**बेठैत/ बेठै)**

३०३. **वागव/ वागव**

३०४. **रौ/ रौ**

३०५. **वाथवक/ वाथवक**

३०६. **आ (come)/ आ (and)**

३०७. **गमराग/ गमराग**

३०८. २ केव रारहाव मेदिक अनुमे मात्र, यथार्थर रीटमे ले।

३०९. **कहेत/ कहे**

३१०.

**बह (डव)/ बहे (डवै) (meaning different)**

३११. **तागति/ ताकति**

३१२. **खाग/ खाग**

३१३. **रौग/ रौगि/ रौगि**

३१४. **जाग/ जाग**

३१५. **कागज/ कागज/ कागज**

३१६. **गिरे (meaning different - swallow)/ गिर**

(थसए)



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

३१. राष्ट्रीय/ राष्ट्रीय

**DATE-LIST (year – 2012-13)**

**(१४२० श्रमवी साव)**

***Marriage Days:***

Nov.2012– 25, 26, 28, 29, 30

Dec.2012– 5,9, 10, 13, 14

*January 2013– 16, 17, 18, 23, 24, 31*

*Feb.2013– 1, 3, 4, 6, 8, 10, 14, 15, 18, 20, 24, 25*

*April 2013– 21, 22, 24, 26, 29*

*May 2013–*

*1,2,3,5,6,9,12,13,17,19,20,22,23,24,26,27,29,30,31*

*June 2013– 2,3*

*July 2013– 11, 14, 15*

***Upanayana Days:***



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानुषीमिह

January 2013- 16

February 2013- 14, 15, 20, 21

April 2013- 22

May 2013- 20, 21

***Dviragaman Din:***

November 2012- 25, 26, 28, 29

December 2012- 2, 3, 14

February 2013- 14, 15, 18, 20, 21, 22, 27, 28

March 2013- 1

April 2013- 18, 22, 24, 26, 28, 29

May 2013- 12, 13

***Mundan Din:***

November 2012- 26, 30

December 2012- 3

January 2013- 18, 24



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

February 2013 – 1, 14, 15, 20, 28

April 2013 – 17

May 2013 – 13, 23, 29

June 2013 – 13, 19, 26, 27, 28

July 2013 – 10, 15

### FESTIVALS OF MITHILA (2012–13)

Mauna Panchami – 08 July

Madhushravani – 22 July

Nag Panchami – 24 July

Raksha Bandhan – 02 Aug

Krishnastami – 10 August

Kushi Amavasya / Somvari Vrat – 17 August

Vishwakarma Pooja – 17 September

Hartalika Teej – 18 September



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् **ISSN 2229-547X VIDEHA**

मानुषीमिह

Chaut hChandr a-19 Sept ember

Kar ma Dhar ma Ekadashi -26 Sept ember

I ndr a Pooj a Aar ambh- 27 Sept ember

Anant Catur dashi - 29 Sep

Agast yar ghadaan- 30 Sep

Pi t ri Paksha begi ns- 30 Sep

Ji moot avahan Vr at a/ Ji ti a-08 Oct ober

Mat ri Navami - 09 Oct ober

Somvat i Amavasya Vr at - 15 Oct ober

Kal ashst hapan- 16 Oct ober

Bel naut i - 20 Oct ober

Pat ri ka P r avesh- 21 Oct ober

Mahast ami - 22 Oct ober

Maha Navami - 23 Oct ober

Vi j ya Dashami - 24 Oct ober



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

Koj agar a – 29 Oct

Dhant er as – 11 November

Di yabat i , shyama pooj a – 13 November

Annakoot a/ Govar dhana Pooj a – 14 November

Bhr at ri dwi ti ya/ Chi tr agupt a Pooj a – 15  
November

Chhat hi – 19 November

Devot t han Ekadashi – 24 November

r avi vr at ar ambh – 25 November

Navanna par van – 25 November

Kar ti k Poor ni ma – Sama Vi sar j an – 28  
November

Vi vaha Panchmi – 17 December

Makar a/ Teel a Sankr ant i – 14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi – 08 Febr uar y

Basant Panchami / Sar aswat i Pooj a – 15  
Febr uar y



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम्, ISSN 2229-547X VIDEHA

मानुषीमिह

Achha Saptmi - 17 February

Mahashivaratri - 10 March

Holikadahan-Fagua - 26 March

Holi - 28 March

Varuni Trayodashi - 07 April

Chaiti Navaratri - 11 April

Jurishital - 15 April

Chaiti Chhativrat - 16 April

Ram Navami - 19 April

Ravi Brat Ant - 12 May

Akshaya Tritiya - 13 May

Janaki Navami - 19 May

Vat Savitri - barasait - 08 June

Ganga Dashhar - 18 June

Somavati Amavasya Vrat - 08 July



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

Jagannath Rath Yatra - 10 July

Har i Sayan Ekadashi - 19 July

Aashadhi Gur u Poor ni ma - 22 Jul

## VI DEHA ARCHI VE

१. बिदेह ई-पत्रिकाक सभसँ पुरान अंक ब्रैल, तिवहुता आ  
देवनागरी कगमे Vi deha e j ournal 's all old  
issues in Braille Tirhuta and Devanagari  
ver si ons

बिदेह ई-पत्रिकाक पहिल ३.० अंक

बिदेह ई-पत्रिकाक ३.०म सँ आगाँक अंक

२. मैथिली पोथी डाउनलोड Maitthili Books Downl oad

३. मैथिली ऑडियो संकलन Maitthili Audi o Downl oads

४. मैथिली वीडियो संकलन Maitthili Videos

५. मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila  
Painting/ Mder n Art and Photos





बिदेह क एहि सभ सहयोगी विकसित सेहो एक लेब जाई ।

३. बिदेह मैथिली क्रिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. बिदेह मैथिली ज्ञानवृत्त एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

४. बिदेह मैथिली साहित्य अग्रजोमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

६. बिदेहक पुरि-कप "जानसबिक गाछ" :

<http://gajendratyakur.blogspot.com/>

१०. बिदेह गैडेट्स :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. बिदेह हागतन :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. बिदेह: सदेह : पहिल तिवहुता (मिथिलाक्षर) ज्ञानवृत्त  
(ब्लॉग)

<http://videha-sadehablogspot.com/>



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१३. बिदेह:ब्रैन: मैथिली ब्रैनमे: पहिल रैब बिदेह द्वारा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VI DEHA 1ST MAITHILI FORTNIGHTLY  
EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१३. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई पत्रिका मैथिली पोथीक  
आर्काइव

<http://videha-pot hi.blogspot.com/>

१६. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई पत्रिका ऑडियो आर्काइव

<http://videha-audio.blogspot.com/>

११. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव

<http://videha-video.blogspot.com/>

१४. बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला,  
आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१६. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानवृत्त)

बि एन ए बिदेह Videha बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पक्षिक ई  
पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal बिदेह अथय ट्योथिनो पौष्किक अ पत्रिका



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>

२०. स्मृति श्रुति

<http://www.shrutipublication.com/>

२१ <http://groups.google.com/group/videha>

Google समूह

VI DEHA लेख सदनगत लिख

अमेन :

एहि संग्रहगत जाँड

२२ <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

Subscribe to VI DEHA

enter email address

बि ए र बिदेह Videha बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई  
पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिक ई पत्रिका



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

Powered by [us.groups.yahoo.com](http://us.groups.yahoo.com)

२३. गजेन्द्र ठाकुर जडेक

<http://gajendrathakur123.blogspot.com>


२४. लषा लुठेका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२५. बिदेह रेडियो: मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल प्रोडक्शन्स  
साइट

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२६.  Videha Radio

२७.  Join official Videha facebook group.

२८. बिदेह मैथिली नाट्य उमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२९. समदिया

<http://esamad.blogspot.com/>



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अक्षरिहार आश्रय

<http://anchinharakharakolkatablogspot.com/>

३२. मैथिली हाङ्गू

<http://maithili-hai.ku.blogspot.com/>

३३. माणक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. विरह कथा

<http://vihani.katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली कविता

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३७. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

सहस्रवर्षीय सृष्टिः (१) विदेह द्वारा सार्वजनिक रूपेण अ-  
प्रकाशित कय लोच गजेन्द्र ठाकुरक निरंजन-प्रबंध-समीक्षा,  
उपनिषद् (सहस्रवर्षीय), पद्य-संग्रह (सहस्रवर्षीय टोपडगर),  
कथा-गल्प (गल्प-ग्रन्थ), नष्टकर्मकर्षण, महाकाव्य (द्वयलोक आ  
असंगति मय) आ बौद्ध-किशोर साहित्य विदेहमे संपूर्ण अ-  
प्रकाशित बौद्ध विष्टि कर्यमे । ककषेवम् अन्तर्गत खंड-१ स  
१ Combined ISBN No.978-81-907729-7-6 बिरवा  
एहि पृष्ठपर नीचाये आ प्रकाशित साष्ट  
<http://www.shrutipublication.com/> पब ।

सहस्रवर्षीय सृष्टिः (२) सृष्टिः विदेहक मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी  
मैथिली कोष (अष्टवर्षीय पत्रिका लेव मर्च-डिक्शनरी) एम.एस.  
एम.ए. सर्व आधारित -Based on ms-sql server  
Maithili-English and English-Maithili  
Dictionary. विदेहक भाषांगिक- बलावेषण सुत्रमे ।

ककषेवम् अन्तर्गत- गजेन्द्र ठाकुर





विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

गजेंद्र ठाकुरक निबंध-पत्रिका-समीक्षा, उपासना (महत्त्वपूर्ण),  
पद्य-संग्रह (महत्त्वपूर्ण लेखक), कथा-गल्प (गल्प संग्रह),  
नाटक(संस्कृत), महाकाव्य (ब्रह्मकाव्य आ अमरकाव्य) आ  
बौद्धिक-विश्लेषणगत विवेचन संपूर्ण अ-प्रकाशित रचना प्रिण्ट  
फॉर्मेट। अक्षरमाला-अक्षरमाला, खंड-१ सँ १

1st edition 2009 of Gajendra Thakur's  
KuruKshetram-Antarmanak (Vol. I to VII)-  
essay-paper-criticism, novel, poems, story,  
play, epics and Children-grown-ups  
Literature in single binding:

Language: Maithili

७२ पृष्ठ : मूल्य डीलर के 100/- (for individual  
buyers inside india)

(add courier charges Rs 50/- per copy for  
Delhi/NCR and Rs.100/- per copy for outside  
Delhi)

For Libraries and overseas buyers \$40 US  
(including postage)

The book is AVAILABLE FOR PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

Details for purchase available at print -  
version publisher's site

बि ए रु बिदेह Videha बिदेह [www.videha.co.in](http://www.videha.co.in) [www.videha.com](http://www.videha.com) बिदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका Videha 1st Maithili Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम द्वायिनी पत्रिका अ पत्रिका



बिदेह' ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०,

मानवीमिह

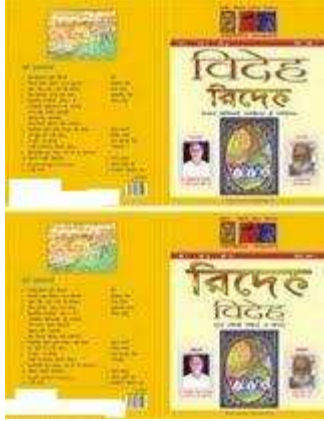
संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

website: <http://www.shruti-publication.com/>

or you may write to

e-mail [shruti.publication@shruti-publication.com](mailto:shruti.publication@shruti-publication.com)

बिदेह: सदेह : १: २: ३: ४ तिबहुता : देवनागरी 'बिदेह' क, हिष्ट संस्कृत : बिदेह-अ-पत्रिका  
(<http://www.videha.co.in/>) क छलव बचना समिचित ।



बिदेह:सदेह:१: २: ३: ४

संपादक: गजेन्द्र ठाकुर ।

Details for purchase available at print-version publishers's site <http://www.shruti-publication.com> or you may write to [shruti.publication@shruti-publication.com](mailto:shruti.publication@shruti-publication.com)





बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय

## २. संदेश-

[ बिदेह ई-पत्रिका बिदेहसदस्य विधिवानुसार आ देवनागरी आ गजपुत्र  
ठाकुरक सात अक्षर- निरुद्ध-प्रति-समाप्ति/उपस्थाप  
(सहस्रवर्षीय), पञ्च-संग्रह (सहस्रवर्षीय टोपडंग), कथा-गण (गण  
ग्रन्थ), नवैक (संस्कृत), महाकाव्य (ब्रह्मसंहिता आ अमरकालिका) आ बाव-  
मंडली-केशव जगत- संग्रह ककालिका अतिरिक्त मादें । ]

१. श्री गोविन्द सा- बिदेहके तबंगजानगव उतायि विभिन्नविधे  
माहताया मैथिलीक महि जगाउनु, खेद जे अगलक एहि  
महाविधानमे हम एखन धरि संग नहि दए सकलहुँ । अलैत छी  
अगलकेँ सुभाउ आ बचनमेक आलोचना प्रिय नछैत अछि तै  
किछु लिखक मोन भेल । हमर महाता आ सहयोग अगलकेँ  
सदा उपलब्ध रहत ।

२. श्री कमानन्द सा- मैथिलीमे ई-पत्रिका पत्रिका कएँ चला कऽ  
जे अगल माहतायाक प्रचार कऽ रहन छी, से धन्यवाद । आगाँ  
अगलक समस्त मैथिलीक कार्यक हेतु हम द्वन्द्वसँ शुभकामना दऽ  
रहन छी ।

३. श्री विद्यानाथ सा "बिदिता"- संचार आ प्रौद्योगिकीक एहि  
प्रतिस्पर्धी ग्राहक युगमे अगल महिमाय "बिदेह"केँ अगला देहमे  
प्रकट देखि जतरा प्रसन्नता आ सतोष भेल, तकरा कोला  
उपलब्ध "मिष्टान" नहि बागन जा सकैछ ? ...एकर ऐतिहासिक  
मुलाकिस आ सांस्कृतिक प्रतिफलन एहि शताब्दीक अंत धरि लोकक  
बजबिमे आश्चर्यजनक रूपसँ प्रकट होत ।



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवमिह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

४. श्री. उदय नावायण सिंह "बटिकेत"- जे काज अहाँ कए  
बहन छी तकर चवटा एक दिन मैथिली भाषाक गतिहासमे  
लेखत । आनन्द भए बहन अछि, ए ज्ञानि कए जे एतेक छोट  
मैथिल "बिदेह" ए जर्नलकेँ पठि बहन छथि । ...बिदेहक टानीम  
अँक पुरौराँक लेल अभिनन्दन ।

३. डा. गंगेश गुंजन- एहि बिदेह-कर्ममे लागि बहन अहाँक  
सम्वदनीय मल, मैथिलीक प्रति समर्पित मेहनतिक अमृत बँग,  
गतिहास मे एक ठो विशिष्ट हवाक अध्याय आवँत कबत, हमरा  
रिग्रास अछि । अमेय शुभकामना आ रँधाँक सभ, सम्वद...अहाँक  
पौथी कर्मक्षेत्रमे अतिथिक प्रथम दृष्ट्या रहूत भरा तथा  
उपयोगी बुझाओछ । मैथिलीमे तँ अगला स्वरूपक प्रायः ए  
पहिले एहन भरा अरतावक पौथी थिक । हर्षपूर्ण हमर हार्दिक  
रँधाँक स्वीकार करी ।

३. श्री वामशेखर झा "वामरंग"(आरंभ स्वर्गीय)- "अगला" मिथिला  
संरचित...रिचय रसुँ अरगत लेनहूँ । ...मेय सभ कर्मेन अछि ।

१. श्री ज्ञानेश्वर त्रिपाठी- साहित्य अकादमी- गठबलेष्ट पब प्रथम  
मैथिली पत्रिका "बिदेह" केव लेल रँधाँक आ शुभकामना  
स्वीकार कर ।

४. श्री प्रहल्लाद झा "मोक्ष"- प्रथम मैथिली पत्रिका  
"बिदेह" क प्रकाशक समाचार ज्ञानि कलक टकित हृदा रँसी  
आह्वानित लेनहूँ । कानटकेँ पकडि जाहि दुबदृष्टिक परिचय  
देनहूँ, ओहि लेल हमर सँगतकामना ।

६. डा. शिरधरनाथ यादव- ए ज्ञानि अगाव हर्ष भए बहन अछि,  
जे नर सूचना-आधुनिक क्षेत्रमे मैथिली पत्रकारिताकेँ प्रेरणे  
दिअएँक साहसिक कदम उठाओन अछि । पत्रकारितामे एहि



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रकाशक वर प्रयोगक हम स्वागत करैत छी, संगहि "बिदेह"क  
सफलताक शुभकामना ।

१०. श्री आद्याचरण मा- कोला पत्र-पत्रिकाक प्रकाशक- ताद्वये  
मैथिली पत्रिकाक प्रकाशकमे ले कतेक सहयोग कबताह- अ  
तः भविष्य कहत । अ हमर ++ रचये १३ रचक अन्तर्  
बहन । एतेक पैघ महल यन्त्रमे हमर शिष्टापूर्ण आहूति प्राप्त  
होयत- यारत ठीक-ठाक छी/ बहर ।

११. श्री रिजय ठाकुर- शिशिष रिश्वरिद्यालय- "बिदेह" पत्रिकाक  
अक देखनहुँ, सम्पूर्ण टीम रक्षाक पत्र अछि । पत्रिकाक संग  
भविष्य हेतु हमर शुभकामना स्वीकार कएन जाओ ।

१२. श्री सुभाषचन्द्र यादव- अ-पत्रिका "बिदेह" क बारेमे जानि  
प्रसन्नता भेल । 'बिदेह' निबन्ध पत्रिका-पुष्पित हो आ  
चतुर्दिक अंग स्वर्ण पमावय से कामना अछि ।

१३. श्री मैथिलीपुत्र प्रदीप- अ-पत्रिका "बिदेह" लेब सफलताक  
भगवतीस कामना । हमर पूर्ण सहयोग बहत ।

१४. डा. श्री तीरमाथ मा- "बिदेह" अष्टवर्ष पत्र अछि तै  
"बिदेह" नाम उचित आब कतेक कर्षे एकव रिरव भए सकैत  
अछि । आ-कालि योणमे उद्भव बहैत अछि, रुद्रा शीघ्र पूर्ण  
सहयोग देब । कर्मकर्म अन्तर्गत देखि अति प्रसन्नता भेल ।  
मैथिलीक लेन अ घटना छी ।

१५. श्री रामभरोस कागडि "भ्रमर"- जनकपुरवासी- "बिदेह"  
आननाग देखि बहन छी । मैथिलीक अन्तर्वाही जगतमे



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पहुँचें तब तो जेन हार्दिक रंभाग। मिथिला बने सतक संकलन  
अपूर्ण। लंगालोक सहयोग भेटैत, से रिश्ता करी।

१३. श्री बाजबन्धन नानदास- “विदेह” ई-पत्रिकाक माध्यमसँ रँड  
नीक काज कए बहन भू, नातिक अहिठाम देखनहुँ। एकब  
बारिक एक जखन छिष्ट निकारै तँ हमरा पठासर। कनकतामे  
रँडत गोठैकेँ हम मागठक पता लिखाए देल छियहि। मोन  
तँ होगत अछि जे दिसी आरि कए आशीर्वाद दैतहुँ, रुदा उमर  
आरि रेशी भए गेल। शुभकामना देमि-विदेशक मैथिलकेँ  
जोडरीक जेन। .. उक्रेष्ट प्रकाशित ककम्प्रेष्ट अतर्किक जेन  
रंभाग। अछुत काज कएन अछि, नीक प्रश्रुति अछि सात  
खण्डमे। रुदा अहाँक सेरा आ से निःस्वार्थ तखन रुमन  
जागत जँ अहाँ द्वारा प्रकाशित पोथी सतपव दाम लिखन नहि  
बहिकैत। उहिना सतकेँ रिनहि देन जगतिक। (स्पष्टीकवा-

श्रीमान्, अहाँक सुनेथि विदेह द्वारा ई-प्रकाशित कएन सतपै  
सामग्री आर्कागरमे

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-potahi/> पव रिना मुन्यक डाउनलोड जेन उगनहुँ छै आ

भरियामे सेहो बहिकैत। एहि आर्कागरकेँ जे कियो प्रकाशिक  
अनुमति न२ क२ छिष्ट कएमे प्रकाशित कएल छथि आ तब ओ  
दाम बखल छथि ताहिपव हमर कोना नियंत्रण नहि अछि। -  
गजेन्द्र ठाकुर)... अहाँक प्रति अमेय शुभकामनाक संग।

११. डा. प्रेमशंकर सिंह- अहाँ मैथिलीमे छैबलछपव पहिल  
पत्रिका “विदेह” प्रकाशित कए अगल अछुत माहतायवागक  
परिचय देन अछि, अहाँक निःस्वार्थ माहतायवागसँ प्रेरित भू,  
एकब निमित्त जे हमर सेराक प्रयोजन हो, तँ सुचित करी।  
छैबलछपव आद्यापति पत्रिका देखन, मन प्रश्रुति भ२ गेल।



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्करण, ISSN 2229-547X VIDEHA

१५. श्रीमती शैलजिता रमा- बिदेह ५-पत्रिका देखि मोन उल्लास  
भवि गेल । बिदेह कतेक प्रगति क२ बहन अछि...अहाँ सभ  
अनन्य आकाशिकेँ तेदि दियो, समस्त रितावक बहनकेँ ताव-ताव  
क२ दियो... । अगलक अछुत पत्रक ककषेत्रम् अतर्किक  
रिचयसक दृष्टि सँ गावमे सागव अछि । रैवाङ्ग ।

१६. श्री हेतुकव मा, पठना-जाहि समर्पण भारसँ अगल मिथिला-  
मैथिलीक सैराये तपेव डी से खुल अछि । देशक राजधानी  
भय बहन मैथिलीक शैलजिता मिथिलाक गाम-गाममे मैथिली  
चेतनाक विकास अरुण कवत ।

२०. श्री योगेश्वर मा, करिगुन, नहेरियामबाय- ककषेत्रम्  
अतर्किक पोथीकेँ निकटसँ देखेबाक असर भेटेल अछि आ  
मैथिली जगतक एकटा उद्भूत ओ समामाजिक दृष्टिसम  
हस्तक्षेपक कमरसँ परिचयसँ आनादित डी । "बिदेह"क  
देखनागरी सँकषण पठनामे क. ८०/- मे उगल्ल भ२ सकन जे  
रिचित लेखक लोकनिक डायारि, परिचय पत्रक ओ बचनारलीक  
सम्यक प्रकाशिसँ ऐतिहासिक कहन जा सकैछ ।

२१. श्री किशोरीकांत मिश्र- कोनकाता- जय मैथिली, बिदेहमे  
रैहूत बास करिता, कथा, विप्रेष्ट आदिक सचित्र संग्रह देखि आ  
आव अगल प्रसन्नता मिथिलाक्षर देखि- रैवाङ्ग श्रीकाव कएन  
जाओ ।

२२. श्री जीरकांत- बिदेहक अद्वित एक पठन- अछुत  
मेहनति । चरस-चरस । किड समालोचना मवथाह...अदा सए ।

२३. श्री भानुचन्द्र मा- अगलक ककषेत्रम् अतर्किक देखि  
रूमाएन जेना हम अगल डगनहूँ अछि । एकव रिशानकाय



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

आज्ञाति अपलक सरसमारोहताक परिचायक अछि । अपलक बचन  
सामर्थ्यमे उतरोतव वृद्धि हो, एहि शुभकामनाक संग हार्दिक  
रैवांग ।

२४.श्रीमती डा नीता मा- अहाँक ककषेत्रम् अतर्लिक पठनहू ।  
जातिवीर्येव शेरारनी, प्रवि मत्त शेरारनी आ सीत रससु आ  
सत कथा, करिता, उपन्यास, रान-किशोर सहि सत उत्तम  
हुन । मैथिलीक उतरोतव विकासक नम्र दृष्टिगोचर होगत  
अछि ।

२३.श्री मयानन्द मिश्र- ककषेत्रम् अतर्लिक मे हमार उपन्यास  
स्त्रीधनक जे विरोध कएन होन अछि तकर हम विरोध करैत  
छी । ... ककषेत्रम् अतर्लिक पोथीक जेन शुभकामना । (श्रीमान्  
समारोहताकेँ विरोधक कएने नहि जेन जाए । -गजेन्द्र ठाकुर)

२७.श्री महेश्वर हजारी- सम्पादक श्रीमिथिला- ककषेत्रम् अतर्लिक  
पठि मोन हर्षित भ२ होन..एथन पुन पठनमे रहूत समय  
नागत, हृदा जेतक पठनहू से आनन्दित कएनक ।

२१.श्री केदारनाथ टोषी- ककषेत्रम् अतर्लिक अद्भुत नागन,  
मैथिली सहि जेन आ पोथी एकठा प्रतिमान रैनत ।

२५.श्री सत्यनन्द पाठक- विदेहक हम नियमित पाठक छी । ओकर  
स्वकपक प्रशंसक हुनहू । एकर अहाँक लिखन - ककषेत्रम्  
अतर्लिक देखनहू । मोन आनन्दित भ२ उठन । कोनो बचन  
तवा-उपवी ।

२६.श्रीमती बमा मा-सम्पादक मिथिला दर्शन । ककषेत्रम्  
अतर्लिक छिष्ट फॉर्म पठि आ एकव श्रवता देखि मोन प्रसन्न



मानवीय

विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

त२ गेन, अद्भुत शैली, एकवा जेन प्रशस्त क२ बहन छी ।

रिदेहक उतरोतव प्रगतिक शुभकामना ।

३०.श्री नरेन्द्र ना, पठना- रिदेह नियमित देखेत बहेत छी ।

मैथिली जेन अद्भुत काज क२ बहन छी ।

३१.श्री बागमोहन ठाकुर- कोनकाता- मिथिलाक्षर रिदेह देखि  
मोश प्रसन्नतासँ भवि उठन, अकक रिमोन पविदृष्ट आनन्दकारी  
अछि ।

३२.श्री तावानन्द रियोगी- रिदेह आ ककषेत्रम् अतिरिक्त देखि  
टकरिदेव नागि गेन । आश्चर्य । शुभकामना आ रैवाङ्ग ।

३३.श्रीमती प्रेममता मिश्रि “प्रेम”- ककषेत्रम् अतिरिक्त पठनहुँ ।  
सब बच्चा उच्चोष्टिक नागन । रैवाङ्ग ।

३४.श्री कीर्तिनाथना मिश्रि- रैगुसबाग- ककषेत्रम् अतिरिक्त रैव  
नीक नागन, आर्गाक सब काज जेन रैवाङ्ग ।

३५.श्री महाप्रकाश-सहकमा- ककषेत्रम् अतिरिक्त नीक नागन,  
रिमोनकाय संगहि उतमकोष्टिक ।

३६.श्री अग्निगुप्ता- मिथिलाक्षर आ देवाक्षर रिदेह पठन..ङ्ग प्रथम  
तँ अछि एकवा प्रशिक्षाये द्वाद हय एकवा दुस्राहमिक कहै ।  
मिथिला छिन्नकाक तुम्हकै द्वाद अगिना अकमे आव रिदृष्ट  
रैवाङ्ग ।

३७.श्री मज्जव स्वजगान-दवर्तगा- रिदेहक जतेक प्रशिक्षा कएन  
जाए कम होएत । सब छिन्न उतम ।



मानवीय

बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३५. श्रीमती प्राणेश्वर रीणा ठाकुर- कव्यक्षेत्रम् अतर्किक उत्तम  
पठनीय, रिचार्बनीय । जे का देखेत छथि पोथी प्रान्त कवरोंक  
उपाय प्रुद्धेत छथि । शुभकामना ।

३६. श्री दुवाणन्द सिंह सा- कव्यक्षेत्रम् अतर्किक पठनहुँ, रैद्ध नीक  
सत तबहै ।

४०. श्री ताराकांत सा- सम्पादक मैथिली दैनिक मिथिला समाद-  
बिदेह तँ कण्ठेष्ट प्रारागडवक काज क२ बहन अछि ।  
कव्यक्षेत्रम् अतर्किक अद्भुत नागन ।

४१. डा बरीन्द्र कुमार टोषरी- कव्यक्षेत्रम् अतर्किक रैद्ध नीक,  
रैद्ध मेहनतिक प्रविशाम । रैधाञ्ज ।

४२. श्री अमरनाथ- कव्यक्षेत्रम् अतर्किक आ बिदेह दुनु सावनीय  
घटना अछि, मैथिली साहित्य मध्य ।

४३. श्री पंचाणन मिश्र- बिदेहक रैरिध आ निवृत्तता प्रभावित  
कबैत अछि, शुभकामना ।

४४. श्री केदार कान्त- कव्यक्षेत्रम् अतर्किक लेन अलक धन्यवाद,  
शुभकामना आ रैधाञ्ज स्वीकार कबी । आ नटिकेताक भूमिका  
पठनहुँ । शुक्रमे तँ नागन जेना कोना उपाय आ हाँ द्वारा  
सृजित लेन अछि अद्भुत पोथी उपायोंना पब त्नात लेन जे  
एहिमे तँ सत रिधा समाहित अछि ।

४५. श्री धनक ठाकुर- हाँ नीक काज क२ बहन छी । हाँठे  
लीनबीमे छि एहि शिताईक जगतिथिक अन्तर्भाव बहैत त२  
नीक ।





बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

४७. श्री आशीष मा- अहाँक पुस्तकक संरक्षणे एतरो निखरो सँ  
अगला कए नहि लोकि सकनहुँ जे आ कितारो मात्र कितारो नहि  
थीक, आ एकठाँ उन्नीद छी जे मैथिली अहाँ सभ पुत्रक सेरो सँ  
निर्वतव समूह लोगत टिबजोरण कए प्राप्त कबत ।

४८. श्री शैलु कुमार सिंह- बिदेहक तपेवता आ प्रियाशीलता देखि  
आह्लादित भऽ बहल छी । निश्चितरूपेण कहल जा सकैछ जे  
समकालीन मैथिली पत्रिकाक इतिहासमे बिदेहक नाम स्थापितरूपेण  
निखल जाएत । ओहि ककषेत्रक घटना सब तँ अर्थावहे दिनमे  
खतम भऽ गेल बहल छदा अहाँक ककषेत्रम् तँ अशेष अछि ।

४९. डा. अजित मिश्र- अगलक प्रयासक कतरौ प्रशंसा कएल जाए  
कमे होएतैक । मैथिली साहित्यमे अहाँ द्वारा कएल गेल काज  
श्रम-श्रमश्रम धरि पूजनीय बहल ।

५०. श्री रीतेश मल्लिक- अहाँक ककषेत्रम् अस्तुमिक आ  
बिदेहःसदेह पठि अति प्रसन्नता भेल । अहाँक स्नातृ ठीक बहल  
आ उन्नीह रंगन बहल से कामना ।

५१. श्री कुमार बाधक- अहाँक दिशि-निर्देशमे बिदेह पठि  
मैथिली आ-जर्नल देखि अति प्रसन्नता भेल । हमर शुभकामना ।

५२. श्री सुनन्द मा प्रसाद- बिदेहःसदेह पठल बहल छदा  
ककषेत्रम् अस्तुमिक देखि रौद्र आ देरी लेल रौद्रा भऽ  
गेलहुँ । आरौ विज्ञान भऽ गेल जे मैथिली नहि मरत । अशेष  
शुभकामना ।

५३. श्री विभूति आनन्द- बिदेहःसदेह देखि, ओकर विस्तार देखि  
अति प्रसन्नता भेल ।



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३.३.श्री मालेश्वर मय्यज- ऋक्छेदम् अष्टमस्क एकव भवता देधि  
अति प्रसन्नता भेन, एतेक रिशोन ग्रन्थ मैथिलीमे आग धरि नहि  
देखल बनी । एहिना भविष्यमे काज करैत बनी, शुभकामना ।

३.४.श्री विद्यानन्द ना- आग.आग.एम.कोनकाता- ऋक्छेदम्  
अष्टमस्क रिशुव, दुगाङ्कक र्गग प्रारता देधि अति प्रसन्नता  
भेन । अहाँक अलक धन्यवाद, कतेक रँवथसँ हम लयारैत छुनहुँ  
जे सत पौष मेहवमे मैथिली नागब्रैवीक स्थापना होअ, अहाँ  
ठकवा रेरैगव क२ बहन डी, अलक धन्यवाद ।

३.५.श्री अवरिन्द ठाकुर- ऋक्छेदम् अष्टमस्क मैथिली साहित्यमे  
कएन गेन एहि तबहक पहिन प्रयोग अछि, शुभकामना ।

३.६.श्री रुमाव परल- ऋक्छेदम् अष्टमस्क पठि बहन डी । किछ  
नयूकथा पठन अछि, रँहुत मार्गिक छन ।

३.७. श्री प्रदीप रिहारी- ऋक्छेदम् अष्टमस्क देखन, रँधाङ्क ।

३.८.डा मणिकान्त ठाकुर-कैमिलेपार्मिया- अणन रिक्छेद निगमित  
सेरसँ हमरा लोकनिक हृदयमे बिदेह सदेह भ२ गेन अछि ।

३.९.श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि- अहाँक समस्त प्रयास सवालनीय । दूध  
होगत अछि जखन अहाँक प्रयासमे अपेक्षित सहयोग नहि क२  
पारैत डी ।

३.१०.श्री देवर्षिकव नरीन- बिदेहक निबन्धवता आ रिशोन स्वरूप-  
रिशोन पाठक रक्षा, एकवा ऐतिहासिक रँनरैत अछि ।

३.११.श्री मोहन भावराज- अहाँक समस्त कार्य देखन, रँहुत नीक ।  
एखन किछ परेशोनीमे डी, रुदा शीघ्र सहयोग देरँ ।



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

७२.श्री फज्जुव बहमण हगिमी-ककफेक्रेम अतुर्मिक मे एतेक  
मेहनतक लेन अहाँ साधुवादक अधिकारी छी ।

७३.श्री नक्का ना "सागव"- मैथिलीमे चमकोविक कपेँ अहाँक  
प्रवेशे आनन्दकारी अछि । ..अहाँकेँ एखन आव..दुब..रहूत दुबधरि  
जेरौक अछि । झुइ आ प्रसन्न बली ।

७४.श्री जगदीश प्रसाद मंडन-ककफेक्रेम अतुर्मिक पठनहूँ ।  
कथा सत आ उग्यास सहस्रौठनि पूर्णकपेँ पठि लेन छी ।  
गाम-घबक भौगोलिक विरवाक जे सुझा रण सहस्रौठनिमे  
अछि, से चकित कएनक, एहि संग्रहक कथा-उग्यास मैथिली  
लेखनमे विविधता अलग अछि । समालोचना शोभने अहाँक  
दृष्टि वैयक्तिक नहि रवन् सामाजिक आ कल्याणकारी अछि, से  
प्रशंसनीय ।

७५.श्री अशोक ना-अध्यक्ष मिथिला विकास परिषद-ककफेक्रेम  
अतुर्मिक लेन रैवाइ आ आगाँ लेन शुभकामना ।

७६.श्री ठाकुर प्रसाद झा-अछूत प्रवास । धन्यवादक संग  
प्रार्थना जे अगल माष्टि-गामिकेँ धानमे बाधि अकक समायोजन  
कएन जाय । नर अक धरि प्रवास सवाहनीय । विदेहकेँ रहूत-  
रहूत धन्यवाद जे एहेन सुन्दर-सुन्दर सचब (आलेख) नगा बहन  
छथि । सतष्ठा ग्रहणीय- पठनीय ।

७७.बृहन्नाथ मिश्र- प्रिय गजेन्द्र जी,अहाँक सम्पादन मे प्रकाशित  
'विदेह'आ 'ककफेक्रेम अतुर्मिक' विनम्र पत्रिका आ विनम्र  
पौथी । की नहि अछि अहाँक सम्पादनमे ? एहि प्रसने सँ  
मैथिली क विकास होयत,मिस्सिदेह ।



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्करण ISSN 2229-547X VIDEHA

७+। श्री वृंथेमे चन्द्र नाग- गजेन्द्रजी, अंगलक प्रसूतक  
ककषेत्तम् अतर्लिक पठि योष गदगद भय जेन , छन्दयर्न  
अवगृहित छी । हार्दिक प्रतिक्रिया ।

७६. श्री परमेश्वर कागडि - श्री गजेन्द्र जी । ककषेत्तम्  
अतर्लिक पठि गदगद आ लललल भेलहुँ ।

१०. श्री बरिन्द्रनाथ ठाकुर- बिदेह पठेत बहैत छी । धीरेन्द्र  
प्रेमर्षिक मैथिली गजलपत्र आलेख पठनहुँ । मैथिली गजल कतु२  
मँ कतु२ छल गेलैक आ ओ अंगल आलेखमे मात्र अंगल ज्ञान-  
पहिछान लोकर छट कएल छथि । जेना मैथिलीमे गठक  
परम्परा बहन अछि । (स्पष्टीकरण- श्रीमान् प्रेमर्षि जी ओहि  
आलेखमे ओ स्पष्ट लिखल छथि जे किनको नाम जे छट गेल  
छहि तँ से मात्र आलेखक लेखकक ज्ञानकारी नहि बहरौक द्वाले,  
एहिमे आन कोना कावा नहि देखल जाय । अहाँसँ एहि  
रिषयपर रिस्तुत आलेख सादर आमंत्रित अछि । -सम्पादक)

११. श्री मन्त्रेश्वर सा- बिदेह पठन आ संगहि अहाँक मैथिली ओपन  
ककषेत्तम् अतर्लिक सेहो, अति उत्तम । मैथिलीक लेन कएन  
जा बहन अहाँक समस्त कार्य अतुलनीय अछि ।

१२. श्री ललेश्वर सा- ककषेत्तम् अतर्लिक मैथिलीमे अंगल  
तबहक एकमात्र ग्रन्थ अछि, एहिमे लेखकक समग्र दृष्टि आ बचन  
कोशेल देखबामे आन जे लेखकक हरीदेवर्कसँ जूडन बहरौक  
कावसँ अछि ।

१३. श्री सुकांत सोम- ककषेत्तम् अतर्लिक मे समाजक  
गतिहास आ वर्तमानसँ अहाँक जूडन रीति नीक लागल, अहाँ एहि  
क्षेत्रमे आव आगाँ काज करै से आमी अछि ।



विदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवसिंह

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१४. श्रीहनुमान मंदिर चित्र- ककच्छेद्रम् अतिरिक्त सन कितारै  
मैथिलीमे पहिले अछि आ एतेक रिमान संग्रहणव मोध कएल जा  
सकेत अछि । भविष्यक लेन शुभकामना ।

१३. श्रीहनुमान कमाना टोपनी- मैथिलीमे ककच्छेद्रम् अतिरिक्त सन  
पौथी आरैए जे थप आ कप दुनूमे निम्न होअए, से रैहूत  
दिनसँ आकाशका डन, ओ आरै जा क२ पूर्ण लेन । पौथी एक  
हाथसँ दोसर हाथ घुमि बहन अछि, एहिना आगाँ सेहो अहसँ  
आशा अछि ।

१३. श्री उदय चन्द्र मा "रिलाद": गजेन्द्रजी, अहाँ जतेक काज  
कएनहुँ अछि से मैथिलीमे आग धरि कियो नहि कएल डन ।  
शुभकामना । अहाँकेँ एखन रैहूत काज आव कबरीक अछि ।

११. श्री प्रफुल्ल कमाना कष्टगः गजेन्द्र ठाकुरजी, अहाँसँ भेटै एकठा  
सबारीय छप रैनि लेन । अहाँ जतेक काज एहि रैअसमे क२  
लेन छी तहिना हज्जव थप आव लेनीक आशा अछि ।

१४. श्री मणिकान्त दासः अहाँक मैथिलीक कार्याक प्रशंसा लेन शेट,  
नहि भेटैत अछि । अहाँक ककच्छेद्रम् अनुमति संपूर्ण कए  
पठि लेनहुँ । ब्रह्मरूप रैहूत नीक लागन ।

१५. श्री लालेन्द्र कमाना मा- विदेह ई-पत्रिकाक सभ अंक ई-  
पत्रसँ भेटैत बहैत अछि । मैथिलीक ई-पत्रिका छैक एहि  
रातक गरि होगत अछि । अहाँ आ अहाँक सभ सहयोगीकेँ  
हार्दिक शुभकामना ।

विदेह



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

मानवीय



मैथिली साहित्य आन्दोलन

(c) २००४-१२, सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतए लेखकक नाम नहि  
अछि ततए संपादकाधीन । बिदेह- प्रथम मैथिली पत्रिक ई-  
पत्रिका । ISSN 2229-547X VIDEHA संपादक: गजेन्द्र  
ठाकुर । सह-संपादक: उमेश मंडल । सहायक संपादक: गिर  
ध्याव सा आ झुल्लुआ (महाज कथाव कर्मी) । भाषा-संपादक:  
नामोद कथाव सा आ पञ्चमीकर विद्यानन्द सा । कवि-संपादक:  
जाति सा टोषरी आ बगि लेखी सिंह । संपादक-लोको-अध्ययन:  
डा. जया रमा आ डा. बज्जिर कथाव रमा । संपादक- नाटक-  
वर्ग-चर्चा- लेख ठाकुर । संपादक- सूचना-संपर्क-समाद-  
पुण्य मंडल आ धिया सा । संपादक- अग्रवाद विभाग- विनीत  
उपेय ।

बचनाकाब अपन मौलिक आ अग्रकाशित बचना (जकब  
मौलिकताक संपूर्ण उतबदलिह लेखक पाक मया छुहि)  
[ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) केँ मेन अटैचमेण्टक कगरे  
.doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि ।  
बचनाक संग बचनाकाब अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन ईम कएन  
मेन हवाटे पठैतह, से आशा करैत छी । बचनाक अंतमे  
छाँटा बहल, जे आ बचना मौलिक अछि, आ पहिने प्रकाशित  
हेतु बिदेह (पत्रिक) आ पत्रिकालेँ देन जा बहल अछि । मेन  
254



बिदेह ११० म अंक १५ जुलाई २०१२ (वर्ष ५ मास ५५ अंक ११०)

मानवीय

संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

प्राप्त होयराक रौद यथार्थतर शीघ्र (मात दिसक तीतब) एकव  
प्रकाशिक अकक सूचना देन जायत । 'बिदेह' प्रथम मैथिली  
पत्रिक ई पत्रिका अछि आ एहिमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे  
मिथिला आ मैथिलीसँ सम्बन्धित बचना प्रकाशित कएन जागत  
अछि । एहि ई पत्रिकालेँ प्रीति नक्का ठाकुर द्वारा मासक ०९  
आ १३ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएन जागत अछि ।

(c) 2004-12 सम्पादिकाव स्वस्मिन् । बिदेहमे प्रकाशित  
सम्पूर्ण बचना आ आर्काइवक सम्पादिकाव बचनाकाव आ संग्रहकर्ताक  
नगमे छहि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशन किरा  
आर्काइवक उपयोगक अधिकार किराक हेतु  
[ggajendra@videha.co.in](mailto:ggajendra@videha.co.in) पर सम्पर्क कक । एहि  
मागछिकेँ प्रीति नक्का ठाकुर, मधुनिका टोपरी आ बन्नि प्रिया द्वारा  
डिजाइन कएन गेल ।



सिंहबन्धु

